Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi

Ranchi ● Tuesday, 03 October 2023 ● Year : 01 ● Issue : 256 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

जब तक हम किसी भी काम को करने की कोशिश नही करते हैं, तब तक हमे वो काम नामुमकिन ही लगता है।

बॉलीवुड में दिशा पाटनी ने पूरे किए सात साल

SHARE

सेंसेक्स	:	65,828.41
निफ्टी	:	19,638.30

SARAFA

सोना	:	5,480
चांदी	:	75.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

एनआईए ने की आंध्र प्रदेश व तेलंगाना में 60 से अधिक स्थानों पर छापेमारी

NEW DELHI : राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) सोमवार को एक्शन मोड में नजर आई। एनआईए ने वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) मामले में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में 60 से अधिक स्थानों पर तलाशी ली। दोनों राज्यों में संदिग्धों के परिसरों और ठिकानों पर छापेमारी की। इनपुट के बाद सुबह से ही एनआईए की अलग-अलग टीमों ने राज्य पुलिस बलों के साथ छापेमारी शुरू कर दी थी।

राजौरी के कालाकोट में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरू

RAJOURI : राजौरी जिले के कालाकोट में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है। दोनों ओर से गोलीबारी जारी है। जिले के कालाकोट के तत्तापानी क्षेत्र में सोमवार को सुरक्षा बलों ने ड्रोन के माध्यम से तीन संदिग्धों को घूमते हुए देखा। इसके तुरंत बाद पुलिस, सेना और सीआरपीएफ के जवानों ने पूरे इलाके की घेराबंदी करके तलाशी अभियान शुरू किया। इस दौरान सुरक्षाबलों को पास आते देखकर क्षेत्र में छिपे आतंकियों ने गोलीबारी की। सुरक्षाबलों की जवाबी कार्रवाई के बाद मुठभेड़ शुरू हो गई। इस दौरान कालाकोट के खड़गाला से तत्तापानी जाने वाली सड़क मार्ग को बंद कर यातायात को फिलहाल रोक दिया गया है।

बिहार जाति आधारित सर्वे रिपोर्ट जारी

PATNA : बिहार सरकार ने जातीय गणना की रिपोर्ट सार्वजनिक कर दी है। सरकार द्वारा जारी जातीय गणना के आंकड़ों के मुताबिक, बिहार की कुल आबादी 13 करोड़ 7 लाख 25 हजार 310 है। जातीय गणना के आंकड़े के मुताबिक अत्यंत पिछड़ा- 36 फीसदी, पिछड़ा वर्ग-27 फीसदी, अनुसूचित जाति-19 फीसदी और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1.68 फीसदी है। बिहार सरकार की तरफ से जारी जातीय गणना के मुताबिक बिहार में सवर्णों की तादाद 15.52 फीसदी है। जिसमें भूमिहार की आबादी 2.86 फीसदी, ब्राह्मणों की आबादी 3.66 फीसदी, राजपूत की आबादी 3.45 फीसदी है। जबकि कुर्मी की जनसंख्या 2.87 फीसदी, मुसहर की आबादी 3 फीसदी, यादवों की आबादी 14 फीसदी है।

एशियाड के 9वें दिन भारत ने जीते 7 मेडल, 5 एथलीट्स ने दिलाए

तेजस्विन डेकाथलान के टॉप पर, 400 मीटर मिक्स्ड रिले टीम का ब्रॉन्ज सिल्वर में हुआ अपग्रेड

AGENCY HANGZHOU : भारतीय खिलाड़ियों ने 19वें एशियन गेम्स के नौवें दिन दमदार प्रदर्शन किया। सोमवार को भारतीय खिलाड़ियों ने 7 मेडल जीते। इनमें से 5 मेडल एथलीट्स ने दिलाए। चीन के हांगझोऊ में सोमवार का खेल समाप्त होने तक तेजस्विन शंकर 4260 अंक के साथ डेकाथलान के टॉप पर हैं। इससे पहले, 400 मीटर मिक्स्ड रिले टीम का ब्रॉन्ज मेडल अपग्रेड होकर सिल्वर में बदला गया, क्योंकि श्रीलंकाई टीम डिस्क्वॉलिफाई हो गई। सुबह स्केटर्स ने 2 ब्रॉन्ज दिलाए। शाम में एथलेटिक्स के इवेंट शुरू हुए।

हॉकी में भारतीय मेंस टीम सेमीफाइनल में, कैनोइंग में नहीं मिला मेडल

हॉकी में भारतीय मेंस टीम ने सेमीफाइनल में जगह बना ली है। टीम ने अपने ग्रुप का आखिरी मुकाबला बांग्लादेश के खिलाफ खेला और 12-0 से एकतरफा जीत हासिल की। भारत के लिए हरमनप्रीत सिंह और मनप्रीत सिंह ने 3-3 गोल दागे। वहीं, अभिषेक ने दो गोल किए। अमित रोहिदास, ललित उपाध्याय, निलाकांता शर्मा और गुरजंत सिंह ने 1-1 गोल स्कोर किया। भारतीय मेंस हॉकी टीम एशियाड में अजेय है। टीम ने ग्रुप के सभी मुकाबले जीते। भारत को कैनोइंग में मेडल नहीं जीत सका। भारत मेंस कैनो डबल 500 मीटर में आठवें स्थान पर रहा। इस इवेंट में कजाकिस्तान को जीत मिली। वहीं, जापान ने 0.227 के मामूली अंतर से सिल्वर मेडल जीता। भारत के खिलाड़ियो ने सभी 4 मेंस और विमेंस कंपाउंड इवेंट में प्री क्वार्टरफाइनल नॉकआउट मुकाबले जीते। अभिषेक वर्मा ने बेलाल अयमान अलावादी (साउदी अरब) को 147-139 से हराया, ओजस देवताले ने अहमद अलशट्टी (कुवैत) को 148-138 से हराया, ज्योति सुरेखा वेन्नम ने श्रीलंका की अनुराधा करुणारत्ने को 145-132 से हराया और अदिति गोपीचंद स्वामी ने नेपाल की इमयुंग राय को 149-137 से हराया। विमेंस 400 मीटर हर्डल्स में विथ्या रामराज ने 1984 में पीटी उषा के 400 मीटर हर्डल्स के नेशनल रिकॉर्ड की बराबरी की। विथ्या रामराज ने पहली हीट में टॉप पर फिनीश किया। उन्होंने 55.42 सेकंड्स में रेस पूरी की। इसी समय के साथ पीटी उषा ने लॉस एंजल्स ओलिंपिक में नेशनल रिकॉर्ड सेट किया था। मेंस सिंगल्स के राउंड ऑफ 64 में किदांबी श्रीकांत ने वियतनाम के ड्युक फेट वी को 2-0 से हराया। किदांबी ने 21-10, 21-9 के सेट से मैच अपने नाम किया। मेंस डबल्स के राउंड ऑफ 32 में सात्विक-चिराग की जोड़ी ने जीत हासिल की। उन्होंने हॉन्गकॉन्ग के हिन लॉन्ग-चुन वाई को 2-0 (21-11, 21-16) से हराया। मिक्स्ड डबल्स के राउंड ऑफ 32 में साई प्रतीक और तनीशा क्रेस्टो की जोड़ी जीत गई है। उन्होंने मकाओ,चीन के पेयर को 2-0 से शिकस्त दी। मिक्स्ड डबल्स के राउंड ऑफ 32 में रोहन कपूर और सिक्की रेड्डी की जोड़ी मैच पूरा नहीं कर सकी।

हुंडरू फॉल में बहा बिहार का युवक, तलाश जारी

पैर फिसलने से हादसा, बहता देख पांच दोस्त फरार, किया सरेंडर

CRIME REPORTER RANCHI : रांची जिले के सिकिदिरी स्थित हुंडरू फॉल में बिहार के राजगीर का युवक शुभम कुमार सोमवार को बह गया। घटना सोमवार दोपहर 3:30 बजे की है। जानकारी के अनुसार (बीआरओ 1 एच जे 0639) में सवार होकर वह हुंडरू फॉल घुमने पहुंचा था। फॉल के ऊपर बह रहे पानी में स्नान कर रहा था। उसी क्रम में पैर फिसल गया और देखते ही देखते फॉल में बह गया। इधर, उसे बहता देख उसके पांच साथी गाड़ी लेकर फरार हो गए। सिकिदिरी पुलिस ने गाड़ी को पकड़ने का काफी प्रयास किया, लेकिन वे हाथ नहीं लगे। पुलिस फॉल में बहे युवक को ढूंढने का प्रयास कर रही है। खबर लिखे जाने तक युवक का पता नहीं चल सका। सभी दोस्त नशे में धुत थे। इधर, पांचों दोस्तों ने रामगढ़ जिले के गोला थाने में सरेंडर कर दिया है। आपको बता दें कि फॉल में तैनात पर्यटन मित्र ने स्नान करने से मना किया था। इसके बावजूद पानी में उतरकर वह युवक स्नान कर रहा था।

सिकिदिरी स्थित हुंडरू फॉल में युवक की तलाश में जुटी पुलिस।

नशे में धुत थे सभी साथी

जानकारी के अनुसार ये सभी इससे पूर्व रजरप्पा मंदिर में पूजा-अर्चना कर हुंडरू फॉल घुमने पहुंचे थे। सभी लोग नशे में धुत थे। शुभम अपने साथी के साथ जबरन फॉल के ऊपर बह रहे पानी में स्नान करने के लिए उतर गया था। उसी क्रम में पैर फिसल गया और देखते ही देखते फॉल की तेज धार में वह बह गया। हुंडरू फॉल में बहा राजगीर का युवक शुभम कुमार उर्फ सोनू है। उसके पिता का नाम स्व विरेंद्र सिंह है। नयी पोखर, थाना राजगीर, जिला नालंदा बिहार का रहने वाला बताया जा रहा है। वह अपने पांच साथियों सौरभ कुमार, अमन वर्मा, उज्जवल कुमार, अनुभव कुमार व विकास कुमार के साथ हुंडरू जलप्रपात घुमने पहुंचा था।

रविवार को रांची में भी बह गया था एक युवक

रविवार को राजधानी रांची में भारी बारिश होने से हातमा सरईटांड़ स्थित नाले में देव प्रसाद राम उर्फ छोटू (28) बह गया था। सोमवार को पुलिस और एनडीआरएफ की टीम ने कारोबारी देव प्रसाद का शव जोजो पहाड़ के पास से बरामद किया। पुलिस ने देव प्रसाद के शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव स्वजनों के हवाले कर दिया। पुलिस का कहना है कि देव प्रसाद का शव पत्थरों के बीच जाकर फंस गया था। सोमवार की सुबह पांच बजे से शव को खोजा जाने लगा। सुबह छह बजे पुलिस को शव बरामद हुआ। पुलिस का कहना है कि इस संबंध में अभी कोई लिखित शिकायत नहीं की गई है।

● पेज 3 भी देखें

आतंकी शाहनवाज दो साथियों के साथ धराया

RANCHI : दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने आईएसआईएस के संदिग्ध आतंकी शाहनवाज उर्फ शैफी और उसके दो साथी मोहम्मद रिजवान अशरफ और मोहम्मद अरशद वारसी को गिरफ्तार किया है। एनआईए को लंबे वक्त से शाहनवाज की तलाश थी, उस पर तीन लाख का इनाम भी घोषित किया गया था। शाहनवाज मूल रूप से झारखंड के हजारीबाग जिले के पेलावल का रहने वाला है। शाहनवाज ने गुजरात की रहने वाली बसंती पटेल नाम की एक महिला से शादी की थी। शादी के बाद उसने अपनी पत्नी का धर्म परिवर्तन करवाया और फिर उसका नाम मरियम हो गया था। शाहनवाज और उसके साथी आतंकियों की साजिश नॉर्थ इंडिया को दहलाने की थी। इतना ही नहीं इन आतंकियों ने पुणे के जंगलों में बम ब्लास्ट की प्रैक्टिस भी की थी। इससे पहले 18 जुलाई को लोहरदगा में आईबी, एनआईए और दिल्ली पुलिस ने संयुक्त छापेमारी कर आईएसआईएस के आतंकी फैजान को गिरफ्तार किया था। आतंकी शाहनवाज पेशे से इंजीनियर है। पुलिस ने शाहनवाज और उसके साथियों के पास से आपत्तिजनक सामान बरामद किये हैं।

माओवादी प्रमोद मिश्रा NIA की रिमांड पर

नौ अगस्त को हुआ था गिरफ्तार

CRIME REPORTER RANCHI : भाकपा माओवादी के पोलित ब्यूरो सदस्य प्रमोद मिश्रा से एनआईए पूछताछ कर रही है। एनआईए ब्रांच रांची प्रमोद मिश्रा को एक सप्ताह के लिए रिमांड पर लेकर पूछताछ कर रही है। बिहार पुलिस ने झारखंड बिहार का कुख्यात नक्सली पोलित ब्यूरो सदस्य प्रमोद मिश्रा को उसके दो अन्य साथियों के साथ बीते नौ अगस्त को गिरफ्तार किया था। रितेश विद्यार्थी के भाई रोहित विद्यार्थी को गिरफ्तार किया था। रोहित से पूछताछ के बाद बिहार पुलिस को प्रमोद मिश्रा के बारे में जानकारी मिली थी। इस दौरान बिहार पुलिस को जानकारी मिली कि प्रमोद मिश्रा गया जिला का लुटुआ गांव आने वाला है। पुलिस ने पोलित ब्यूरो सदस्य और एनआरबी (उत्तरी क्षेत्रीय ब्यूरो) के प्रभारी प्रमोद मिश्रा की गिरफ्तार कर लिया था। प्रमोद मिश्रा की गिरफ्तारी के बाद बिहार पुलिस ने हथियार, गोला-बारूद और एक बंदूक फैक्ट्री का उद्भेदन किया था।

भाकपा माओवादी संगठन को पुनर्जीवित करने में जुटा था प्रमोद मिश्रा

एनआईए जांच से संकेत मिले हैं कि कई फ्रंटल संगठनों और छात्र विंगों को भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने के इरादे से कैडरों को प्रेरित करने,भर्ती करने और माओवादी की विचारधारा का प्रचार करने का काम सौंपा गया था। वे इस एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए आतंक और हिंसा की साजिश रच रहे थे। जांच से यह भी पता चला है कि प्रमोद मिश्रा भाकपा माओवादी संगठन को पुनर्जीवित करने के प्रयासों में माओवादी के कैडरों और समर्थकों, ओवर ग्राउंड वर्कर्स का नेतृत्व कर रहे थे।

देवरिया में पूर्व जिला पंचायत सदस्य समेत 6 की हत्या

जमीन विवाद में खूनी संघर्ष, मृतकों में एक परिवार के पांच लोग शामिल, इलाके में दहशत

AGENCY DEORIA : उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के दिल दहलाने वाली वारदात सामने आई है। यहां रुद्रपुर कोतवाली क्षेत्र में सोमवार की सुबह हुए खूनी संघर्ष में छह लोगों की हत्या कर दी गई। घटना भूमि विवाद को लेकर हुई। मृतकों में एक परिवार के पांच लोग हैं जबकि दूसरी तरफ के एक पूर्व जिला पंचायत सदस्य की हत्या हुई है। वारदात के बाद गांव में तनाव को देखते हुए करीब दो दर्जन थानों की पुलिस और पीएसी तैनात कर दी गई है। मौके का कमिश्नर और आईजी ने पहुंच कर जायजा लिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए दोषियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई का निर्देश दिया है। फतेहपुर के लेड़हा टोले के रहने वाले सत्य प्रकाश दुबे के छोटे भाई साधु दुबे ने 2014 में अपने हिस्से की करीब 10 बीघा भूमि गांव के अभयपुरा टोले के रहने वाले पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रेमचंद यादव को बेच दी थी। इसी बात को लेकर सत्यप्रकाश दूबे और प्रेमचंद यादव के परिवार के बीच रंजिश चल रही थी।

घटनास्थल पर जांच करती पुलिस।

जालंधर में शराबी पिता ने की 3 बेटियों की हत्या

JALANDHAR : पंजाब के जालंधर में शराबी पिता ने 3 बेटियों की हत्या कर दी। इसके बाद तीनों के शव लोहे के ट्रंक में डाल दिए और फिर उसे घर के बाहर फेंक दिया। तीनों बहनें रविवार 1 अक्टूबर रात 8 बजे से लापता थी। सोमवार सुबह लोगों ने तीनों बहनों के शव देखे। इस मामले की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी पिता को 2 अक्टूबर की सुबह हिरासत में ले लिया। आरोपी पिता की पहचान सुनील मंडल निवासी गांव काहनपुर (जालंधर) के रूप में हुई है।

महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री को पीएम ने दी श्रद्धांजलि

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री ने राजघाट पर महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित की, जहां प्रार्थना का भी आयोजन किया गया। प्रधान मंत्री ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा, गांधी जयंती के विशेष अवसर पर मैं महात्मा गांधी को नमन करता हूं।

ग्वालियर में प्रधानमंत्री ने कहा- विकास विरोधी जात-पात के नाम पर लोगों को बांटते थे, आज भी यही पाप कर रहे

अगले कार्यकाल में भारत TOP-3 इकोनॉमी में होगा : PM

AGENCY GWALIOR : प्रधानमंत्री मोदी रोड शो के साथ मंच तक पहुंचे। इसके बाद उन्होंने सभा को संबोधित किया। उधर बिहार में जातिगत गणना के आंकड़े जारी हुए, इधर ग्वालियर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जात-पात के नाम पर लोगों को बांटने का आरोप लगाते हुए विपक्ष पर हमला किया। मोदी ने कहा- विकास विरोधी तब भी गरीबों की भावनाओं से खेलते थे और आज भी खेलते हैं। वो तब भी जात-पात के नाम पर लोगों को बांटते थे और आज भी यही पाप कर रहे हैं। ग्वालियर पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 19 हजार करोड़ से ज्यादा के प्रोजेक्ट का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि ये डबल इंजन की सरकार का परिणाम है। आज मध्यप्रदेश के लोगों का भरोसा डबल इंजन वाली सरकार पर है। बीते सालों में हमारी सरकार मध्यप्रदेश को बीमारू राज्यों से देश के टॉप टेन राज्यों में ले आई है। यहां से हमारा लक्ष्य एमपी को देश के टॉप तीन राज्यों में ले जाने का है। आपका एक वोट मध्यप्रदेश को टॉप थ्री में पहुंचाएगा। मोदी ने कहा कि एमपी का विकास वो लोग नहीं कर सकते, जिनके पास नई सोच नहीं है। ना ही विकास का रोड मैप है। इनका सिर्फ एक ही काम है। देश से नफरत, भारत की योजनाओं से नफरत। अपनी नफरत में ये देश की उपलब्धियों को भी भूल जाते है। आज पूरी दुनिया भारत का गौरवगान कर रही है, लेकिन जो लोग जिन्हें कुर्सी के सिवाय कुछ नहीं दिखता। उन्हें भारत का विकास अच्छा नहीं लग रहा है। हमारी बहनों को लोकसभा-विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण के झूठे वादे करके वोट मांगे गए, लेकिन संसद में साजिश करके कानून बनाने से रोका गया। मोदी ने बहनों को गारंटी थी। मोदी की गारंटी यानी हर गारंटी के पूरा होने की गारंटी। आज नारी शक्ति वंदन अधिनियम सच्चाई बन चुका है। मैं एक गारंटी बहनों से भी चाहता हूं। मुझे गारंटी चाहिए कि घर मिलने के बाद अपने बच्चों को अच्छे से पढ़ाना है। कोई ना कोई कौशल सिखाना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को माला पहनाकर सम्मानित करते नेता-मंत्री।

विकास विरोधियों के राज्यों में क्राइम और करप्शन बढ़ा

जहां विकास विरोधियों की सरकार आती है, वहां सिस्टम चरमरा जाते है। विकास विरोधी लोग जहां जाते हैं वहां तुष्टिकरण आता है। इससे गुंडे, अपराधी, दंगाई और भ्रष्टाचारी बेलगाम हो जाते हैं। महिला, दलित और आदिवासियों पर अत्याचार बढ़ जाते है। बीते साल इन विकास विरोधियों के राज्यों में क्राइम और करप्शन सबसे ज्यादा बढ़ा है। मध्यप्रदेश में इन लोगों से बहुत सावधान रहना है। देश के विकास विरोधी राजनीति दल मध्यप्रदेश को पीछे ले जाने की इच्छा रखते है। जबकि हमारी डबल इंजन की सरकार भविष्य की सोच रखती है। इसलिए विकास का भरोसा सिर्फ और सिर्फ डबल इंजन की सरकार पर कर सकते है।

दिव्यांगजनों को मिला देश का पहला हाईटेक स्टेडियम

मध्यप्रदेश के ग्वालियर में दिव्यांगजनों के लिए देश का पहला स्टेडियम प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। दो अक्टूबर महात्मा गांधी जयन्ती के मौके पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ वीरेंद्र कुमार ने स्टेडियम का जायजा लिया। उन्होंने इस मौके पर कहा कि यह महत्वपूर्ण पहल सभी के लिए खेल समावेशिता और पहुंच को बढ़ावा देने की हमारे देश की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि दिव्यांग खेलों के लिए अटल बिहारी प्रशिक्षण केंद्र दिव्यांग व्यक्तियों को खेल में समान अवसर प्रदान करने, उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है।

कार्यक्रम से उतारी गयी सीएम हेमंत की तस्वीर, राजनीति तेज

विनोद पांडेय बोले- चुप नहीं बैठेगी पार्टी

PHOTON NEWS RANCHI : रांची यूनिवर्सिटी के आर्यभट्ट ऑडिटोरियम में रविवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की तस्वीर हटाई गयी। अब इसे लेकर राज्य में राजनीति तेज हो गयी है। केन्द्रीय महासचिव विनोद पांडेय ने इस मामले पर जांच की मांग की है। उन्होंने कहा यह दुर्भाग्यपूर्ण है। इसकी सूचना हमें मिली, अखबारों में भी पढ़ा है। विनोद पांडेय ने कहा, यह राज्य के लिए अच्छा संकेत नहीं है। अगर किसी भी कार्यक्रम से मुख्यमंत्री या राज्यपाल की तस्वीर को किसी के इशारे पर हटाया गया है तो कार्रवाई होनी चाहिए। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन इस कार्यक्रम में शामिल होने वाले थे लेकिन मुख्यमंत्री को यह सूचना मिली की उनकी तस्वीर हटाई गयी है। इसकी जांच होनी चाहिए कि यह किसके इशारे पर हुआ। यह किसके इशारे पर हुआ है राज्यपाल या विश्वविद्यालय ? जांच होनी चाहिए। दोषियों पर कार्रवाई होनी चाहिए । इस मामले पर कड़ी कार्रवाई की मांग करते हुए विनोद पांडेय ने कहा, झारखंड मुक्ति मोरचा इस मामले में चुप नहीं बैठेगी। यह सिर्फ मुखिया के साथ नहीं हुआ है आदिवासी समाज पर हमला हुआ है। राजभवन का जो रवैया सरकार के प्रति यहां के लोगों के प्रति और यहां की जनता की प्रति जो रवैया है उसका जल्द पदार्फाश होगा।

BRIEF NEWS

कांग्रेस नेताओं ने बापू और शास्त्री को दी श्रद्धांजलि

KHUNTI : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर सोमवार को खूंटी जिला कांग्रेस कमेटी ने स्थानीय दतिया गांव स्थित बापू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दोनों महान विभूतियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा ने कहा कि महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के बताएं मार्गों का अनुसरण करने से ही विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। मौके पर पूर्व विधायक सह प्रदेश उपाध्यक्ष कालीचरण मुंडा, प्रदेश सचिव पीटर मुंडू, जिला अध्यक्ष रवि मिश्रा, पूर्व जिला अध्यक्ष रामकृष्ण चौधरी, वरिष्ठ कांग्रेस नेता मदन मिश्रा, कार्यालय प्रभारी विजय कुमार आदि उपस्थित थे।

तोरपा में पान गुमटी में चोरों ने की सेंधमारी

KHUNTI : तोरपा थाना क्षेत्र के रेफरल अस्पताल के सामने स्थित सुकरा पान गुमटी में रविवार की रात चोरों ने सेंधमारी कर पांच हजार रुपये से अधिक मूल्य के सामान की चोरी कर ली। सोमवार को सुबह गुमटी का मालिक हेमंत गुप्ता उर्फ सुकरा रोज की तरह अपनी पान की दुकान खोलने गये, तो देखा कि उसकी दुकान की छत टूटी हुई है। उसने पाया कि दुकान से कई डब्बे सिगरेट और नकद रुपये गायब थे। इसको लेकर तोरपा थाना को सूचना दे दी गई है।

गरीब बच्चों के बीच भोजन का किया गया वितरण

RANCHI : रांची महानगर अल्पसंख्यक कांग्रेस के द्वारा महात्मा गांधी के जयती के मौके पर गरीब बच्चों के बीच भोजन वितरण किया। आज महात्मा गांधी की 154 वीं जयंती है। अल्पसंख्यक महानगर अध्यक्ष हुसैन खान ने बच्चों के बीच सौकड़ो खाना का डब्बा बांट कर बच्चों को महात्मा गांधी के जीवनी भी बताया और कहा कि महात्मा गांधी पुरे जीवन देश के लिए त्याग दिए। इस अवसर पर अल्पसंख्यक कांग्रेस ने संकल्प लिया है कि झूठ पर करुणा की राजनीति नफरत की राजनीति पर हो हावी हो। कांग्रेस ने झूठ पर सच्चाई की जीत की दिशा में काम करने का भी संकल्प लिया और यह सुनिश्चित किया कि करुणा की राजनीति नफरत प्रतिशोध और पूर्वाग्रह की राजनीति पर हावी हो।

आरआर स्पोर्टिंग क्लब ने कार्यालय का किया उद्घाटन

RANCHI : आरआर स्पोर्टिंग क्लब का कार्यालय उद्घाटन और माता रानी का पूजा अर्चना किया गया। इसमें मुख्य रूप से क्लब के संरक्षक विक्की यादव, अध्यक्ष राहुल यादव, कोषाध्यक्ष रोहित यादव देव, सचिव ललन कुमार, वरीय उपाध्यक्ष सत्येंद्र गुप्ता, बबलू सिंह, उपाध्यक्ष, उत्तम यादव, सुभाष राय, महासचिव ,धर्मेंद्र तिवारी महामंत्री, साजन सेठ, दीपक हरी गोप वर्मा, सूरज वर्मा, सचिन राजा सिंह चौधरी, शुभम चौधरी, बिट्टू चौधरी, अभिषेक तिवारी, अमित यादव, साहिल यादव, अभय यादव, वरिष्ठ प्रचार मंत्री राजू राय, राजवीर चौधरी उपस्थित रहे।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार युवक की मौत

DUMKA : मुफस्सिल थाना क्षेत्र के दुमका- मसलिया मुख्य मार्ग पर विजयपुर गांव के पास कंटेनर से टकरा जाने से बाइक सवार युवक की मौत हो गयी। मृतक सुनील हेम्ब्रम (22) जामा थाना क्षेत्र के दोंदिया गांव का रहने वाला बताया जाता है। जानकारी के अनुसार सुनील बाइक लेकर दुमका आ रहा था। विजयपुर गांव के पास कंटेनर से टकरा जाने से वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। स्थानीय लोगों की सहायता से घायल को फुलो झानो मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल प्रबंधन के द्वारा घटना की सूचना थाना को दी गयी। सोमवार को शव का पोस्टमार्टम करा कर परिजन को सौंप दिया गया है।

दो वर्ष बाद कोयल उफान पर

BHAVNATHPUR में सर्वाधिक 190 एमएम बारिश

PHOTON NEWS PALAMU : पलामू और इससे सटे ऊपरी इलाके में लगातार बारिश होने से जिले की प्रमुख नदी कोयल उफान पर है। इससे बाढ़ का खतरा बन गया है। निचले इलाके के लोगों के लिए अलर्ट जारी किया गया है। चैनपुर प्रखंड के शाहपुर में नदी का पानी सड़क पर आ गया है, जिससे लोगों में हड़कंप मचा हुआ है। कई कच्चे मकान गिर गए और लोगों के समक्ष सिर छुपाने की समस्या बन गई है। इस बीच गढ़वा जिले के भवनाथपुर में 190 एमएम बारिश हुई है, जो सोमवार के दिन का पूरे देश में सर्वाधिक वर्षापात है। मौसम विभाग में पलामू, गढ़वा और लातेहार को लेकर ओरेंज अलर्ट जारी किया है।

पिछले तीन-चार दिनों से रुक-रुक कर बारिश हो रही है। नतीजा कोयल नदी में सोमवार सुबह में बाढ़ आ गई। पूरे दिन बारिश हुई है। ऐसे में नदी के जलस्तर में और बढोतरी की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार पिछले 24 घंटे के दौरान जिले में आठ एमएम बारिश हुई है। ऐसी स्थिति अभी रहने की जानकारी दी गई है।

उल्लेखनीय है कि दो वर्ष बाद कोयल नदी इस तरह से उफान पर है और बारिश भी लगातार हो रही है। पिछले दो वर्ष सूखे के कारण कोयल नदी में अपेक्षित पानी नहीं आया था।

इधर, कोयल में जलभराव होने के कारण शाहपुर क्षेत्र में स्थित जलापूर्ति केंद्र के कुआं के आसपास पानी भर गया। इसी तरह से नदी किनारे स्थित शिव मंदिर और ठाकुरबाड़ी के पास पानी पहुंच गया है। सड़क पर पानी आने के कारण लोगों में हड़कंप मचा हुआ है। शाहपुर ठाकुरबाड़ी मंदिर के पुजारी श्रवण पांडे ने बताया कि लगातार बारिश होने के कारण कोयल नदी में बाढ़ आ गई है और खतरा उत्पन्न हो गया है। पानी सड़क तक पहुंच गया है। अगर इसी तरह से बारिश होती रही तो जलस्तर और बढ़ेगा और खतरा भी ज्यादा बढ़ जाएगा।

इधर, कोयल नदी में लगातार जल भराव होने के कारण मेदिनीनगर और चैनपुर प्रखंड प्रशासन की ओर से आम लोगों के लिए अलर्ट जारी किया गया है। शहरी क्षेत्र के पहाड़ी शास्त्री नगर, मुस्लिम नगर मुहल्ले के लोगों को विशेष रूप से ऐहतियात बरतने की सलाह दी गई है।

तालाब में डूबने से दो सगी बहनों की मौत

PHOTON NEWS PALAMU : पलामू के नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र के मायापुर गांव की दो सगी बहनों की तालाब में डूबने से मौत हो गई है।

बताया जाता है कि नोडिया बाजार थाना क्षेत्र के मायापुर के रहने वाले रमेश सिंह की बेटी लवली कुमारी (12) और आरुषि कुमारी (नौ) रविवार की देर शाम जंगल में खुखड़ी चुनने गई थी। इसी क्रम में दोनों तालाब में नहाने लगी थी। तालाब में नहाने के क्रम में दोनों डूब गईं, जिससे दोनों की मौत हो गई। देर शाम तक दोनों के घर नहीं लौटने पर परिजनों ने खोजबीन शुरू की था। रविवार की रात दोनों का शव गांव के तालाब से बरामद हुआ। परिजन और ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद दोनों बच्चियों के शव को बाहर निकाला था।

रमेश सिंह का किराना दुकान है, रमेश सिंह जैसे ही दुकान पर पहुंचे उनकी दोनों बेटियां जंगल के तरफ निकल गई थी। वापस नहीं लौटने पर परिजन और ग्रामीण दोनों को खोजने जंगल के तरफ गए। तालाब के पास कपड़ा को देखने के बाद परिजनों को पूरे मामले में शक हुआ। परिजन और स्थानीय ग्रामीणों ने तालाब की तलाशी लेनी शुरू की इसके बाद दोनों बच्चियों का शव बरामद हुआ।

घटना की जानकारी मिलने के बाद नौडीहा बाजार थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की छानबीन शुरू। दोनों के शव को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल में भेज दिया है। नौडीहा बाजार थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों बच्चियों की डूबकर मौत हुई है। मामले में छानबीन की जा रही है।

यूथ क्लब जोड़ा पोखर की ओर से आयोजित फुटबाल प्रतियोगिता का समापन

खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का मौका प्रदान कर रही हेमंत सरकार : विधायक

PHOTON NEWS CHAIBASA : झींकपानी प्रखंड के जोड़ापोखर हाई स्कूल मैदान में गांधी जयंती पर यंग स्टार क्लब के तत्वाधान में आयोजित तीन दिवसीय फुटबाल प्रतियोगिता का फाइनल सह समापन सोमवार को हुआ। फाइनल सह समापन समारोह में मुख्य अतिथि सदर विधानसभा के विधायक दीपक बिरुवा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य सुभाष बनर्जी, मुखिया गुरुचरण मुंडा, गर्दी मुंडा, झामुमो नेता तुराम बिरुली उपस्थित हुए।

मैच में हिस्सा लेने आए खिलाड़ियों से मिलते विधायक दीपक बिरुवा। ● फोटोन न्यूज

फाइनल मैच सोनापोसी बनाम चांद एकेडमी के बीच खेला गया। जिसमें चांद एकेडमी ने सोनापोसी को हराकर चैंपियन बनने का गौरव प्राप्त किया। विजेता और उप विजेता टीमों को अतिथियों के हाथों पुरस्कृत किया गया। इसके पहले विधायक जी ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करने के बाद गेंद को किक मार कर फाइनल मैच का शुभारंभ किया। साथ ही महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया।

मौके पर मुख्य अतिथि विधायक दीपक बिरुवा जी प्रतियोगिता के विजेता एवं उपविजेता टीमों को बधाई देते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है। इसे देखते हुए झारखंड के हेमंत सोरेन की सरकार पंचायत व प्रखंड स्तर पर फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन कर युवाओं को आगे बढ़ने का मौका प्रदान कर रही है। खिलाड़ी नशा से दूर रहकर निरंतर अभ्यास जारी रखें। खेल को एक लक्ष्य बनाकर खेले सफलता जरूर मिलेगी। मौके पर कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति के अध्यक्ष शशि मुंडा, सत्य मुंडा, गौरी शंकर गोप, सिद्धेश्वर सवैया, कृष्ण मुंडा, किरण मुंडा , डीलन मुंडा, जेम्स मुंडा,सिद्धेश्वर हेंब्रम, भीम मार्डी, सौरभ गोप, निजाम मुंडा, अमित गोप, सिकंदर गोप, टुन्नू मुंडा समेत अन्य उपस्थित थे।

जयंती पर याद किए गए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री

PHOTON NEWS LOHARDAGA : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती के अवसर पर सोमवार को उप विकास आयुक्त जय ज्योति सामंता के नेतृत्व में समाहरणालय सभागार में दोनों महापुरुषों के चित्र पर माल्यार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

चित्र पर माल्यार्पण करते पुलिस पदाधिकारी। ● फोटोन न्यूज

इस कार्यक्रम में अनुमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार लाल, पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय) प्रमेश्वर प्रसाद, जिला स्तरीय पदाधिकारीगण, पुलिस पदाधिकारी, कार्यपालक दण्डाधिकारी समेत विभिन्न कार्यालयों के कर्मीगण शामिल हुए। इस मौके पर दोनों महापुरुषों को पुष्पांजलि अर्पित कर देश के लिए दिए उनके बलिदान को याद किया गया।

इधर महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर लोहरदगा जिला के विभिन्न गांवों में वन अधिकार अधिनियम, 2006 के विषयक पर शपथ कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इसमें संबंधित ग्राम स्तरीय वन अधिकार समिति के सदस्यों द्वारा वन अधिकार अधिनियम, 2006 में दिए गए अधिकार का उपयोग करते हुए ग्राम स्तर पर वनाधिकार समिति का गठन/पुनर्गठन करने तथा वन पर निर्भर लोगों और समुदायों को वनाधिकार पट्टा दिये जाने हेतु उनके दावा पर नियम के अनुसार अनुशंसा करने, जल, जंगल और जमीन और इसके संसाधनों की रक्षा के लिए समर्पित और संगठित प्रयास करने की शपथ ली गयी।

जयंती पर जिला प्रशासन ने दी महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि

लोगों को राष्ट्रपिता के जीवन मूल्यों से प्रेरणा लेने की जरूरत : उपायुक्त

PHOTON NEWS KHUNTI : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर सोमवार को खूंटी के दतिया गांव में समारोह का आयोजन कर गांधी चौक स्थित उनकी प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उपायुक्त लोकेश मिश्र, पुलिस अधीक्षक अमन कुमार सहित कई अधिकारियों और आम लोगों ने श्रद्धांजलि दी। इससे पूर्व नगर पंचायत के विभिन्न क्षेत्रों में साफ-सफाई का अभियान चलाकर स्वच्छ शहर-सुंदर शहर अभियान के तहत आमजनों को स्वच्छता के लिए जागरूक किया गया।

मौके पर उपायुक्त के अलावा उप विकास आयुक्त नीतीश कुमार सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत सचान, परियोजना निदेशक आइटीडीए, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी सैयद राशिद अख्तर सहित जिले के अन्य पदाधिकारियों ने राष्ट्रपिता को श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस अवसर पर नगर भवन से गांधी चौक तक स्वच्छता रैली निकाली गई। रैली में नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व उपाध्यक्ष, पूर्व वार्ड पार्षद, कार्यपालक पदाधिकारी, सिटी मैनेजर, मिशन मैनेजर और नगर पंचायत कर्मी आदि शामिल थे।

उपायुक्त ने लोगों को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों से प्रेरणा लेने के संदेश दिए। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने ऐसे भारत का सपना देखा था, जो न केवल आजाद हो अपितु स्वच्छ और विकसित भी हो। इस अवसर पर हम सभी को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि स्वैच्छिक रूप से स्वच्छता की दिशा में कार्य करेंगे। तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए आवश्यकता के आधार पर योजना बनाकर कार्य करेंगे। डीसी ने किहा कि बापू के आदर्शों को अपनाते हुए देश के विकास में उनके बताये गये मार्गों का अनुसरण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

रामगढ़ में पुलिस मेंस एसोसिएशन का चुनाव संपन्न, 94 प्रतिशत हुई वोटिंग

करण और राजीव गुट के बीच टक्कर, पांच निर्दलीय की किस्मत भी दांव पर

PHOTON NEWS RAMGARH : रामगढ़ पुलिस मेंस एसोसिएशन का चुनाव बेहद दमदार तरीके से हुआ। इस चुनाव में 94.10 प्रतिशत वोटिंग ने प्रत्याशियों के दिलों की धड़कन को बढ़ा दिया है। इस चुनाव में करण यादव गुट और राजीव रंजन कुमार चौधरी गुट के बीच की लड़ाई काफी नजदीकी तौर पर देखी जा रही है। सबसे बड़ी बात यह है कि पांच निर्दलीय प्रत्याशियों की किस्मत भी दांव पर लगी है। किसकी जीत होगी और किसके हाथ शिकस्त लगेगी इसका फैसला मतगणना के बाद होगा।

चुनाव कार्य में लगे चुनाव पदाधिकारी। ● फोटोन न्यूज

मुख्य चुनाव पदाधिकारी अमित कुमार तिवारी ने बताया कि संगठन के चुनाव में करण यादव और राजीव रंजन कुमार चौधरी ने अपने गुट के प्रत्याशियों के साथ चुनाव लड़ा। लेकिन इस बीच कोषाध्यक्ष पद पर कुंज बिहारी चौबे और अजय महतो, उपाध्यक्ष पद पर मनोज कुमार कुशवाहा, अंकेक्षक पद पर सुमन उरांव और केंद्रीय सदस्य के पद के लिए रणविजय कुमार राय ने निर्दलीय पर्चा भरा। उन सभी की किस्मत को लेकर मतदाताओं ने वोट किया है। इस संगठन में कुल 540 वोटर थे। जिसमें से 508 लोगों ने वोट किया है।

चुनाव पदाधिकारी के सहयोगी करेंगे मतगणना : मुख्य चुनाव पदाधिकारी अमित कुमार तिवारी ने बताया कि 540 वोट में से 32 वोट नहीं पड़ने की वजह यह रही है कि कुछ सदस्य अवकाश पर थे। कुछ लोगों का दूसरे जिले में डेपुटेशन हो गया है। लेकिन इसके बावजूद मतदाताओं का उत्साह काफी अच्छा रहा। उन्होंने बताया कि उनके सहयोगी विष्णु उरांव, मुन्ना सिंह, सुनील कुमार, संजय कुमार गन, मानिक चंद्र उपाध्याय, विपिन कुमार पांडे, रोशन कुमार गौतम और विक्रम महतो मतगणना के बाद रिजल्ट जारी करेंगे।

जयंती पर याद किए गए महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री

व्यक्ति बड़ा तब होता है, जब वह समाज के कमजोर और अंतिम व्यक्ति के लिए कुछ कर पाए : उपायुक्त

PHOTON NEWS RAMGARH : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान उपायुक्त चंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक पीयूष पांडे, डीडीसी रोबिन टोप्पो, एसडीओ जावेद हुसैन सहित अन्य जिला एवं प्रखंड स्तरीय अधिकारियों ने रामगढ़ शहर के गांधी चौक स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। जिसके उपरांत उन्होंने मुक्तिधाम स्थित गांधी घाट पर आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया गया। गांधी घाट पर अधिकारियों ने महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया।

महात्मा गांधी को नमन करते उपायुक्त चंदन कुमार। ● फोटोन न्यूज

इस अवसर पर मुक्तिधाम स्थित गांधी घाट पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त चंदन कुमार ने गांधी जी के विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि जब भी आपको वहम हो और लगे कि आपने अपने जीवन में बहुत कुछ हासिल कर लिया, तो अपने आस-पास के सबसे कमजोर और अंतिम व्यक्ति को देखिए। विचार कीजिए कि आपने आज तक अपने जीवन में जो कुछ भी हासिल किया है उससे उस व्यक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है। क्या उसके जीवन में कुछ परिवर्तन हुआ। जब आप यह सोचेंगे तो आपका वहम खुद ही कम होने लगेगा। इसका तात्पर्य यह है कि कोई भी व्यक्ति बड़ा इससे नहीं होता कि उसने कितना धन कमाया या सोशल मीडिया पर उसके कितने फॉलोअर्स हैं। व्यक्ति बड़ा तब होता है जब वह समाज के उस दिन-हीन, कमजोर और अंतिम व्यक्ति के लिए कुछ कर सकने में सक्षम हो या कर पाए। आज हम लोग इसी संकल्प के साथ इस गांधी जयंती की शुरूआत करें। अपने जीवन के रूप रेखा में अवश्य ही गांधी जी के इस मंत्र को शामिल करें और अपने साथ-साथ अपने समाज के अंतिम व्यक्ति के विकास के लिए कार्य करें।

वहीं कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त ने कहा कि गांधी घाट के विद्युत सौदाहगृह को भी जल्द से जल्द क्रियान्वित करने हेतु कार्य किया जा रहे हैं। यथाशीघ्र इसे शुरू भी कर दिया जाएगा। साथ ही गांधी घाट को केवल छठ घाट ही नहीं बल्कि एक वृहद योजना के रूप में विकसित करने के लिए योजना तैयार की जा रही है। एक वृहद एवं भव्य तोरण द्वार का भी निर्माण जल्द से जल्द कराया जाएगा।

मुक्तिधाम स्थित गांधी घाट पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान एसपी पीयूष पांडे ने महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी के विचारों तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में शामिल करने तथा सत्य, अहिंसा, त्याग तथा स्वच्छता का पालन करने की अपील की। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने कहा कि महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों का पालन करते हुए देश व समाज के कल्याण में अपना योगदान दें।

स्मारक धर्मशाला प्रबंध समिति ने गांधी और शास्त्री को दी श्रद्धांजलि

विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते समिति के लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS KHUNTI : महात्मा गांधी स्मारक धर्मशाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष सह अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत सचान के मार्गदर्शन में गांधी जयंती के अवसर पर सोमवार को स्कूल स्तर पर पेंटिंग और निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर धर्मशाला परिसर में आयोजित जयंती समारोह में पेंटिंग व निबंध प्रतियोगिता के 30 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कार का वितरण एसडीओ और अन्य लोगों ने किया। इससे पूर्व एसडीओ समेत अन्य गणमान्य लोगों ने गांधी एवं शास्त्रीजी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। अध्यक्ष सह एसडीओ अनिकेत सचान ने महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के देश निर्माण में उनके योगदान की विस्तार से चर्चा की और कहा की 1926 में जिस उदेश्य और परिकल्पना को इंगित कर इस धर्मशाला की स्थापना की गई थी, उसे पुनः उस स्तर तक ले जायें, जिसमे खूंटी के आम जनमानस के जीवन में वही प्रभाव लाये जैसा इसकी स्थापना के समय संकल्पना की गई थी।

उन्होंने कहा कि यह धर्मशाला शहर के जनमानस के जीवन में कोई पॉजिटिव प्रभाव छोड़ पाये, यही हमारी कोशिश रहेगी।

BRIEF NEWS

लायंस क्लब सदस्यों ने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

RANCHI : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर सोमवार को लायंस क्लब ऑफ रांची ईस्ट ने मेन रोड स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। लायंस क्लब के पीआरओ आशुतोष द्विवेदी ने बताया कि सोमवार को लायंस क्लब ऑफ रांची ईस्ट की ओर से चलाए जा रहे वर्ल्ड लायन सर्विस वीक के तहत सोमवार को दूसरे दिन गांधी जयंती पर मेन रोड रांची स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। क्लब सदस्यों ने आस पास के जरूरतमंदों के बीच गुड़ चूड़ा का वितरण किया।

डालसा ने जेल अदालत में 3 मामलों का किया निष्पादन

RANCHI : रांची के जिला विधिक सेवा प्राधिकार (डालसा) ने सोमवार को होटवार स्थित बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारा में जेल अदालत -सह- विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया।शिविर को सम्बोधित करते हुए मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी मिथिलेश कुमार सिंह ने कानून की जानकारी दी। जागरूकता शिविर में उपस्थित कारा अधीक्षक हामिद अख्तर ने कहा कि किसी भी बंदी को कोई परेशानी है, तो वे उनसे सम्पर्क कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी अधिवक्ता और कारा में कोई परेशानी हो तो उनका शीघ्र समाधान किया जायेगा। आज की जेल अदालत में छोटे अपराध के कुल सात मामलों को रखा गया, जिसमें तीन मामलों का निष्पादन किया गया। शिविर को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव राकेश रंजन, न्यायिक दण्डाधिकारी अक्षत श्रीवास्तव, अशोक कुमार, नूतम एक्का, रूचि दयाल ने भी सम्बोधित किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जयंती पर खाद्य वस्तुओं का वितरण

RANCHI : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जयंती पर हटिया और धुर्वा के विभिन्न जगहों पर लगभग 100 सफाई कर्मचारियों और दैनिक श्रमिकों के बीच खाद्य वस्तुओं का वितरण किया गया। युथ कांग्रेस (आउटरीच सेल) के झारखंड प्रदेश चेयरमैन इंदरजीत सिंह के नेतृत्व में यह कार्यक्रम किया गया। मौके पर युवा कांग्रेस प्रदेश चेयरमैन इंदरजीत सिंह ने भी गांधी जयंती पर अपने कार्यालय पर महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित की और उन्हें याद किया। मौके पर इंदरजीत सिंह ने कहा कि सत्य, अहिंसा और सौहार्द का रास्ता, भारत को जोड़ने का रास्ता महात्मा गांधी ने ही दिखाया था। बापू को उनकी जयंती पर शत शत नमन।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

बीआइटी मेसरा का दीक्षांत समारोहः इंफोसिस के को-फाउंडर ने 17 विद्यार्थियों को दिया गोल्ड मेडल

शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया : राधाकृष्णन

PHOTON NEWS RANCHI : शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। यह सिर्फ संस्थान तक सीमित नहीं रहती है। सीखने की प्रक्रिया जीवन भर चलती है। खुद को बेहतर बनाकर ही सामाजिक पहचान मिलेगी। ये बातें राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने बीआइटी मेसरा के 33वें दीक्षांत समारोह के दौरान कहीं। वह जीपी बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित दीक्षांत समारोह में बतौर चांसलर पहुंचे थे। जहां पहली बार संस्थान के सात कैंपस - बीआइटी मेसरा, पटना, देवघर, लालपुर एक्सटेंशन, नोएडा, जयपुर और यूनिवर्सिटी पॉलिटेक्निक के 1700 विद्यार्थियों ने डिग्रियां हासिल की। इस मौके पर राज्यपाल ने कहा कि डिग्री हासिल करने के बाद असली जीवन यात्रा शुरू होती है। जिसमें बेहतर कर्म करते हुए परिवार और समाज का विकास कर सकेंगे। शैक्षणिक संस्था शिक्षा के साथ सामाजिक दायित्वों के निर्वहन की सीख देती है। समय-समय पर इसमें सहयोग कर अच्छा नागरिक बन सकेंगे।

बीआइटी मेसरा के 33वें दीक्षांत समारोह में छात्रा को सम्मानित करते राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ● फोटोन न्यूज

दीक्षांत समारोह में 2818 विद्यार्थी हुए थे चयनित

सत्र 2022-23 के लिए 33वें दीक्षांत समारोह में सात कैंपस के कुल 2818 विद्यार्थी डिग्री प्रदान करने के लिए चुने गये थे। इनमें यूजी के 1948, पीजी के 699, डिप्लोमा के 115 और पीएचडी के 56 विद्यार्थी शामिल थे। विषयवार चिह्नित 17 ओवरऑल बेस्ट परफॉर्मर को गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। समारोह में बीआइटी मेसरा मेन कैंपस के कुल 1365 विद्यार्थी (यूजी के 821, पीजी के 498 और पीएचडी के 46 विद्यार्थी), बीआइटी लालपुर एक्सटेंशन के कुल 429 (यूजी के 323, पीजी के 105 और पीएचडी के एक विद्यार्थी), यूनिवर्सिटी पॉलिटेक्निक बीआइटी मेसरा के कुल 143 (डिप्लोमा के 115, यूजी के 28 विद्यार्थी), ऑफ कैंपस देवघर के कुल 142 (यूजी के 140 और पीएचडी के दो विद्यार्थी), पटना के कुल 383 (यूजी के 361, पीजी के 19 और पीएचडी के तीन विद्यार्थी), नोएडा के कुल 127 (यूजी के 70, पीजी के 53 और पीएचडी के चार विद्यार्थी) और जयपुर के कुल 229 (यूजी के 205 और पीजी के 24 विद्यार्थी) को डिग्री से सम्मानित किया गया।

बड़ा काम करने के लिए खुद को तैयार करें : सेनापति

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में इंफोसिस के को-फाउंडर पद्मभूषण सेनापति क्रिस गोपालकृष्णन शामिल हुए। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि बड़ा और प्रभावी काम करने के लिए समय और अनुभव जरूरी है। इसके लिए लगातार खुद को शिक्षा से जोड़े रखें। आज के युवा आत्मविश्वास के साथ अपने काम को अंतिम अंजाम तक पहुंचाने का जुनून रखते हैं। यह अच्छी शिक्षा व प्रशिक्षण की पहचान है। उन्होंने विद्यार्थियों को स्टीव जॉब्स का उदाहरण देते हुए नियमित आत्म मूल्यांकन कर लक्ष्य तय कर उसे हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। वीसी प्रो डॉ इंद्रनील मन्ना ने संस्था की वार्षिक रिपोर्ट पेश की। उन्होंने बताया कि नैक से संस्था को ग्रेड "ए" मिलने के बाद बेहतर करने का प्रयास किया जा रहा है। संस्थान विद्यार्थियों की शिक्षा के अलावा अनुसंधान और प्लेसमेंट की दिशा में बेहतर रिकॉर्ड कायम करने में सफल हुई है। सत्र 2022-23 की प्लेसमेंट प्रक्रिया में 193 संस्थानों ने 729 जॉब ऑफर्स पेश किये। मौके पर बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के चेयरमैन सीके बिरला ने भी समय की मांग के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण हासिल करने की प्रेरणा दी।

युवा पीढ़ी शोध से जुड़े

राज्यपाल ने कहा कि भारत शिक्षित देश है। देश के लोगों में वह क्षमता है, जो किसी और में नहीं। चंद्रयान-थ्री इसका उदाहरण है। युवा पीढ़ी को शोध से जुड़ने की जरूरत है। इससे नये अवसर तैयार होंगे, जो दूसरों को रोजगार दिलाने में मदद करेगी। इंजीनियरिंग के विद्यार्थी नवाचार से नये बदलाव की पहल कर सकते हैं। इस क्रम में नैतिकता और मूल्य आधारित जीवन को अपनाना जरूरी है।

इन 17 विद्यार्थियों को मिला गोल्ड मेडल

इस वर्ष गोल्ड मेडलिस्ट के लिए 17 ओवरऑल बेस्ट परफॉर्मर का चयन विभिन्न कैंपस से हुआ था। इनमें बीआर्क के दीपतम दास, बीटेक बायोटेक्नोलॉजी के अनिरुद्ध अरुण उपाध्याय, केमिकल इंजीनियरिंग की जसलीन कौर, केमिकल-प्लास्टिक एंड पॉलीमर के हिमांशु कुमार, सिविल इंजीनियरिंग की सौम्या झा, कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग की कोमल कुमारी, इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग के तरणजीत सिंह, इसीएस के महावदी श्री शशांक, आइटी के कपिल कुंगवाणी, मैकेनिकल इंजीनियरिंग के अमन सिंह, प्रोडक्शन इंजीनियरिंग के आयुष त्रिपाठी, होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी की श्रेया मनकोटिया, बी फामेर्सी की अदीति, बीबीए की अनमोल अग्रवाल, बीसीए की इशा गुप्ता, बीएससी एनिमेशन एंड मल्टीमीडिया के सिद्धार्थ और बीएससी मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी की पूनम कुमारी शामिल रहें।

रेलवे ठेकेदार से गैंगस्टर अनिल शर्मा के नाम पर मांगी रंगदारी, दो आरोपी धराए

CRIME REPORTER RANCHI : जगन्नाथपुर थाना की पुलिस ने हजारीबाग जेल में बंद गैंगस्टर अनिल शर्मा के नाम पर पांच लाख रुपये रंगदारी मांगने के आरोप में रोहित सिंह और कृष्ण मुरारी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। रोहित सिंह पुंदाग इलाके का रहने वाला है। कृष्ण मुरारी जगन्नाथपुर इलाके का रहने वाला है। पुलिस का कहना है कि दोनों आरोपी न्युटेक जेटिंग इक्विपमेंट्स, इंडिया प्राईवेट लिमिटेड कंपनी के हटिया रेलवे स्टेशन के साइड इंचार्ज से अनिल शर्मा का भय दिखाकर रंगदारी मांग रहे थे। इस कंपनी के द्वारा ट्रेन में साफ-सफाई और बेडरोल देने का काम किया जाता है। कंपनी के कर्मचारियों के बयान पर पुलिस ने भादवि की धारा 385,387,34 के तहत केस किया है। पुलिस का कहना है कि पकड़े गए दोनों आरोपियों ने सबसे पहले टोकन मनी के रूप में पांच लाख रुपये की मांग की। इसके बाद हर माह 35 हजार रुपये देने के लिए कहा। इसके अलावा जितना कंपनी को जितना का टेंडर मिला है उसका तीन प्रतिशत देने के लिए कहा गया। पकड़े गए आरोपी बार बार रंगदारी की मांग कर रहे थे और जान से मारने की धमकी दे रहे थे। जगन्नाथपुर थानेदार अरविंद कुमार का कहना है कि पकड़े गए दोनों आरोपी कंपनी के लोगों को लेकर हजारीबाग जेल में बंद अनिल शर्मा से मिलाने ले गए थे। वहीं पर कितना रंगदारी देना है यह तय हुआ था। इसके बाद दोनों आरोपियों के द्वारा मोबाइल से फोन कर रंगदारी मांगी जा रही थी। पुलिस ने आरोपियों के पास से वह मोबाइल बरामद कर लिया है जिससे रंगदारी की मांग की जा रही थी। पकड़े गए दोनों आरोपियों ने अपने कई साथियों का नाम पुलिस को बताया है। पुलिस सभी का सत्यापन कर रही है। पुलिस का कहना है कि इस मामले में और भी लोगों की गिरफ्तारी होगी।

कांके गोलीकांड : चितरंजन ने रिमांड में कबूला अपना गुनाह, बताया कारोबार में दखल दे रहा था अवधेश यादव

CRIME REPORTER RANCHI : कांके के जमीन कारोबारी अवधेश यादव गोलीकांड के मुख्य आरोपी चितरंजन को रांची पुलिस रिमांड पर लेकर पूछताछ कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, अब तक की पूछताछ में चितरंजन ने यह स्वीकार कर लिया है कि उसने ही अवधेश के ऊपर जानलेवा हमला किया था। चितरंजन ने अवधेश पर गोली इसलिए चलवायी थी क्योंकि अवधेश उसके कारोबार में दखल दे रहा था। अवधेश उसके द्वारा एग्रीमेंट करवाये गये प्लॉट पर कब्जा करने का प्रयास कर रहा था। इससे तंग आकर अवधेश पर चिरंजन ने हमला करवाया।

फाइल फोटो।

चितरंजन समेत पांच आरोपियों से पूछताछ कर रही पुलिस

बता दें कि रांची सिविल कोर्ट के मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की कोर्ट से इजाजत मिलने के बाद रांची पुलिस चितरंजन, पंकज और हर्ष समेत पांच आरोपियों से पूछताछ कर रही है। वहीं पुलिस इस बिंदु पर भी जांच कर रही है कि गोली चलने से पहले अवधेश को किसके फोन कर घर से बाहर बुलाया था। बता दें कि पिछले दिनों कांके थाना क्षेत्र स्थित ब्लॉक चौक के पास जमीन कारोबारी अवधेश यादव को दो अज्ञात अपराधियों ने दिनदहाड़े गोली मारी थी। जिसके बाद घायल अवधेश के भाई के बयान पर चितरंजन और कृष्णा नायक समेत अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। फिलहाल अवधेश एक निजी अस्पताल में इलाजरत है, जहां उसकी स्थिति गंभीर बनी हुई है। इस केस से जुड़े आधा दर्जन से ज्यादा आरोपियों को पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है। जिसमें चितरंजन की पत्नी और पुत्र भी शामिल हैं।

कांग्रेस ने महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनाई

RANCHI : प्रदेश कांग्रेस ने सोमवार को कांग्रेस भवन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनायी। इस अवसर पर कांग्रेस नेताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के चित्र पर माल्यार्पण कर उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के बल पर अंग्रेजों से भारत को आजादी दिलायी। शरीर पर मात्र एक धोती लपेटे और लाठी के बल अंग्रेजों से मुकाबला किया। उन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डालते ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के बाद देश को कुशल नेतृत्व प्रदान किया।

19 घंटे के बाद जोजो पहाड़ के पास मिला हातमा में बहे कारोबारी देव प्रसाद का शव

CRIME REPORTER RANCHI : पुलिस और एनडीआरएफ की टीम ने सोमवार की सुबह कारोबारी देव प्रसाद का शव जोजो पहाड़ के पास से बरामद किया। पुलिस ने देव प्रसाद के शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव स्वजनों के हवाले कर दिया। पुलिस का कहना है कि देव प्रसाद का शव पत्थरों के बीच जाकर फंस गया था। पुलिस गोंदा थाना क्षेत्र स्थित हातमा सरइटांड पुलिया से कारोबारी का शव खोजते हुए जोजो पहाड़ तक पहुंची। पुलिस रविवार को कई जगहों पर कारोबारी को खोजने का प्रयास किया था लेकिन कोई सुराग नहीं मिल पाया था। सोमवार की सुबह पांच बजे से शव को खोजा जाने लगा। सुबह छह बजे पुलिस को शव बरामद हुआ। पुलिस को शव खोजने में 19 घंटा का समय लग गया। पुलिस का कहना है कि इस संबंध में अभी तक घरवालों के द्वारा कोई लिखित शिकायत नहीं की गई है। घरवालों के द्वारा आवेदन दिया जाएगा तो पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी। राजधानी में इससे पहले भी कई बार नाले में बहकर लोगों की जान जा चुकी है। इसमें पंचशील नगर,नाला रोड और महाबीर नगर में लोगों की जान गई थी। इसे देखते हुए नगर निगम में द्वारा पिछले चार साल में तीन बार नगर विकास विभाग को प्रस्ताव भेजा गया है कि शहर में कई इलाकों में खतरनाक नालियां है जिससे जान माल को खतरा है। लेकिन एक बार भी प्रस्ताव पास नहीं हुआ। निगम के द्वारा विभाग को बताया गया है कि 28 करोड़ रुपये से खतरनाक नालियों को ठीक किया जा सकता है। लेकिन हर वर्ष नाले में लोगों के बह जाने से मौत हो जाती है और नगर निगम,नगर विकास विभाग अपना अपना पल्ला झाड़ने लगाता है।

पाइप-फीता लगाकर खानापूर्ति कर रहा निगम

नगर निगम को इस बात की जानकारी है कि किस किस इलाके में स्थित नाले में लोग बह जाते हैं। इसके बाद भी नगर निगम के द्वारा चड़री तालाब के पास नाले के पास पाइप लगा दिया गया है। पाइप लगाने के बाद भी लोग सुरक्षित नहीं हैं। पाइप के होने के बाद भी लोग उसमें गिर सकते हैं और उनकी जान जा सकती है। इसके अलावा कांटाटोली चौक के समीप बस स्टैंड के निकास द्वारा के पास नाले के पास फीता लगा दिया गया है। फीता लगाने से किसी का जान नहीं बच सकती है। हाल के दिनों में इसी नाले में एक आटो चालक बह गया था।

दो किलो साढ़े तीन सौ ग्राम अफीम के साथ एक गिरफ्तार

RANCHI : नामकुम थाना की पुलिस ने सोमवार को दो किलो साढ़े तीन सौ ग्राम अफीम के साथ शिवराज कुमार उर्फ शिवम कुमार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस का कहना है कि शिवराज कुमार लातेहार का रहने वाला है। आरोपित लातेहार से अफीम लेकर नामकुम इलाके में पहुंचा था। पुलिस को इसकी सूचना मिल गई थी। पुलिस की टीम रामपुर इलाके में पहुंची तो आरोपित बाइक में बैठा हुआ था। पुलिस ने आरोपित को पकड़ा और थैला की तलाशी ली गई तो उसके पास से अफीम बरामद हो गया। आरोपित ने बताया कि रामपुर में रहने वाले एक व्यक्ति को अफीम देना था। पुलिस को उस व्यक्ति का नाम पता मिल गया है। पुलिस उस व्यक्ति की तलाश में छापेमारी कर रही है। पुलिस का कहना है कि आरोपित ने अपने कई साथियों का नाम पता बताया है जो लातेहार से अफीम लेकर रांची आते हैं। रांची पुलिस जल्द ही लातेहार जाएगी।

बंद घर का ताला तोड़कर नकद व जेवरात की चोरी

45 मिनट के लिए घर से बाहर गया था परिवार

CRIME REPORTER RANCHI : लोअर बाजार थाना क्षेत्र स्थित जीईएल चर्च मिशन कंपाउंड बाबू लाइन में रहने वाली सोनम रुंडा के घर का ताला तोड़कर चोरों ने जेवरात और नकद उड़ा लिया। सोनम के बयान पर लोअर बाजार थाना में प्राथमिकी दर्ज हुई है। पुलिस का कहना है कि सोनम राज अस्पताल चली गई थी। इसी बीच सोनम के पति 45 मिनट के लिए किसी काम से घर से बाहर गए थे। वह वापस लौटे तो देखा कि घर का दरवाजा खुला हुआ है। अलमारी में रखा हुआ जेवरात और बीस हजार रुपये गायब है। आसपास के लोगों से पूछताछ की गई लेकिन कोई जानकारी नहीं मिल पाई। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

इधर, दुकान से नकद व सोने की चेन ले उड़े चोर

RANCHI : प्लाजा चौक स्थित तारा बाबू लेन में दुकान चलाने वाली सपना कुमारी ने चोरी का केस किया है। सपना ने पुलिस को बताया कि उनका पूरा परिवार देवघर गया था। दुकान में ताला लगा हुआ था। जब देवघर से पांच दिन बाद वापस लौटी तो पाया कि दुकान का ताला टूटा हुआ है। दुकान में रखा पार्लर का सामान 25 हजार नकद, सोने का चेन गायब था। चोरों ने दुकान में चोरी की घटना को अंजाम देने के बाद दूसरा ताला लगा दिया था। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज की मदद से चोरों की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है।

एशियन महिला हॉकी चैंपियनशिप को लेकर सीएम ने स्टेडियम का किया निरीक्षण, दिए कई निर्देश

उच्च स्तरीय हो हॉकी स्टेडियम की व्यवस्था : HEMANT

PHOTON NEWS RANCHI : रांची की मेजबानी में अक्टूबर में एशियन महिला हॉकी चैंपियनशिप होने जा रहा है। इस चैंपियनशिप को लेकर मोरहाबादी के मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रोटर्फ स्टेडियम का रेनोवेशन चल रहा है। सोमवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस हॉकी स्टेडियम का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्टेडियम की व्यवस्था से जुड़े कई अहम दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रोटर्फ स्टेडियम में खिलाड़ियों एवं दर्शकों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं प्रदान करना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कहा कि यह स्टेडियम राज्य का इंटरनेशनल एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम है। इस स्टेडियम की व्यवस्थाएं उच्च स्तरीय होनी चाहिए। मौके पर मुख्यमंत्री ने स्टेडियम में बिछाई गई आधुनिक ब्लू टर्फ का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों ने कहा कि स्टेडियम में अभी रिनोवेशन का कार्य प्रगति पर है। मुख्यमंत्री ने स्टेडियम का निरीक्षण करते हुए दर्शक दीर्घा में लगी कुर्सियों की साफ-सफाई तथा पेंटिंग, स्टेडियम परिसर का रंगरोगन, मैदान के अंदर एवं बाहर लगे एलईडी स्क्रीन को दुरुस्त करने, स्टेडियम में चिन्हित जगहों पर स्पोर्ट्स पर्सन का फोटो लगाने, स्कोर डिस्प्ले स्क्रीन को बड़ा करने सहित कई अन्य अत्याधुनिक सुविधाओं से संबंधित दिशा-निर्देश अधिकारियों को दिए।

मोरहाबादी के मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रोटर्फ स्टेडियम का निरीक्षण करते सीएम हेमंत सोरेन।

27 से होगा चैंपियनशिप

रांची की मेजबानी में 27 अक्टूबर से एशियन महिला हॉकी चैंपियनशिप होना है। यह एशियन महिला हॉकी चैंपियनशिप पांच नवंबर तक चलेगा। इस चैंपियनशिप में भारत के अलावा जापान, दक्षिण कोरिया, चीन, मलेशिया और थाईलैंड की टीम भाग लेगी। स्टेडियम निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव वंदना दादेल, मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे, नगर आयुक्त अमित कुमार, उपायुक्त रांची राहुल कुमार सिन्हा, वरीय पुलिस अधीक्षक चंदन सिन्हा सहित अन्य उपस्थित थे।

मोदी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपनों को कर रहे साकार : बाबूलाल मरांडी

PHOTON NEWS RANCHI : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सोमवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर मोरहाबादी स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस दौरान उन्होंने कहा कि आज गांधी जी के ग्रामीण विकास, स्वावलंबी भारत और सुशासन के सपनों को तेज गति से पूरा होते देश देख रहा है। गांव को शहर से जोड़ने का पहला प्रयास अटल बिहारी बाजपेयी जी ने शुरू किया था, जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि चाहे शौचालय हो, या बैंक में जन धन खाता, गैस चूल्हा हो या फिर पक्के मकान, ये शहरी और पैसे वालों की सुविधा मानी जाती थी लेकिन, आज गांव का एक सामान्य परिवार, गरीब परिवार इन सुविधाओं का लाभ ले रहा है। बाबूलाल मरांडी ने कहा कि भ्रष्टाचार को समाप्त किए बिना सुशासन की कल्पना नहीं की जा सकती। आज प्रधानमंत्री मोदी के प्रयास से भ्रष्टाचार पर सख्त लगाम लगाने के तंत्र विकसित किए जा रहे। गरीबों, किसानों के खाते में सरकारी सुविधा का लाभ मिल रहा है। पीएम विश्वकर्मा योजना गांव के पारंपरिक हुनरमंद कारीगरों को आगे बढ़ाने का प्रयास है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि खादी का सम्मान देश के लाखों ग्रामीण कुटीर वस्त्र उद्योगों में काम कर रहे मजदूरों, श्रमिकों, कारीगरों का सम्मान है।

मोरहाबादी स्थित बापू की प्रतिमा पर पूर्व सीएम ने पुष्पांजलि अर्पित की।

BRIEF NEWS

राउरकेला क्लब की नई कमेटी गठित, मानस रंजन महाराणा बने अध्यक्ष

ROURKELA : राउरकेला क्लब में आगामी वित्तीय वर्ष 2023-26 के लिए नई कमेटी का चुनाव सोमवार को संपन्न हुआ। राउरकेला क्लब में अगले तीन वर्षों के लिए नई कमेटी चुनी गई है। मानस रंजन महराणा को अध्यक्ष , अनुंकर शर्मा को कोषाध्यक्ष, अमिय कुमार महापात्रा और अनिकेत चंद्रा को संयुक्त अध्यक्ष चुना गया। इस चुनाव में कुल 815 सदस्यों ने मतदान किया। डीके साहू ने रिटर्निंग ऑफिसर की भूमिका निभाई।

गांधी जयंती के अवसर पर चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित

JAMSHEDPUR : महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर मानगो टाइटन आई प्लस में सोमवार को चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस दौरान डॉक्टरों द्वारा बच्चों एवं उनके अभिभावकों की नेत्र की जांच की गई। मौके पर टाइटन आई प्लस के संचालक अंकित लोढ़ा ने कहा कि टाइटन आई पल्स द्वारा समय-समय पर इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

जेंडर आधारित हिंसा को रोकने के लिए महिला प्रतिनिधियों को दिया गया प्रशिक्षण

JAMSHEDPUR : जेंडर आधारित हिंसा रोकने के लिए जिला स्तरीय दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसका आयोजन सामाजिक संस्था युवा एवं क्रिया नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में कॉमिक रिलीफ कार्यक्रम के तहत समेकित जन विकास केन्द्र सुंदरनगर में किया गया। इसमें पोटका प्रखंड की महिला जन प्रतिनिधियों को जेंडर आधारित हिंसा रोकने के लिए एक्शन एवं पैरवी पर क्षमता वृद्धि का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में रिसोर्स पर्सन के रूप में नीतू कुमारी हजारीबाग से उपस्थित थी। उन्होंने बहुत ही विस्तृत रूप से बताया की जेंडर आधारित हिंसा को रोकने के लिए हम कैसे अपनी भागीदारी निभा सकते हैं। युवा की सचिव वणार्ली चक्रवर्ती ने महिला प्रतिनिधियों को जानकारी दी कि महिला सभा के माध्यम से हम मिलकर कैसे जेंडर आधारित हिंसा को रोकने का समाधान कर सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न पंचायतों से 30 महिला प्रतिभागी शामिल हुई। जिन्होंने सुनिश्चित किया की महिला सभा को मजबूत करेंगे और महिलाओं, लड़कियों से जुड़े हर मुद्दों पर चर्चा कर उसका समाधान करने की कोशिश करेंगे और प्रखंड, जिला, राज्य स्तर पर, पैरवी करेंगे। प्रशिक्षण को सफल बनाने में युवा के सभी सदस्यों ने सहयोग किया।

सीआरपीएफ की डी-26 बटालियन ने थोलकोबाद में चलाया स्वच्छता अभियान

CHAIBASA : नक्सल प्रभावित सारंडा के सुदूरवर्ती थोलकोबाद में सीआरपीएफ की डी/26 बटालियन के पदाधिकारियों व जवानों ने ग्रामीणों के साथ मिलकर कंपनी कमांडर सर्वेश प्रकाश सिंह के नेतृत्व में साप्ताहिक हाट-बाजार, मध्य विद्यालय व थोलकोबाद गांव में स्वच्छता अभियान चलाया। कंपनी कमांडर सर्वेश प्रकाश सिंह ने कहा कि हमारे जीवन में स्वच्छता का अहम योगदान है। स्वच्छता को सभी ग्रामीण प्रतिदिन अपने रुटीन वर्क में शामिल करते हुए अपने-अपने क्षेत्रों की निरंतर साफ-सफाई करें। इससे वातावरण शुद्ध रहता है एवं बीमारियां दूर रहती है। इस दौरान सीआरपीएफ ने ग्रामीण बच्चों के बीच बिस्कुट आदि का वितरण किया।

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नीमडीह में मनी गांधी जयंती

CHAIBASA : सदर प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय नीमडीह में शिक्षक-शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों द्वारा बापू की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर सोमवार को गांधी जयंती मनाई गई। मौके पर विद्यालय के बाल संसद की सफाई मंत्री की अगुवाई में की गई। मौके पर प्रधान शिक्षक कृष्णा देवगम ने कहा कि गांधी जी राष्ट्र के आदर्श थे। अहिंसा और स्वच्छता गांधी जी की स्पष्ट छवि है। हमें अपने अंदर गांधी जी की छवि स्थापित कर स्वच्छता पर ध्यान रखें। इससे स्वयं तथा अपने परिवेश को स्वस्थ रख सकते हैं।

SARAIKELA के रास्ते CHAIBASA में खपाया जा रहा अवैध स्टोन चिप्स

दो हाईवा धराये, चालक, मालिक सहित अन्य पर प्राथमिकी दर्ज

PHOTON NEWS CHAIBASA : सरायकेला के रास्ते बिना खनिज चालान के स्टोन चिप्स की आपूर्ति चाईबासा में की जा रही है। हाइवा मालिक और क्रशर संचालक आपस में सांठगांठ कर शहर में चालान निर्गत कराये बिना ही खनिज की आपूर्ति कर रहे हैं। इससे सरकार को जहां राजस्व का बड़ा नुकसान हो रहा है, वहीं इस अवैध धंधे में संलिप्त लोग मालामाल हो रहे हैं। खनिज के अवैध परिचालन पर अंकुश लगाने के लिए जिला खनन विभाग लगातार छापेमारी कर धरपकड़ कर रहा है मगर

पकड़े गये हाईवा। ● फोटोन न्यूज

यह अवैध कारोबार रुकने का नाम नहीं ले रहा।

ऐसा ही एक मामला सोमवार को चाईबासा में पकड़ाया है। खनन विभाग ने सोमवार को स्टोन चिप्स लदे दो हाइवा को सदर थाना अंतर्गत चाईबासा बस स्टैंड चौक के पास पकड़ा। जांच में पाया गया कि एक हाइवा में करीब 500 सीएफटी एवं दूसरे हाइवा में लगभग 600 सीएफटी स्टोन चिप्स लदा था। वाहन चालकों से वाहन पर लदे स्टोन चिप्स से संबंधित परिवहन चालान की मांग की गयी तो वाहन चालकों ने बताया कि उन्होंने स्टोन चिप्स सरायकेला-खरसावां जिला अंतर्गत राजनगर अंचल में अवस्थित मां भगवती नामक स्टोन क्रशर से लोड किया है तथा क्रशर संचालक द्वारा उन्हें किसी भी प्रकार का खनिज परिवहन चालान नहीं दिया गया है।

खनन विभाग की ओर से बताया गया कि बिना वैद्य परिवहन चालान के खनिज का परिवहन करने से खनन राजस्व की क्षति एवं सरकारी संपत्ति की चोरी हुई है। इसके बाद खनन विभाग ने दोनों हाइवा को जब्त कर सदर थाने की अभिरक्षा में रखवा दिया। इस मामले में खनन विभाग की ओर से सदर थाने में हाईवा वाहनों के मालिक, चालक एवं अन्य संलिप्त अवैधकताओं के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करा दी गयी है। यहां बता दें कि पश्चिमी सिंहभूम जिले के नोवामुंडी प्रखंड अंतर्गत पुरतीदिघिया में अवस्थित ट्रस्टलाइन डीलर्स एंड माइनिंग प्राइवेट लिमिटेड से भी अवैध खनिज लादकर आ रहे ट्रकों को खनन विभाग ने जब्त किया था।

सुष्मिता मिंज मौत मामले में डीएसपी बनिता ने की जांच

जांच के दौरान डीएसपी व अन्य पुलिस अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : महिला सहायक समाहर्ता सुष्मिता मिंज की मौत का मामला दिन-ब-दिन उलझता जा रहा है। सुष्मिता के लापता होने के मामले की जांच कर रही उदितनगर थाने की महिला पुलिसकर्मी अलीश नर्मी लुगुन की रविवार को अचानक मौत से कई आशंका पैदा हो रही है। सुष्मिता मिंज की मौत के मामले की जांच कर रही डीएसपी बनिता माझी ने सोमवार को सेंसोरी पार्क स्थित घटना स्थल पर जांच शुरू कर दी है। सुष्मिता का शव 19 सितंबर को पार्क के एक तालाब से मिला था। डीएसपी बनिता माझी ने अग्निशमन दल के साथ उक्त पार्क के तालाब में निरीक्षण शुरू किया। इससे पहले उन्होंने राधिका रिजेंसी होटल में भी जांच की, जहां सुष्मिता रुकी हुई थीं।

राउरकेला में साइबर सुरक्षा को लेकर जागरूकता रथ लोगों को करेगा सतर्क

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला में साइबर सुरक्षा जागरूकता रथ का शुभारंभ सोमवार को किया गया है। यह रथ आज से 15 अक्टूबर तक राउरकेला एसपी कार्यालय के सामने से शुरू होकर राउरकेला पुलिस जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों और ब्लॉक क्षेत्रों में जाकर लोगों को जागरूक करेगी। एसपी मित्रभाणु महापात्र ने कहा कि यह रथ परिक्रमा निश्चित रूप से लोगों को जागरूक करेगी और जिले में साइबर अपराधों की संख्या को कम करने में मदद करेगी।

मालूम होकि मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने राज्य में साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए साइबर सुरक्षा अभियान शुरू

साइबर सुरक्षा जागरूकता रथ। ● फोटोन न्यूज

किया है। इस अभियान में 34 साइबर सुरक्षा रथ राज्य के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और पंचायतों में जाकर साइबर सुरक्षा के बारे में लोगों को जागरूक करेंगे। 15 अक्टूबर तक राज्य भर में क्विज प्रतियोगिता, मिनी मैराथन जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के सभी स्तरों पर इस संबंध में जागरूकता पैदा करने पर जोर देते हुए सभी से सतर्क और सुरक्षित रहने का आह्वान किया है। इस क्रम में राउरकेला में आज से साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान शुरू हो गया।

मेडिकल कॉलेजों व अस्पतालों में अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस का आयोजन, की गई स्वास्थ्य जांच

PHOTON NEWS SUNDARGARH : सुंदरगढ़ जिला प्रशासन और सामाजिक सुरक्षा और विकलांगता अधिकारिता विभाग, ओडिशा के सहयोग से स्थानीय सरकारी मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया गया।

जिला सामाजिक सुरक्षा अधिकारी अशोक हाबड़ा सिंह ने कार्यक्रम के आयोजन के लक्ष्यों और उद्देश्यों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी और वरिष्ठ नागरिकों के लिए विभिन्न सरकारी सुविधाओं की उपलब्धता पर भी चर्चा की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अतिरिक्त जिला कलेक्टर रवि नारायण साहू ने योग सोसायटी में वरिष्ठ नागरिकों की

कार्यक्रम में उपस्थित लोग। ● फोटोन न्यूज

आवश्यकताओं एवं उनकी उचित सुरक्षा पर चर्चा की। अतिरिक्त सुरक्षा अधीक्षक सुरेंद्र माझी ने वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा से संबंधित अधिनियम पर जोर दिया। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी सुकांत दास ने परिवहन विभाग द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में बताया तथा वाहन चलाते समय सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों का पालन करने पर अपना वक्तव्य दिया।

इस अवसर पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर भी आयोजित किया गया और निःशुल्क दवाएँ भी वितरित की गईं। लगभग 178 वरिष्ठ नागरिकों की आवश्यक स्वास्थ्य जांच की गई। कार्यक्रम में योग शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया। इसी प्रकार इस अवसर पर 100 वर्ष पूर्ण कर चुके पांच वरिष्ठ नागरिकों को जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया।

महिला एएसआई की दुर्घटना में मौत, थाना में हत्या का मामला दर्ज, पुलिस ने शुरू की जांच

PHOTON NEWS ROURKELA : उदितनगर थाना की महिला पुलिसकर्मी अलीश नर्मी लुगुन की आकस्मिक मौत के मामले ने अलग मोड़ ले लिया है। इस संबंध में पुलिस ने थाने में हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। मृत महिला एएसआई के पति संजय कुमार लकड़ा के एफआईआर पर पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया है। मृतक एएसआई महिला सहायक कलेक्टर सुष्मिता मिंज लापता होने के समय जांच अधिकारी थीं। इसलिए घटना की महत्ता को

जब्त बस व महिला एएआई अलीश नर्मी लुगुन की फाइल फोटो। ● फोटोन न्यूज

देखते हुए पूर्व विधायक जॉर्ज तिर्की ने उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। अलीश का चेहरा सूजा हुआ था, और खून बह रहा था।

गौरतलब है कि रविवार दोपहर बस और कार की टक्कर को लेकर हंगामा हो गया। आरोप है कि कार में बैठे लोग भड़क गये और बस चालक व खलासी की पिटाई कर दी। सूचना मिलने पर उदितनगर थाने की महिला पुलिस एएसआई अलिश मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। इसी दौरान अलीश नीचे गिर गई और उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया। लेकिन वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। डीएसपी ने कहा कि घटना के सभी पहलुओं की जांच की जा रही है।

महिला पुलिस अधिकारी अलीश नूरमी लुगुन की अचानक मौत को दुखद घटना बताते हुए परिवार वालों ने न्याय की मांग की है।

बीजू जनता दल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को दी श्रद्धांजलि

PHOTON NEWS ROURKELA : बीजू जनता दल ने गांधी जयंती के अवसर पर सोमवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस कार्यक्रम में राउरकेला विधायक एवं ओडिशा सरकार के श्रम मंत्री सारदा प्रसाद नायक ने पानपोष गांधी चौक स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और पुष्पांजलि अर्पित किया।

इस अवसर पर श्रम मंत्री सारदा नायक ने बीजेडी के सभी कार्यकर्ता को लोगों के घर- घर जाकर उनके समस्या से अवगत

कार्यक्रम में उपस्थित मंत्री सारदा प्रसाद व अन्य। ● फोटोन न्यूज

होकर उनको हल करने की कोशिश करने का आह्वान किया।

इसी तरह रघुनाथपल्ली बीजेडी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद एक प्रतीकात्मक जुलूस निकाला गया। इस कार्यक्रम में रघुनाथपाली बीजेडी नगर अध्यक्ष सुधीर सुंदर राय एवं आनंद चरण मोहंती के उपस्थिति में सभी पदाधिकारी, महिलाएं, छात्र एवं युवा नेता शामिल थे।

बिरमित्रपुर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को दी गई श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित संदीप मिश्रा व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : बिरमित्रपुर नगर पालिका और बीजू जनता दल कार्यालय में गांधी जयंती का आयोजन किया गया। बिरमित्रपुर म्युनिसिपालिटी के चेयरमैन संदीप मिश्रा ने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

इस दौरानअतिथियों में नगर उपाध्यक्ष निवेदिता बागे, पूर्व विधायक निहार सुरीन, नगर अध्यक्ष कुना देव, बीजे छात्र नेता ऑल ओवर बोर्ड काउंसिल एमडी साजिद आलम, अब्दुल्ला खान, बीजेडी छात्र जनता दल उपाध्यक्ष एमडी अजाज आलम, विशाल शर्मा, चैतन्य तिवारी प्रमुख उपस्थित थे।

सदर प्रखंड डिलियामार्चा पंचायत के प्राथमिक विद्यालय अमिता में विशेष ग्रामसभा का आयोजन

गांवों के विकास के लिए करें योजनाओं का चयन : विधायक

PHOTON NEWS CHAIBASA : सदर प्रखंड अंतर्गत डिलियामार्चा पंचायत के प्राथमिक विद्यालय अमिता में विशेष ग्रामसभा का आयोजन किया गया। ग्रामीण मुंडा डेबरा बानरा की अध्यक्षता में आयोजित ग्राम सभा में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक दीपक बिरुवा एवं विशिष्ट अतिथि जिला 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य सुभाष बनर्जी, मुखिया दामु बानरा, हरिला पंचायत मुखिया जगमोहन सावैया, अंचलाधिकारी ललित भगत शामिल हुए। ग्रामसभा में योजनाओं का प्राथमिकता के आधार पर चयन किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित विधायक दीपक बिरुवा व अन्य। ● फोटोन न्यूज

वहीं विधायक के हाथों चयनित लाभुकों के बीच धोती साड़ी एवं वृद्धावस्था पेंशन का वितरण किया गया। विधायक जी ने कहा कि ग्राम पंचायत व गांवों के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए हर छोटी बड़ी योजनाओं को चयन करें। इसके तहत पंचायतों की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए पंचायतों को एक साल के विकास की कार्ययोजना को तय करते हुए पंचायत विकास कार्य की रूप रेखा तैयार की जाएगी। वहीं विधायक जी ने पेंशन, पीएम आवास योजना, मनरेगा योजना सहित कई कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। साथ ही गांव व पंचायत के सवार्गीण विकास नये सिरे से करने की बातें कही।

इसके पहले अतिथियों ने गांधी जयंती के उपलक्ष्य पर गांधी जी के तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया। तत्पश्चात यहां विकास के विभिन्न बिंदुओं गरीबी मुक्त, स्वस्थ, बाल हितैषी, पर्याप्त जलयुक्त, स्वच्छ और हरा भरा गांव, आत्मनिर्भर बुनियादी ढांचे वाला गांव, सामाजिक रूप से सुरक्षित गांव, सुशासन वाला गांव, महिला हितैषी गांव व पंचायत का संकल्प लिया। मौके पर पंचायत के पांच मौजा के ग्रामीण मुंडा-डाकुवा, ग्रामीण महिला पुरुषों के अलावा पंचायत के कर्मचारी मौजूद रहे।

गांधी जयंती के अवसर पर MBNS INSTITUTE में हुआ स्वच्छ भारत अभियान का आयोजन

छात्र-छात्राओं ने रैली निकालकर ग्रामीणों को दिया स्वच्छता का संदेश

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : गांधी जयंती के अवसर पर सोमवार को एमबीएनएस इंस्टिट्यूट की डायरेक्टर अनुपा सिंह के मार्गदर्शन में छात्र एवं छात्राओं ने स्वच्छ भारत अभियान का आयोजन किया। इस दौरान की ओर से आसानबनी गांव में स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें कॉलेज के सभी छात्र एवं छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छता के अंतर्गत साफ-सफाई किया गया और गांव के लोगों को

स्वच्छ भारत अभियान में शामिल एमबीएनएस के छात्र-छात्राएं। ● फोटोन न्यूज

स्वच्छता के बारे में बताया गया की स्वछता हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है और स्वच्छता से हमें क्या लाभ है।

पीपुल्स अकादमी में याद किए गए बापू

पीपुल्स अकादमी+2 विद्यालय न्यू बाराद्वारी जमशेदपुर में राष्ट्रपति महात्मा गांधी व देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय के शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मियों एवं विद्यार्थियों के द्वारा परिसर की सफाई कर स्वच्छाञ्जलि, उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर पुष्पांजलि, उनके कृतित्वों का स्मरण करते हुए बापू के प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिए,....। को प्रस्तुत किया।

एलबीएसएम कॉलेज में आयोजित हुआ कार्यक्रम

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय जमशेदपुर में गांधी एवं शास्त्री जी की जयंती के साथ कॉलेज का स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में परसुडीह थाना प्रभारी राम कुमार वर्मा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में रोटरी क्लब के अनु नारंग उपस्थित रहे। डा अशोक कुमार झा प्राचार्य के साथ अतिथियों ने शास्त्री जी एवं गांधी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया एवं पुष्पांजलि अर्पित किया।

डीसी ने बापू व शास्त्री के चित्र पर माल्यार्पण कर किया नमन

PHOTON NEWS CHAIBASA : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के उपलक्ष पर सोमवार को जिला मुख्यालय में स्थित गांधी मैदान में उपायुक्त अनन्य मित्तल ने बापू की प्रतिमा तथा लाल बहादुर शास्त्री की फोटो पर माल्यार्पण कर उनको नमन किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में उपायुक्त ने शहरी क्षेत्र में स्वच्छता अभियान के दौरान बेहतर कार्य करने वाले सफाई कर्मी, सुपरवाइजर को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में उपस्थित स्कूली बच्चों को संबोधित करते हुए उपायुक्त ने कहा कि आज 2 अक्टूबर को भारत देश के दो महान विभूतियों का जन्म

दिवस है। हम सभी इनके आदर्शों व इनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण कर देश को विकास के पथ पर आगे ले जाएं। अपर उपायुक्त संतोष कुमार सिन्हा, सहायक समाहर्ता श्रुति राज लक्ष्मी, सदर चाईबासा अनुमंडल पदाधिकारी शशीन्द्र कुमार बढ़ाईक, जिला शिक्षा अधीक्षक अभय कुमार शील, प्रभारी पदाधिकारी नजारत शाखा जयंत रंजन, नगर परिषद चाईबासा की कार्यपालक पदाधिकारी प्रतिभा रानी सहित सामाजिक कार्यकर्ता व अन्य उपस्थित रहे।

जीजा के इश्क में पति को मरवाया

हाजीपुर में शादी के पहले से था अफेयर; सिर में मारी थीं 5 गोलियां

वैशाली । तीन दिन पहले ड्यूटी से लौट रहे पंकज कुमार(28) की अपराधियों ने 5 गोली मारकर हत्या कर दी थी। पुलिस ने रविवार को मामले का खुलासा करते हुए बताया कि पंकज की पत्नी रुपा कुमारी का अपने ही जीजा संतोष कुमार अमर से अवैध संबंध चल रहा था। जिसके चलते वह अपने पति को रास्ते से हटाना चाहती थी। जीजा संतोष ने पंकज को डाक के जरिए एक धमकी भरा पत्र भी लिखा था।इस मामले में पुलिस ने मृतक की पत्नी और सास समेत 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने सभी को पूछताछ के बाद जेल भेज दिया है। जीजा संतोष फरार है। संतोष और रुपा ने अन्य लोगों के साथ मिलकर पंकज की हत्या करने का प्लान बनाया। 28 सितंबर को बिस्कुट फैक्ट्री से ड्यूटी से लौटने के दौरान एक बाइक पर सवार दो बदमाशों ने उसकी सिर में 5 गोली मारकर हत्या कर दी। गिरफ्तार आरोपियों के पास से एक मोबाइल भी बरामद किया गया है। पुलिस अधीक्षक रवि रंजन ने बताया कि इस पूरे घटना का सूत्रधार हाजीपुर के गांधी आश्रम का सकल राय का बेटा संतोष कुमार अमर है। उसका कई दिनों से मृतक की पत्नी के साथ अवैध संबंध चल रहा था। पुलिस के मुताबिक, संतोष ने फेक सिम का इस्तेमाल कर कई बार पंकज को जान से मारने की धमकी भी दी थी। डाक के जरिए धमकी भरा पत्र भी भेजा गया था। पुलिस के मुताबिक, संतोष और रुपा ने अन्य बदमाशों के साथ मिलकर मृतक पंकज को बीच से हटाने के लिए इस हत्या की घटना को अंजाम दिया है। अन्य बदमाशों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। इसमें मृतक की सास की भूमिका संदिग्ध है। पुलिस के मुताबिक, घटना के बाद पंकज के परिजनों ने बिदुपुर थाने में प्राथमिक दर्ज कराई थी। घटना को गंभीरता से देखते हुए वैशाली के पुलिस अधीक्षक रवि रंजन ने सदर एसडीपीओ ओम प्रकाश के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में बदमाश पटना जिले के प्रभात कुमार यादव, नगर थाना क्षेत्र के मोहम्मद शब्बीर अनवर, बिदुपुर थाना क्षेत्र जय राय, रुपा की मां और रामनरेश राय की पत्नी चिंता देवी और मृतक की पत्नी रुपा कुमारी शामिल है। पंकज की मां मीणा देवी ने कहा कि बहू को मेरा बेटा पसंद नहीं था। बार-बार कहती थी कि लड़का पुराने जमाने का है, इस जमाने का नहीं है। बेटा देहाती है मैं हाईफाई हूं। मां ने बताया कि पंकज जो भी कमाता था पत्नी को भी खर्च देता और उसी से घर चलता था। पंकज बिहार पुलिस की भी तैयारी कर रहा था। उन लोगों ने मिलकर ही मेरे बेटे को मारा है। मां ये सब कहते हुए फफक-फफक कर रो पड़ी। वैशाली में 28 सितंबर को सुबह 28 साल के पंकज के सिर में 5 गोलियां मारी गईं। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पंकज एक बिस्किट फैक्ट्री में काम करता था। वो नाइट शिफ्ट कर के अपने एक दोस्त के साथ लौट रहा था।

बेगूसराय में गोली मारकर हत्या

बेगूसराय । अपराधियों ने एक बार फिर बड़ी वारदात को अंजाम दिया। यहां एक व्यक्ति को गोली मारकर हत्या कर दी। हत्या के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। वहीं गोली मारकर हत्या की खबर सुनते ही परिजनों में कोहराम मच गया। घटना बरौनी थाना क्षेत्र के बलवाड़ा गांव की है। मृतक की पहचान बलवाड़ा गांव के रहने वाले स्वर्गीय मोहम्मद अयूब का पुत्र मोहम्मद मुनाजिर उर्फ जुम्मन के रूप में की गई है। मृतक की पत्नी ने बताया है कि घर में पति और पत्नी दोनों सोए हुए थे। अचानक वह 2:00 बजे रात में घर से बाहर निकले। तभी अपराधियों ने उन्हें सीने में गोली मारकर हत्या कर दी। गोली की आवाज सुनकर जब तक घर से बाहर निकले तब तक में अपराधी मौके से हथियार लहराते हुए फरार हो गए और मोहम्मद मुनाजिर उर्फ जुम्मन खून से लटपट होकर वहीं पर गिर पड़े मिले। वहीं परिजनों ने आनन फानन में उसे जगह से उठाकर इलाज के लिए सदर अस्पताल लाए जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस घटना के बाद परिजनों के द्वारा बरौनी थाना पुलिस को सूचना दी। मौके पर बरौनी थाने के पुलिस पहुंचकर पूरे मामले की हकीकत में जुटी हुई है। वहीं पुलिस पदाधिकारी जितेंद्र कुमार ने बताया है कि बलवाड़ा में कुछ अपराधियों के द्वारा एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या करने की सूचना मिली थी। फिलहाल पुलिस ने सबको अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बेगूसराय सदर अस्पताल भेज दिया है और आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है। मिली जानकारी के अनुसार अपराधी मोहम्मद मुनाजिर को किस लिए गोली मारकर हत्या की गई है यह स्पष्ट नहीं हो पाया है।

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का 12वां दिन

पटना। पूरे देश में आज का दिन 'स्वच्छ भारत दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है। पटना शहर को स्वच्छ शहरों की सूची में बेहतर स्थान दिलाने के लिए पटना नगर निगम ने कई सारे अभियान शुरू किए थे। ये अभियान सफल भी होते दिख रहे थे, लेकिन सफाईकर्मियों की हड़ताल ने इन सारे कवायदों की धज्जी उड़ा दी है। पटना शायद देश का पहला ऐसा स्मार्ट सिटी होगा, जो 'स्वच्छ भारत दिवस' के दिन गन्दा रहेगा। सड़क पर कचरे फैले हुए है, जिसकी दुर्गन्ध आने-जाने वाले राहगीरों को परेशान कर रही है। नगर विकास एवं आवास के अपर मुख्य सचिव अरुणीश चावला ने कल 'स्वच्छता के लिए श्रमदान' कार्यक्रम के दौरान बताया कि पटना में आधुनिक तरीके से कचरे के निपटान की सुविधा नहीं है। डेढ़ हजार टन कचरे के निपटान के लिए लगभग 500 करोड़ इन्वेस्टमेंट की जरूरत है। इस काम को प्राइवेट पार्टनरशिप मोड में किया जा रहा है। इस तरह का आधुनिक प्लांट विदेश से ही आ सकता है। भारत सरकार के संबंधित विभागों के साथ उसके लिए सहमति हो गई है। इसके लिए डॉक्यूमेंट अंतिम चरण में है। जल्द ही इससे पटना नगर निगम को सहायता मिलेगी। आज से 2-3 साल बाद पटना 100% सेग्रीगेशन, ट्रांसपोर्टेशन, प्रोसेसिंग और डिस्पोजल कर पाएगा। पटना नगर निगम के सफाई कर्मचारियों के हड़ताल का आज बारहवां दिन है। निगम का दावा है कि वैकल्पिक व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है और नगर निगम के कर्मी दिन-रात एक किए हुए हैं, पर इसका असर देखने को नहीं मिल रहा है। वहीं, हड़ताली भी अपनी मांग को लेकर अड़े हुए है। पटना नगर निगम कर्मचारी समन्वय समिति के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश सिंह ने कहा कि महापौर से लेकर स्थायी समिति के सदस्यों को नगर निगम कर्मियों की थोड़ी सी भी चिंता नहीं है। हम मुख्यमंत्री के यहां से वार्ता के लिए बुलावे का इंतजार कर रहे हैं तब तक हड़ताल पर डटे रहेंगे। किसी भी तरह की समस्या या शिकायत पर निगम ने टोल फ्री नंबर 155304 डायल कर सूचना देकर संपर्क करने की बात कही है। इसके अलावा निगम के सफाई कार्य में अगर कोई हड़ताली असामाजिक तत्व बाधा पहुंचाते हैं, तो नगर निगम कर्मी भी 155304 या इमरजेंसी कॉल बॉक्स की सहायता से शिकायत कर सकते हैं। पटना नगर निगम द्वारा विशेष रात्रि अभियान की शुरूआत की गई थी। इस अभियान में पदाधिकारी कर्मचारी और सफाई कर्मचारियों रात में घूम-घूम कर पूरे शहर की सफाई कर रहे हैं। रात 8 बजे से लेकर सुबह 8 बजे तक यह विशेष अभियान आयोजित किया जा रहा है। 12 घंटे तक चलने वाले इस विशेष अभियान के दौरान सभी कार्यपालक पदाधिकारी, सिटी मैनेजर, टास्क फोर्स की टीम को सफाई का निर्देश दिया गया है।

संक्षिप्त डायरी

भाजपा नेता को बाइक सवार अपराधियों ने मारी गोली

नालंदा । बाइक सवार बदमाशों ने सोमवार की सुबह भाजपा नेता को गोलीमार कर जख्मी कर दिया। मामला रहुई थाना क्षेत्र के हवनपुरा गांव के पास की है। जख्मी की पहचान थाना क्षेत्र के देकपुरा गांव निवासी सोनल सिंह (35) के रूप में की गई है। सोनल सिंह भाजपा में रहुई मंडल के महामंत्री के पद पर हैं। गोली सोनल सिंह के पेट में लगी है। भारतीय जनता पार्टी नालंदा के महामंत्री अविनाश प्रसाद ने बताया कि रहुई पुलिस द्वारा उन्हें सूचना मिली कि उनके गांव के सोनल सिंह को अज्ञात बाइक सवार अपराधकर्मियों ने गोली मार दी। सूचना मिलने के बाद वे लोग सदर अस्पताल पहुंचे, जहां पता चला कि सोनल सिंह अपनी पत्नी के साथ बाइक से बाढ़ गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। तभी हवनपुरा गांव के पास बाइक सवार दो अपराधकर्मियों ने उन पर गोली चला दी। गोली उनके पेट में लगी है। सदर अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए उन्हें हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। फिलहाल अपराधियों द्वारा गोली क्यों मारी गई है, इस वजह का पता नहीं चल सका है। वहीं, इस घटना के बाद भाजपा कार्यकताओं में आक्रोश देखा जा रहा है। देकपूरा गांव के सरपंच, मुखिया घटना की जानकारी मिलते ही सदर अस्पताल पहुंच मामले की जानकारी लेने में जुट गए हैं। रहूई थाना अध्यक्ष नंदन कुमार ने बताया कि जख्मी ने खुद फोन कर बताया कि उसे गोली मार दी गई है। इसके बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और सोनल सिंह को बिहार शरीफ सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। फिलहाल पुलिस युवक से फर्द ब्यान लेने के प्रयास में जुटी हुई है। गोली क्यों और किसने चलाई है, इसका पता नहीं चल सका है। पुलिस पूरे मामले की छानबीन में जुट गई है।

बक्सर, बगहा, शेखपुरा, रोहतास में बारिश, 17 जिलों में अलर्ट

पटना। बिहार में दो दिनों तक कई जिलों में भारी बारिश होने का अनुमान है। रोहतास, शेखपुरा, बगहा और बक्सर में सोमवार सुबह हल्की बारिश हुई। मौसम विभाग ने पटना सहित प्रदेश के 17 जिलों में भारी बारिश और बहुत भारी बारिश को लेकर के अलर्ट जारी किया है। इसमें पांच जिले में ऑरेंज और 12 जिले में यलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार सोमवार यानी आज और मंगलवार को प्रदेश के कई जिलों में भारी बारिश होगी। इससे अधिकतम तापमान में तीन से चार डिग्री तक की गिरावट भी दर्ज की जा सकती है। वहीं बुधवार से बारिश की गतिविधियों में कमी आएगी। साथ ही अक्टूबर में अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना जताई है। मौसम विभाग ने कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, पश्चिम चंपारण और बक्सर जिले में बहुत भारी बारिश होने की संभावना है। इसके लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। वहीं पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, सीवान, सारण, भोजपुर, पटना, अरवल, भागलपुर, बांका, जमुई, कटिहार और पूर्णिया भारी बारिश को लेकर यलो अलर्ट जारी किया गया है।

बिहार में राजनीतिक पार्टियां बढ़ती गईः जातियां बंटती गई

अब ठाकुर पर बवाल, जीभ से लेकर गला काटने की धमकी, याद आया रणवीर सेना-लोरिक सेना का दौर

पटना। बिहार में एक शब्द ठाकुर को लेकर नेताओं के बीच जुबानी जंग जारी है। इसे लेकर ठाकुर और ब्राह्मण आमने-सामने हैं। अब तो आम आदमी के बीच भी इसकी चर्चा होने लगी है। गांव की चौपाल से लेकर शहर की गलियों में बस ठाकुर के चर्चे हैं। हालांकि, बिहार की राजनीति के लिए यह लड़ाई कोई नया नहीं है। 1967 के बाद जातीय समीकरण साधने में ऐसे कई प्रयोग किए गए हैं, लेकिन मौजूदा हालत थोड़े अलग हैं। क्योंकि राजनीतिक बयानों में अब जीभ से लेकर गला काटने की धमकी दी जा रही है। इसने 66 साल पहले वाला रणवीर सेना (भूमिहारों के लिए) और लोरिक सेना (यादवों के लिए) का दौर याद दिला दिया है। ऐसा तब हो रहा, जब बिहार में जाति आधारित गणना की रिपोर्ट प्रकाशित होने वाली है। एक्सपर्ट मानते हैं कि बिहार में राजनीतिक पार्टियां बढ़ती गईं और जातियां बंटती गईं। RJD सांसद मनोज झा ने 21 सितंबर को राज्यसभा में ह्यठाकुर का कुआंह्ण कविता क्या पढ़ी, बिहार में बवाल मच गया। एक शब्द ह्यठाकुरह्ण पर ऐसी आग लगी कि पार्टी के ही विधायक चेतन आनंद ने हमला बोल दिया। ओम प्रकाश वाल्मीकि की कविता ने ऐसा हंगामा मचाया कि बाहुबली आनंद मोहन और उनके विधायक बेटे चेतन आनंद ने मोर्चा खोल दिया। आनंद मोहन ने तो यहां तक कह दिया कि अगर वह राज्यसभा में होते तो जीभ खींचकर आसन की ओर उछाल देते। इसके बाद से गला काटने से लेकर ठाकुर की ताकत बताने की होड़ सी लग गई। नेता की बात छोड़ भी दें तो अब आम आदमी के बीच इस मुद्दे को लेकर चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कई ठाकुर और ब्राह्मण जाति के लोग आमने-सामने आ गए हैं। मतलब साफ है, नेताओं के शीत युद्ध का असर अब समाज के लोगों पर दिखना शुरू हो गया है। बिहार के वरिष्ठ पत्रकार लव कुमार मिश्रा बताते हैं कि साल 1967 के पूर्व तक बिहार में जाति को लेकर इतनी राजनीति नहीं थी। जब बिहार में पहली बार नॉन कांग्रेस में महामाया प्रसाद सिन्हा ने सरकार बनाई तो कपूर्री ठाकुर डिप्टी सीएम के साथ शिक्षा मंत्री बनाए गए। यही वह दौर था, जब बिहार की राजनीति में जातीय समीकरण सामने आया। इस दौर में सबसे पहले यादव लोगों को साधने की कोशिश की गई। राम लखन सिंह यादव तब यादवों के सबसे बड़े नेता हुआ करते थे। यही वह दौर था, जब यादव जाति को लेकर शोषित दल बना था। इसमें गया के जगदेव प्रसाद का अहम रोल था। कुशवाहा और कोइरी जाति भी यही से सामने आई। यह दौर जातीय समीकरण को सामने लाने का विशेष काल कहा जा सकता है। जाति के नाम पर हुए बवाल के बाद मंडल कमीशन काला अध्याय के रूप में जाना गया। बिहार के लड़कों ने दिल्ली में सबसे पहले विरोध की आग लगाई थी। बिहार के हजारों छात्र-छात्राओं ने दिल्ली में लीड कर डरावना विरोध-प्रदर्शन किया। इसका बिहार में बड़ा असर हुआ था। यह काल जातीय संघर्ष का काफी घिनौना दौर था। यह समय क्लाइमेक्स का था। बिहार में भूमिहार और यादव, दो जातियां अधिक आमने-सामने रही हैं। रणवीर सेना भूमिहारों के लिए बनी थी, जबकि यादवों के लिए लोरिक सेना बनाई गई थी। हालांकि, पहले जो झगड़े होते थे, वह नक्सलिज्म के नाम पर होते थे। नक्सली जमीन कब्जा करते थे। यह ऐसा दौर था कि उस समय अच्छे-अच्छे घरों के लोग नक्सली बन गए थे। साउथ के मूल निवासी जहानाबाद के एक एमबीबीएस डॉक्टर भी नक्सलियों के बड़े नेता बनकर सामने आए। लव कुमार मिश्रा बताते हैं- 1967 से पहले जाति को लेकर जो विवाद होता था, वह अलग तरह का होता था। पहले जैसे अनुग्रह नरायण सिंह और श्री कृष्ण सिंह का दौर था। यह अलग-अलग जातियों की राजनीति करते थे, लेकिन इसका असर पब्लिक में नहीं था। रोचक बात तो यह है कि बिहार में चार या पांच यूनिवर्सिटी हुआ करती थी। यह भी जातियों के हिसाब से बंट गई थी। वीसी जातीय आधार पर तैनात किए जाते थे। पटना, मगध, बिहार यूनिवर्सिटी भागलपुर और रांची यूनिवर्सिटी थी। यह पूरी तरह से कास्ट की लाइन पर बंट चुकी

थी। जैसे मगध में राजपूतों का कब्जा, पटना यूनिवर्सिटी में लाला जी होंगे व बंगाली लोग होंगे। बिहार यूनिवर्सिटी भूमिहारों की होगी। इस तरह जाति के हिसाब से सब सेट होता था। रांची के लिए आदिवासी से लेकर अन्य लोग थे। विश्वविद्यालयों का डिस्ट्रीब्यूशन समाज को जाति में बांटने वाला ही था। पुराने जर्नलिस्ट बताते हैं- 1967 में जब शोषित दल और संसोफा व प्रसोफा जब बना तब जाति का मुद्दा आम हो गया। यह पिछड़ों के लिए था, अपर कास्ट के लिए कांग्रेस और जनसंघ तो था ही। जर्नलिस्ट लव कुमार मिश्रा बताते हैं कि राजनीति में नवजागरण 1967 में यादवों के बीच में सबसे पहले आया। बाद में कोइरी, कुर्मी का हुआ। साल 1993 में नीतीश कुमार जब लालू से अलग हुए तो गांधी मैदान में कुर्मी सम्मेलन बुलाया था। इसमें मुंबई से छगन लाल भुजवल भी आए थे। पहला सम्मेलन ऐसा हुआ था, जो कुर्मियों को अपनी आइडेंटिटी बताने के लिए था। ये कुर्मियों को एक करने के लिए लगाया गया बड़ा दांव था। इसके पहले यादव वर्ग संगठित हो चुके थे। बिहार में वह दौर भी आया जब अफसरों की तैनाती में जाति का समीकरण देखा गया। जर्नलिस्ट लव कुमार मिश्रा ने 1990 की एक घटना का जिक्र करते हुए कहा- एक बार बिस्कोमान में इंटरव्यू चल रहा था। एमडी ने वहां मौजूद कैंडीडेट्स से सवाल किया, आप कौन सरनेम के ठाकुर हो, दामोदर वाले हैं या कपूर्री वाले हैं? इस सवाल का जवाब कैंडिडेंट्स को क्लियर करना पड़ा था। उन्होंने बताया कि इसके बाद एक ऐसा दौर भी आया जब अफसरों की पोस्टिंग भी जाति को ध्यान में रखकर की जाने लगी। लालू यादव के समय में इसका चलन काफी तेजी से बढ़ गया। जगन्नाथ मिश्रा जब सीएम थे, तो उनका बस एक ही टारगेट होता था, मैथिल ब्राह्मण होना चाहिए। जगन्नाथ मिश्रा के समय में अमूमन डीएम, एसपी मैथिल ब्राह्मण ही हुआ करते थे। लालू यादव सत्ता में आए तो ये यादव पर डायवर्ट हो गया। नीतीश सरकार में भी कुर्मी जाति के अफसरों की तैनाती का आरोप लगा। नीतीश कुमार जब सीएम बने तो बिहार के बाहर से आईएएस, आईपीएस और राजस्व सर्विस वाले कुर्मी जाति के अफसरों को बिहार लाया गया। अरुणाचल, सिक्किम से लेकर देश के अलग-अलग राज्यों से ऑफिसर्स को बिहार में जाति देखकर बुलाया जाता था। बिहार के एक आईएएस जो रिटायर्ड होने के बाद राजनीति में सक्रिय हुए, उनको ऐसी जाति वाले अफसरों को खोजकर लाने की जिम्मेदारी दी गई थी। हालांकि, बिहार में अन्य चीफ मिनिस्टर रहे, जैसे भोला, रामशंकर दास शास्त्री, यह लोग दलितों के नहीं बन पाए। इस फंडे पर वह काम ही नहीं कर पाए। साल 1967 से पहले भी कभी नहीं ऐसा हुआ, कपूर्री ठाकुर, महामाया बाबू ने ऐसा नहीं किया। श्री बाबू भूमिहार थे, लेकिन वह भी ऐसा नहीं किए। सीनियर जर्नलिस्ट लव कुमार मिश्रा बताते हैं- अफसर भी अब कास्टिज्म की बात कर रहे हैं। सचिवालय से लेकर जिलों में भी अफसरों को यही ट्रेंड है। यहां तक की थानों पर पुलिस में भी कास्टिज्म खूब देखने को मिलता है। वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण बागी बताते हैं कि जातियां तो अनंत काल से हैं, लेकिन राजनेताओं ने वोट के लिए समाज को जाति के आधार पर बांट दिया। इस कारण से जाति के आधार पर गहरा विभाजन हो गया। जाति के आधार पर टिकट बांटना और सीएम तक चुना जाने लगा। बिहार में उपजातियों के आधार पर विभाजन हो रहा है। इससे बिहार में जातीय संघर्ष की स्थिति बन रही है। जाति तोड़ों आंदोलन भी चला, समाजवादी जो जातियों के विभाजन के खिलाफ लड़ाई लड़े वहीं अब जातियों को बांटने में लगे हैं। एएन कॉलेज के रिटायर्ड प्रोफेसर और जाति व्यवस्था पर अध्ययन करने वाले डॉ. देवेंद्र सिंह बताते हैं- ऐसे बयान राजनीतिक लाभ के लिए होते हैं। इससे समाज के प्रबुद्ध वर्ग पर तो असर नहीं पड़ता है, लेकिन जातियों को लेकर कट्टर लोगों पर असर डाला जा सकता है। प्रोफेसर और रिसर्चर डॉ. देवेंद्र सिंह का मानना है कि पहले भारत एक समृद्ध देश हुआ करता था। गांव का देश हुआ करता था। जहां हर कोई एक-दूसरे पर आश्रित रहते थे। डॉ. देवेंद्र सिंह बताते हैं कि नेताओं की जातीय राजनीति अंग्रेजों की तरह है। अध्ययन में जो बातें सामने आई हैं उसके मुताबिक, जब अंग्रेज भारत आए तो उन्होंने देखा कि यहां तो लोग एक-दूसरे पर आश्रित होकर अपना जीवन जी रहे हैं। फिर अंग्रेजों ने भारत के लोगों को उनकी जाति पर प्रहार कर अलग करना शुरू किया। इसके बाद जब देश आजाद हुआ तो यह चीजें समाप्त हो रही थी। राष्ट्रीय राजपूत करनी सेना के कार्यकारी अध्यक्ष मनीष कुमार सिंह बताते हैं कि जातियों पर पॉलिटिक्स ठीक नहीं है। जब हमारे देश में 535 रियासत थी, उस वक्त सभी जाति धर्म को एक साथ एक जुट रखा जाता था। जब रियासत को खत्म किया गया तो उसका मुख्य मकसद यही था कि सभी को एक प्लेटफार्म मिले। समाज में सब की हिस्सेदारी एक समान और सभी एक नजर से देखे जा सकें, लेकिन जैसे-जैसे राजनीतिक पार्टियों का गठन होता गया वह उसी प्रकार जाति का भेद बढ़ाती चली गई। राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा के बिहार अध्यक्ष और राष्ट्रीय संयोजक आशुतोष मिश्रा भी मानते हैं कि नेताओं के ऐसे बयान समाज के लिए घातक है। जाति को लेकर राजनीतिक पार्टियां आए दिन कुछ न कुछ मतभेद पैदा करने वाले बयान जारी करती हैं। इसका उद्देश्य ही समाज में जातियों को लेकर मनमुटाव पैदा करना होता है। नेताओं के ऐसे बयानों को हमे नजर अंदाज करना होगा। हालांकि, शिक्षित समाज में अब ऐसा नहीं है कि नेताओं के ऐसे बयान से देश में गृह युद्ध की स्थिति बन जाए।

क्यों बापू पसंद करते थे विद्यार्थियों से मिलना

महात्मा गांधी को विद्यार्थियों से मिलना-जुलना और उनसे बातें करना पसंद था। वे स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में भी अकसर जाते थे। वे एक बार मास्टर जी की भी भूमिका में आ गए थे। वे पहली बार 12 मार्च 1915 को राजधानी दिल्ली आए तो सेंट स्टीफंस कॉलेज में ठहरे। वे वहां पर छात्रों और फेक्ल्टी से भी मिले। उनके साथ सामयिक सवालों पर लंबी चचाएं की। दरअसल उन्हें दिल्ली प्रवास के दौरान सेंट स्टीफंस कॉलेज में रुकने का आग्रह उनके करीबी सहयोगी दीनबंधु सी.एफ.एंड्रयूज ने किया था। दीनबंधु एंड्रयूज उसी दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी से जुड़े हुए थे जिसने सेंट स्टीफंस कॉलेज और सेंट स्टीफंस अस्पताल की स्थापना की थी। यहां के छात्रों पर गांधी जी और एंड्रयूज का असर न हो यह नहीं हो सकता। यहां की दीवारों पर अभी भी गांधीजी और एंड्रयूज के चित्र टंगे हैं। सेंट स्टीफंस कॉलेज की स्थापना दिल्ली में ब्रदरहुड ऑफ द एसेंनडेंड क्राइस्ट ने सन 1877 में हुई थी। अब इसे दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी कहा जाता है। दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी के फादर सोलोमन बताते हैं कि सेंट स्टीफंस कॉलेज को भले ही ब्रिटेन की एक मिशनरी ने शुरू किया पर इसकी भारत तथा यहां के लोगों के प्रति निष्ठा और समर्पण असंदिग्ध रहा। दीनबंधु एंड्रयूज ब्रिटिश नागरिक होते हुए भी भारत की आजादी के प्रबल पक्षधर थे। इसी से अंदाजा लग जाएगा कि सेंट स्टीफंस कॉलेज को खोलने वाली संस्था का मूल चरित्र किस तरह का है। गांधी जी यहां 1918 तक रहे । उन्हें यहां पर ब्रजकृष्ण चांदीवाला नाम के एक छात्र मिले जो आगे चलकर उनके पुत्रवत हो गए। उन्होंने ही गांधी जी की मृत्यु के बाद अंतिम बार स्नान करवाया था। गांधीजी का काशी से भी गहरा लगाव था। वे अपने जीवनकाल में 12 बार काशी आए। अपना पहला राजनीतिक उद्बोधन गांधीजी ने 5 फरवरी 1916 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में दिया था। सेंट्रल हिंदू कॉलेज परिसर में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का स्थापना समारोह मनाया जा रहा था। साथ में बीएचयू के संस्थापक पं. मदन मोहन मालवीय, एनी बेसेंट, दरभंगा के महाराजा रामेश्वर सिंह के साथ कई रियासतों के राजा वहां मौजूद थे। गुजराती वेशभूषा (धोती, पगड़ी और लाठी) में आए गांधीजी ने मंच से लोगों के सामने तीन बातें रखी थीं। गांधीजी ने कहा था- देश की जनता, छात्र और आप सभी भारत का स्वराज कैसा चाहते हैं? कांग्रेस और मुस्लिम लीग के लोग स्वराज को लेकर क्या सोचते हैं, यह स्पष्ट होना चाहिए? इसी बीच गांधीजी की नजर वहां मौजूद राजाओं के आभूषणों पर पड़ी। उन्होंने कहा- अब समझ में आया कि हमारा देश सोने की चिड़िया से गरीब कैसे हो गया? आप सभी को अपने स्वर्ण जड़ित आभूषणों को बेचकर देश के जनता की गरीबी दूर करनी चाहिए। इस बीच,यह जानकारी भी कम लोगों को है कि गांधी जी मास्टर जी के भी भूमिका में रहे। राजधानी में उनकी पाठशाला चलती थी। वे अपने छात्रों को अंग्रेजी और हिन्दी पढ़ाते थे। उनकी कक्षाओं में सिर्फ बच्चे ही नहीं आते थे। उसमें बड़े-बुजुर्ग भी रहते थे। वे राजधानी के वाल्मीकि मंदिर परिसर में 214 दिन रहे। 1 अप्रैल 1946 से 10 जून,1947 तक। वे शाम के वक्त मंदिर से सटी वाल्मीकि बस्ती में रहने वाले परिवारों के बच्चों को पढ़ाते थे। उनकी पाठशाला में खासी भीड़ हो जाती थी। गांधी अपने उन विद्यार्थियों को फटकार भी लगा देते थे, जो कक्षा में साफ-सुथरे ढंग से तैयार हो कर नहीं आते थे। वे स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते थे। वे मानते थे कि स्वच्छ रहे बिना आप शुद्ध ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते। यह संयोग ही है कि इसी मंदिर से सटी वाल्मीकि बस्ती से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की भी शुरूआत की थी। बहरहाल वह कमरा जहां पर बापू पढ़ाते थे, अब भी पहले की तरह ही बना हुआ है। इधर एक चित्र रखा है, जिसमें कुछ बच्चे उनके पैरों से लिपटे नजर आते हैं। आपको इस तरह का चित्र शायद ही कहीं देखने को मिले। बापू की कोशिश रहती थी कि जिन्हें कतई लिखना-पढ़ना नहीं आता वे भी कुछ लिख-पढ़ सकें। इस वाल्मीकि मंदिर में बापू से विचार-विमर्श करने के लिए पंडित नेहरू से लेकर सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान भी आते थे। सीमांत गांधी यहां बापू के साथ कई बार ठहरे भी थे। अब भी इधर बापू के कक्ष के दर्शन करने के लिए देखने वाले आते रहते हैं। वाल्मीकि समाज की तरफ से प्रयास हो रहे हैं कि इधर गांधी शोध केन्द्र की स्थापना हो जाए। गांधी जी की संभवतः महानतम जीवनी ह्यद लाइफ ऑफ महात्मा गांधीह्ल के लेखक लुई फिशर भी उनसे वाल्मीकि मंदिर में ही मिलते थे। वे 25 जून,1946 को दिल्ली आए तो यहां पर बापू से मिलने पहुंचे थे। उस समय इधर प्रार्थना सभा की तैयारियां चल रही थीं। ह्यद लाइफ ऑफ महात्मा गांधीह्ल को आधार बनाकर ही फिल्म गांधी का निर्माण हुआ था। यही नहीं, गांधी जी के आशीर्वाद से ही जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी स्थापित हुई। वे इसके पहले करोल बाग और फिर ओखला के परिसरों में कई बार गए भी। महात्मा गांधी ने अगस्त 1920 में, असहयोग आंदोलन का ऐलान करते हुए भारतवासियों से ब्रिटिश शैक्षणिक व्यवस्था और संस्थानों का बहिष्कार करने का आह्वान किया था। गांधी जी के आह्वान पर, उस समय अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कुछ अध्यापकों और छात्रों ने 29 अक्टूबर 1920 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया की बुनियाद रखी। बाद में जामिया, अलीगढ़ से दिल्ली स्थानांतरित हो गया।

सनातन धर्म है गांधी के हिंद स्वराज का मूल

ANALYSIS

✍ प्रो.रजनीश कुमार शुक्ल

गांधी की हिंद स्वराज की अवधारणा एक राजनैतिक दर्शन न हो करके संपूर्ण संस्कृति को अभिलक्षित, युग की जरूरत के अनुरूप निर्मित और प्रतिपादित संस्कृति दर्शन है। आधुनिकता के कथित खाते में और व्यक्ति राज्य के बीच अन्य सभी सहज यात्रा संस्थाओं के समापन की घोषणा को उत्तर आधुनिकता कहा जा रहा है। किंतु विश्व के वैचारिक इतिहास में गांधी पहले उत्तर आधुनिक हैं जिन्होंने आधुनिक सभ्यता को युद्ध और यांत्रिकता से उपजी हुई राक्षसी सभ्यता कहा था। इसके खात्मे की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए समकालीन उत्तर आधुनिकता के विपरीत वे एक ऐसी देवी सभ्यता के सृजन का रास्ता हिंद स्वराज के माध्यम से संपूर्ण विश्व को दिखाते हैं जिसमें यांत्रिकता और आधुनिकता की आपाधापी में त्रस्त मनुष्य और वसुधा दोनों को सुख और मुक्ति की प्राप्ति हो सके। यद्यपि कि गांधी के जीवन काल में हिंद स्वराज पर कोई अमल न हुआ जिसको गांधी ने स्वयं भी स्वीकार किया है तथापि गांधी इस पर अटल है।

महात्मा गांधी की पहचान विश्व मानवता को प्राण देने के लिए निरंतर संघर्षरत एक ऋषि और राजनेता की है। गांधी के समस्त तप को हिंद स्वराज से अलग होकर के नहीं समझा जा सकता है। वस्तुत गांधी की छोटी किताब धरती पर रामराज्य लाने की अवधारणात्मक प्रस्तुति है। यह पश्चिमी जीवन सृष्टि के प्रतिकार में एक ऐसी सनातन पद्धति का प्रस्ताव है जिसका उद्देश्य लोक कल्याणकारी राज और समाज दोनों ही की निर्मिति है। गांधी की हिंद स्वराज की अवधारणा एक राजनैतिक दर्शन न हो करके संपूर्ण संस्कृति को अभिलक्षित, युग की जरूरत के अनुरूप निर्मित और प्रतिपादित संस्कृति दर्शन है। आधुनिकता के कथित खाते में और व्यक्ति राज्य के बीच अन्य सभी सहज यात्रा संस्थाओं के समापन की घोषणा को उत्तर आधुनिकता कहा जा रहा है। किंतु विश्व के वैचारिक इतिहास में गांधी पहले उत्तर आधुनिक हैं जिन्होंने आधुनिक सभ्यता को युद्ध और यांत्रिकता से उपजी हुई राक्षसी सभ्यता कहा था। इसके खात्मे की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए समकालीन उत्तर आधुनिकता के विपरीत वे एक ऐसी देवी सभ्यता के सृजन का रास्ता हिंद स्वराज के माध्यम से संपूर्ण विश्व को दिखाते हैं जिसमें यांत्रिकता और आधुनिकता की आपाधापी में त्रस्त मनुष्य और वसुधा दोनों को सुख और मुक्ति की प्राप्ति हो सके। यद्यपि कि गांधी के जीवन काल में हिंद स्वराज पर कोई अमल न हुआ जिसको गांधी ने स्वयं भी स्वीकार किया है तथापि गांधी इस पर अटल है। उनका विश्वास था कि भारत जब राजनीतिक आजादी प्राप्त कर लेगा तो हिंद स्वराज के अनुरूप सभ्यता के निर्माण में सार्थक रूप

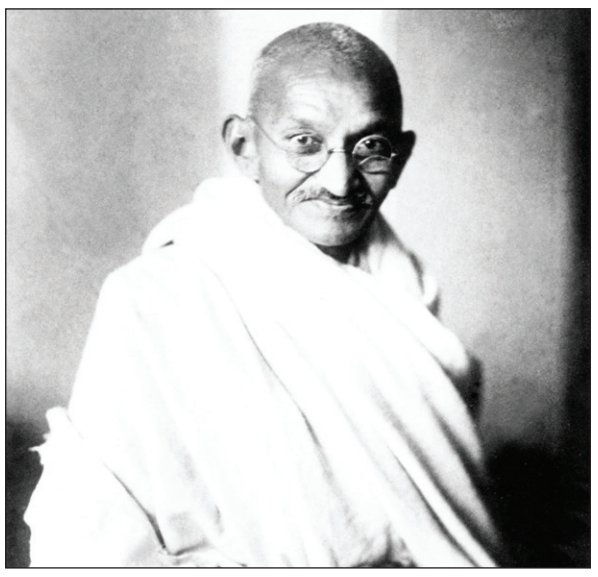

से प्रगति होगी। किंतु गांधी के बाद आजाद भारत में उन्हें चित्रों एवं श्रद्धांजलि तक सीमित कर दिया गया। लोक निर्मिति का जो यत्न भारत की सनातन सभ्यता तथा रामराज्य के आलोक में होना चाहिए था वह नहीं हो सका। गांधी के विचार को भारतीय व्यवस्था में उतारने के स्थान पर गांधी दर्शन और हिंदू दर्शन के बीच विरोध को रेखांकित कर वामपंथी यांत्रिक समाज और सभ्यता की निर्मित के प्रयास ही सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा था। नकल पर आधारित नगरीकरण, औद्योगिकरण, राज्य का व्यक्ति जीवन पर नियंत्रण तथा पूंजीवादी साम्यवाद के शंकर व्यवस्था में भारतीय समाज जीवन को अनेक प्रकार की विसंगतियों से भर दिया और विभ्रम यहां तक हो गया कि भारत अपने मूल को भूल गया। दक्षिण अफ्रीका से लेकर भारत तक गांधी के प्रयास केवल नागरिक स्वतंत्रता सामान्य पर केंद्रित आजादी के आंदोलन के प्रयास नहीं है। अपितु अपने समस्त यत्न और आंदोलन के द्वारा वे एक ऐसे धर्म राज्य की कल्पना करते हैं जिसमें व्यक्ति जीवन और राष्ट्र जीवन दोनों में अहिंसा और सत्य आचार का केंद्रीय तत्व बने। अहिंसा और सत्य को हिंद स्वराज की प्राप्ति के एक मात्र रास्ते के रूप मान्य करने का गांधी विचार सनातन धर्म है ही निःसृत है। गांधी उन्ही सनातन मूल्यों को हिंदू स्वराज या नई विश्व व्यवस्था की निमार्ता के मौलिक तत्वों के रूप में स्वीकार करते हैं जो सनातन धर्म में धर्म के लक्षण के रूप में प्रतिपादित किया गया है। सत्य, अहिंसा, स्वच्छता,अपरिग्रह अस्तेय, अनसक्ति आदि जो गांधी मूल्य के रूप में ख्यात है वे सब सनातन धर्म ही है। यह सर्वज्ञात है कि गांधी आस्था से वैष्णो थे और भागवत की परंपरा में प्राप्त सत्यं परम धीमहि की अवधारणा को ही सर्वत्र धर्म और नीति के रूप में प्रतिष्ठित करने का यंत्र आजीवन करते रहे। गांधी के एकादशी व्रत सत्य, अहिंसा, परिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि की मूल भित्ति सनातन ही है। गांधी का धर्म इस दृष्टि से भी सनातन धर्म की निरंतरता ही है कि इसमें आत्मा पर बहुत बल दिया गया है। आत्मशोधन, आत्म परिष्कार आत्मबोध के अंतर इनका विस्तार समाज राष्ट्र और विश्व तक करना ही गांधी का धार्मिक यत्न है। व्यक्ति के जीवन में इन मूल्यों की स्वीकारता धरती को धर्म राज्य ऐश्वर्या राज्य के रूप में परिवर्तित कर सकता है यह गांधी का ग्रह विश्वास और उन्हें इसकी प्रेरणा जहां श्रीमद् भागवत से प्राप्त होती है वहीं इसका व्यावहारिक स्वरूप उन्हें गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस में दिखाई देता है। रामराज्य की स्थापना का स्वप्न दैहिक, दैविक और भौतिक ताप से मुक्ति प्राप्त करना मात्र ही नहीं है अपितु एक ऐसी विश्व व्यवस्था की स्थापना है जिसमें सभी जन धरती की समस्त उपलब्धियों का एक समान उपयोग कर सकें। सब की जरूरतें पूरी हों किंतु किसी में अधिकाधिक प्राप्त करने का लालच ना रहे। हिंद स्वराज में गांधी सभ्यता और असभ्यता का भेद नीति धर्म के आधार पर करते हुए स्पष्ट रूप से कहते हैं कि सभ्यता आचार व्यवहार की वह रीति है जिसमें मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करें। गांधी की सनातन दृष्टि में एक परिष्कारपरक निरंतरता है जिसको इंगित करते हुए वह कहते हैं कि काल के विविध आघातों से इसमें दोष आए हैं किंतु यह दोष भारत की पुरानी सभ्यता के दोष नहीं है। बल्कि हमारी सभ्यता में इन दोषों को दूर करने के प्रयत्न सदा होते रहे हैं और होते रहेंगे। गांधी के चिंतन के आलोक में सनातन के खात्मे और और मूलोच्छेद का आह्वान करने वालों को यह कहा जा सकता है कि यह देश गांधी और बुद्ध का देश है और सभ्यता सत्य अहिंसा और नीति पर आधारित है वहीं भारत का धर्म है और यह सनातन धर्म ही है। 1909 में ही गांधी इस प्रकार की पूर्ति वालों को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि हिंदुस्तान का हित चाहने वालों को चाहिए की इस तत्व को समझकर, इसमें श्रद्धा रखकर जैसे बच्चा मां की छाती से चिपका रहता है वैसे ही अपनी पुरानी सभ्यता से चिपके रहें। गांधी की यह दृष्टि सनातन को आवश्यक परिष्कारपूर्वक निरंतर बनाए रखने और विकसित करने की दृष्टि है। आचार संबंधी व्यवस्थाओं को गांधी ने भारत की सनातन सभ्यता दृष्टि की विशेषता माना था। यहां मतभेद का होना आवश्यक किंतु मतभेदों को चर्चा वार्ता एवं एक दूसरे की समझ विकसित कर सनातन धर्म मूल्य के आधार पर शमित करना ही सभ्यता धर्म है। यही धर्म सनातन है और सभ्यता धर्म का युगानुरूप प्रकटीकरण है। प्रकटीकरण के साधनों के बदलने से मूल तत्व नहीं बदलता है। मूल तत्व को समाप्त कर भारत को नहीं बचाया जा सकता है। इसीलिए गांधी सनातन धर्म दृष्टि के परिष्कारपूर्वक उसे जीवन में उतारते हुए भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को सच्चे स्वराज की स्थापना तक अनवरत चलते रहने की बात करते हैं। इसलिए भारत को राजनीतिक आजादी प्राप्त होने और अंग्रेजों के चले जाने के बाद अंग्रेजीयत अर्थात पश्चिमी सभ्यता दृष्टि के खात्मे में की भी बात गांधी कहते हैं और स्पष्ट रूप से यह घोषित करते हैं कि हिंदुस्तान का सही स्वराज उसका स्वधर्म पर खड़ा होना है। जो राजनीतिक उपनिवेश से मुक्ति तक सीमित नहीं है अपितु मानसिक स्वराज, वैचारिक स्वराज की प्राप्ति और उसके माध्यम से धमार्धारित राष्ट्र और समाज के निर्माण में पूर्णता को प्राप्त करता है।

लेखक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के निवर्तमान कुलपति एवं दर्शनशास्त्री हैं।

अहिंसा रूपी विद्रोह से महान बने थे महात्मा गांधी !

दक्षिण अफ्रीका का पीटरमारित्जबर्ग रेलवे स्टेशन का वह खाली प्लेटफॉर्म, जो 19वीं सदी की विक्टोरियन स्टाइल की लाल ईंटों वाली इमारत का भाग है, उसकी जंग खा रही जालियां और लकड़ी की बनी टिकट खिड़की, आज भी उस युग की याद दिलाता है, जिस युग मे भारतीय बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी को स्वयं में परिवर्तन करने का अवसर मिला । इसी परिवर्तन ने उनमें प्रतिवाद की शक्ति पैदा की और उन्हें अहिंसा का बेताज बादशाह बनाया। पीटरमारित्जबर्ग नाम के इस मामूली से रेलवे स्टेशन को देखकर लगता ही नहीं कि ये वह स्थान है, जिसने भारत को बदल डाला और दुनिया के इतिहास में एक नया स्वर्णिम पन्ना जोड़ दिया। यह घटना 7 जून, 1893 की है। उस समय युवा बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी रेलगाड़ी से डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे। वे अपने मुवक्किल अब्दुल्लाह के काम से वहां जा रहे थे। जब उनकी ट्रेन पीटरमारित्जबर्ग पर रुकी, तो ट्रेन के कंडक्टर ने उन्हें फर्स्ट क्लास के डिब्बे से निकल जाने को कहा। उस दौरान दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन का पहला दर्जा गोरे लोगों के लिए रिजर्व हुआ करता था। ट्रेन के अंग्रेज कंडक्टर ने गांधी को निचले दर्जे के यात्रियों के डब्बे में जाने को कहा, जब गांधी ने कंडक्टर को अपना पहले दर्जे का टिकट दिखाया, तो भी वह नहीं माना और मोहनदास करमचंद गांधी को बेइज्जत कर के ट्रेन से धक्का देकर जबरदस्ती उतार दिया।पीटरमारित्जबर्ग के प्लेटफॉर्म पर आज भी लगी एक तख्ती ठीक उस जगह को बताती है, जहां पर गांधी जी को ट्रेन से धक्का देकर उतारा गया था। तख्ती पर लिखा है कि, 'उस घटना ने महात्मा गांधी की जिंदगी का रुख मोड़ दिया था।' महात्मा गांधी ने ट्रेन से उतार देने पर वह सर्द रात पीटरमारित्जबर्ग के वेटिंग रूम में गुजारी थी, जहां पर मौसम से बचने के लिए कोई इंतजाम नहीं था।महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में उक्त घटना का उल्लेख करते हुए , 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' में लिखा है कि, 'मेरे संदूक में मेरा ओवरकोट भी रखा था, लेकिन मैंने इस डर से अपना ओवरकोट नहीं मांगा कि कहीं मुझे फिर से बेइज्ज न किया जाए।' महात्मा गांधी बंबई से सन 1893 में वकालत करने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीय मूल के एक कारोबारी की कंपनी के साथ एक साल का वकालत के लिए करार किया था। ये कंपनी ट्रांसवाल इलाके में थी। ट्रांसवाल दक्षिण अफ्रीका का वह इलाका था, जहां 17वीं सदी में डच मूल के लोगों ने आकर कब्जा कर लिया था। ब्रिटेन ने ट्रांसवाल के दक्षिण में स्थित केप कॉलोनी को हॉलैंड के उपनिवेशवादियों से छीन लिया था, जिसके बाद वह मजबूर हो गए कि यहां आकर बस गए थे। सन 1860 में भारत सरकार के साथ हुए एक करार के तहत ट्रांसवाल की सरकार ने वहां भारतीयों को इस शर्त पर आकर बसने में सहयोग करने का वादा किया, कि भारतीय मूल के लोगों को वहां के गन्ने के खेतों में बंधुआ मजदूरी करनी होगी। मजदूरी का समय गुजार लेने पर भी भारतीय मूल के लोगों को समाज के अन्य वर्गों से मेलजोल करने नहीं दिया जाता था। उन्हें बाहरी माना जाता था। उस समय गोरों की अल्पसंख्यक सरकार, भारतीयों पर सबसे ज्यादा टैक्स लगाती थी। इसी कारण दक्षिण अफ्रीका पहुंचने पर महात्मा गांधी को भी नस्लीय भेदभाव का शिकार होना पड़ा था। प्रिटोरिया जाने के दौरान यात्रा में पहले भी गांधी जी के साथ एक घटना डरबन में हुई थी। एक अदालत के जज ने उनसे पगड़ी उतारने को कहा था, जिसपर गांधी जी बिना पगड़ी उतारे अदालत से बाहर आ गए थे। लेकिन गांधी जी के जीवन में व्यापक बदलाव पीटरमारित्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर हुई घटना के बाद ही आया। तब महात्मा गांधी ने फैसला किया था कि वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ रंगभेद के खिलाफ लड़ेंगे। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी ने लिखा भी है कि, 'ऐसे मौके पर अपनी जिम्मेदारी निभाने के बजाय भारत लौटना कायरता होगी, यह रंगभेद की गंभीर बीमारी के लक्षण थे। उन्होंने तय किया था कि इस रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाकर लोगों को रंगभेद की बीमारी से बचाने के लिए उन्हें कोशिश तो करनी ही चाहिए।' शाइनी ब्राइट कहते हैं कि, 'महात्मा गांधी के लिए ये मौका ज्ञान प्राप्त करने का था। इससे पहले वह एक शांत और कमजोर इंसान थे, 'पीटरमारित्जबर्ग की घटना के बाद गांधी जी ने भेदभाव के आगे घुटने टेकने से इनकार कर दिया। वे शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीके से रंगभेदी नीतियों के खिलाफ आंदोलन करने लगे थे। उन्होंने हड़ताल, विरोध-प्रदर्शन और धरनों के जरिए वोटिंग और काम करने में रंगभेद के खिलाफ आवाज बुलंद की, महात्मा गांधी को यकीन था कि दक्षिण अफ्रीका में रहकर ही उन्हें रंगभेद के सबसे खौफनाक चेहरे को देखने का मौका मिल सकता था। तभी वे इसका मुकाबला कर उस पर जीत हासिल कर सकते थे। दक्षिण अफ्रीका में अपने तजुर्बे के आधार पर ही गांधी जी ने अहिंसा के हथियार सत्याग्रह की शुरूआत की थी, जिसमें अहिंसक तरीकों से विरोध कर जीत हासिल करने की कोशिश होती थी। ताकि संघर्ष के दौरान दोनों पक्षों के बीच सौहार्द बना रहे। सन1907 में जब ट्रांसवाल की सरकार ने एशियाटिक लॉ अमेंडमेंट एक्ट बनाया तो गांधी जी ने इसके खिलाफ अहिंसक आंदोलन छेड़ दिया था। इस कानून के तहत भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में अपना रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य कर दिया गया था। आंदोलन के दौरान गांधी को कई बार जेल जाना पड़ा था। लेकिन, आखिर में वह गोरों की सरकार से समझौता कराने में कामयाब हो गए थे। सन 1914 में इंडियन रिलीफ एक्ट पास कर के भारतीयों पर अलग से लगने वाला टैक्स भी खत्म किया गया।

Social Media Corner

सच के हक में...

चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक श्री सांवलिया सेठ मंदिर में दर्शन-पूजन कर अभिभूत हूं। यहां मैंने राजस्थान के अपने परिवारजनों की सुख-समृद्धि की कामना की।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

खेल के क्षेत्र में आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं। आज रांची में मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम का औचक निरीक्षण कर उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए। रांची स्थित इस स्टेडियम में अंतरराष्ट्रीय स्तर का एस्ट्रोटर्फ लगाया है जहां देश में पहली बार आयोजित होने वाला एशियन वीमेन हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी खेला जाएगा।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

गांधी जयंती पर मेरे विधायक कार्यालय से संचालित श्रीबालाजी अन्नपूर्णा भोजनालय में जरूरतमंदों को 5 में भरपेट भोजन योजना के तहत पूड़ी, सब्जी,अचार और साथ में मिठाई परोसा गया। रविवार छोड़ अन्य सभी दिन चावल, दाल, सब्जी, अचार परोसा जाता है। शनिवार को खिचड़ी खिलाई जाती है।

(विधायक सरयू राय के ट्विटर अकाउंट से)

अमृतकाल में महात्मा गांधी का स्मरण

भारत की आजादी का अमृत महोत्सव हर भारतीय के लिए जहां गर्व का क्षण है वहीं आत्म-निरीक्षण का अवसर भी प्रस्तुत करता है। पराधीनता की देहरी लांघ कर स्वाधीनता के परिसर में आना निश्चय ही गौरव की बात है। लगभग दो सदियों लम्बे अंग्रेजों के औपनिवेशिक परिवेश ने भारत की जीवन पद्धति को शिक्षा, कानून और शासन व्यवस्था के माध्यम से इस प्रकार आक्रांत किया था कि देश का आत्मबोध निरंतर क्षीण होता गया। इसके फलस्वरूप हम एक पराई दृष्टि से स्वयं को और दुनिया को भी देखने के अभ्यस्त होते गए। उधार ली गई विचार की कोटियों के सहारे बनी यथार्थ की समझ और उसके मूल्यांकन की कसौटियां ज्ञान-विज्ञान में नवाचार और आचरण की उपयुक्तता के मार्ग में आड़े आती रहीं और राजनैतिक दृष्टि से एक स्वतंत्र देश होने पर भी देश को मानसिक बेड़ियों से मुक्ति न मिल सकी। मानसिक अनुबंधन के फलस्वरूप पाश्चात्य को (जो स्वयं में मूलतः एक प्रकार का स्थानीय या देसी ही था) सार्वभौम मान बैठने की भूल हुई परंतु उसके कुचक्र में भारतीय दृष्टि और उसकी विशाल ज्ञान-परम्परा का प्रायः तिरस्कार ही होता रहा और वह ओझल होती गई। दूसरी ओर सृष्टि की चेतना और संवेदना की व्यापक परम्परा के साथ व्यष्टि और समष्टि चिंता रखने की जगह घोर स्वार्थ केंद्रित भौतिकवाद और उपयोगितावाद को अंतिम सत्य स्वीकारने वाली पश्चिमी दृष्टि हम पर हाबी होती गई। यद्यपि इस मार्ग की सीमाओं को महात्मा गांधी जैसे समाज-चिंतकों ने बताया था विशेषतः ह्यहिंद स्वराजह्ल तो बीसवीं सदी के शुरू में ही इस तरह के जोखिम भरे भविष्य की झलक दिखला चुका था। जीवन भर बापू अपने रचनात्मक कार्यक्रमों और आश्रमों द्वारा आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और नैतिक जीवन के विकल्प का मार्ग प्रयोग रूप में भी दिखा रहे थे। इस दृष्टि से वे स्वदेशी को स्वाभाविक और समाज तथा भौतिक परिवेश के अनुकूल पाते थे। वे यह भी मान रहे थे कि स्वदेशी को अपनाने से देश के संसाधनों का देश को समृद्ध बनाने के लिए उपयोग हो सकेगा। स्वतंत्र भारत की शिक्षा, देश के विकास की योजनाओं और आर्थिक-सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जिन विविध उपायों को अपनाने के साथ देश की जीवन-यात्रा शुरू हुई उन सबका केंद्र भारत या स्वदेशी न हो कर विदेशी या पश्चिम के तथाकथित विकसित देश थे। विकास में पश्चिम हम से आगे था और हमें वैसा ही बनना था वह भी फौरन से पेश्तर। अर्थात भारतीय समाज की नियति महत्वपूर्ण अर्थों में पूर्ववत ही बनी रही और स्वाधीन भारत में भी औपनिवेशिक समय के लक्ष्यों की संगति में निरंतरता बनी रही। परिणामतः हर क्षेत्र में पश्चिम की नकल और उधारी की भरमार हो गई। कालक्रम में चलते हुए वैश्वीकरण की आड़ में पश्चिमी देशों का नव उपनिवेश भी बनने लगा। आज तीन चौथाई सदी बीतने पर हम देश को जहां खड़े पा रहे हैं और जिन समस्याओं से जूझ रहे हैं वह स्थिति यदि कुछ क्षेत्रों में गर्व का अनुभव कराती है तो अनेक क्षेत्रों में असफलता और हीनता का भी अहसास कराती है। आज हर कोई यह अनुभव कर रहा है कि गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक और अन्य अपराध, विभिन्न प्रकार के भेद-भाव, घर और बाहर फैलती हिंसा, पारस्परिक अविश्वास, निजी और सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों से स्खलन होने की घटनाएं जिस तरह बढ़ रही हैं वे आम आदमी की जीवन-चर्या को निरंतर असहज और पीड़ादायी बनाती जा रही हैं। छल-छद्म, दिखावे, लालफीताशाही, भाई भतीजावाद, चापलूसी और अकर्मण्यता के चलते उत्कृष्टता की दिशा में आगे बढ़ने में आने वाली अनेक बाधाएं लोगों में क्षोभ पैदा कर रही हैं। ये सब आज के कठिन समय के अभिलक्षण जैसे होते जा रहे हैं और इन्हें अनिवार्य मान कर लोग छोटे बड़े समझौतों के साथ जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं।

अंतरिक्ष में भारत

भारतीय विज्ञान के लिए यह बड़ी खुशखबरी है कि भारत से सूर्य की ओर रवाना हुआ आदित्य-एल1 अंतरिक्ष यान सफलतापूर्वक पृथ्वी के प्रभाव क्षेत्र से आगे निकल गया है और अब सूर्य-पृथ्वी लैग्रेंज प्वाइंट 1 (एल1) की ओर तेजी से बढ़ रहा है। इस यान को सूर्य की बाहरी कक्षा में पहुंचना है, ताकि वह सूर्य की परिक्रमा करते हुए अपने अध्ययन-शोध के कार्य को आगे बढ़ा सके। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन - इसरो ने बताया है कि यह अंतरिक्ष यान पृथ्वी से 9.2 लाख किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर चुका है। यह दूसरी बार है, जब किसी भारतीय यान ने पृथ्वी के प्रभाव क्षेत्र को पार किया है। आदित्य-एल1 से पहले मंगलयान यह कारनामा कर चुका है। पृथ्वी के प्रभाव क्षेत्र से परे किसी यान को पहुंचाना एक बड़ी वैज्ञानिक योग्यता है और भारत द्वारा अपनी इस योग्यता को दो-दो बार साबित करना एक बड़ी कामयाबी है। आदित्य-एल1 पर अब दुनिया के दूसरे अंतरिक्ष विज्ञान केंद्र भी निगाह रखे हुए हैं और यह यान एक के बाद एक बाधाएं पार करता चला जा रहा है। जैसे मंगलयान एक ऑर्बिटर था, ठीक उसी तरह आदित्य-एल1 भी ऑर्बिटर है। याद रखने की बात है कि आदित्य-एल1 ठीक एक महीने पहले 2 सितंबर को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से रवाना हुआ है और कुल चार महीने में पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर दूर अपनी निर्धारित कक्षा में पहुंच जाएगा। आदित्य की चर्चा जहां तेज हो रही है, वहीं चंद्रयान की चर्चा थमने का नाम नहीं ले रही है। 30 सितंबर को चंद्रमा के दूसरी ओर रात होने के साथ ही चंद्रयान-3 मिशन के तहत लैंडर और रोवर के दोबारा शुरू होने की उम्मीद अब बहुत कम हो गई है। वैसे तो चंद्रयान-3 मिशन ने चंद्रमा पर उतरने सहित अपने सभी प्रारंभिक उद्देश्यों को पूरा कर लिया है, लेकिन वैज्ञानिकों को यह उम्मीद थी कि चांद के उस हिस्से में फिर दिन होने पर ये उपकरण काम करना शुरू कर देंगे।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

बिक्री में मारुति स्विफ्ट देश में नंबर-1 कार

-अगस्त 2023 में स्विफ्ट की 18,653 यूनिट्स बिकी

नई दिल्ली ।

मारुति स्विफ्ट कार सर्वाधिक बिक्री के मामले में देश की नंबर-1 कार रही। बिक्री के मामले में स्विफ्ट भले ही सबसे ऊंचे पायदान पर है लेकिन सुरक्षा के मामले में कार का प्रदर्शन काफी निराशाजनक रहा है। अगस्त 2023 में स्विफ्ट की 18,653 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। अगर सेफ्टी की बात करें तो स्विफ्ट को ग्लोबल एनसीएपी क्रैश टेस्ट में केवल 1-स्टार ही रेटिंग ही मिला है। मारुति स्विफ्ट की कीमत 5.99 लाख रुपये से शुरू होकर 9.03 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक जाती है। कई लोगों को फीचर्स और परफॉरमेंस के लिहाज से स्विफ्ट काफी पसंद आती है, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें सेफ्टी और ड्राइविंग एक्सपीरियंस के मामले में यह कार पसंद नहीं है। अगर आप एक नई कार खरीदना चाहते हैं और आपका बजट 6 से 8 लाख रुपये का है तो यहां हम आपको बता रहे हैं एक ऐसी एसयूवी के बारे में जो आपको सभी मामलों में खूब पसंद आएगी। भारत में टाटा पंच लॉन्च होने के बाद से ही लोकप्रिय हो गई थी। इस कार का सबसे बड़ा आकर्षण इसकी बढ़िया बिल्ड क्वालिटी और माइलेज है। पंच की कीमत 6 लाख रुपये से शुरू होकर 9.52 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक जाती है। इतनी कीमत पर मार्केट में कोई ऐसी गाड़ी नहीं है जो 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग के साथ आती है। हैचबैक की कीमत में उपलब्ध होने के वजह से पंच अपने सेगमेंट की एसयूवी गाड़ियों को टक्कर तो देती ही है, साथ में इसका मुकाबला उतनी ही कीमत

में आने वाली हैचबैक कारों से भी होती है। पंच में बेहतर स्पेस और कम्फर्ट दोनों मिलता है और स्पेस के मामले में भी यह शानदार है। टाटा पंच साइज में भले ही छोटी दिखती है लेकिन इसमें 5 लोग आसानी से सफर कर सकते हैं। इसमें 366 लीटर का बूट स्पेस भी मिलता है। इसमें सेफ्टी के लिहाज से डुअल फ्रंट एयरबैग, ईबीडी के साथ एबीएस, रियर डिफॉगर्स, रियर पार्किंग सेंसर, रियर-व्यू कैमरा और इसोफिक्स एंकर जैसे फीचर्स मिलते हैं।फीचर्स की बात करें तो, पंच में 7-इंच टचस्क्रीन डिस्प्ले, सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट पैनल, ऑटो एयर कंडीशनिंग, ऑटोमैटिक हेडलाइट्स, कनेक्टेड कार टेक्नोलॉजी और क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स मिलते हैं।

बजाज प्लेटिना 110 है धांसू बाइक

70 किमी देती है माइलेज, ऑफिस के लिए है बढिया

नई दिल्ली ।

हम आपको एक ऐसी बाइक के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसे खरीदने में न ही आपको ज्यादा पैसे खर्च करने पड़ेंगे और न ही ये बाइक आपसे ज्यादा पेट्रूल और मेंटेनेंस का खर्च मांगती है। इस बाइक की माइलेज भी इतनी धांसू है। आपका ऑफिस चाहे कितना भी दूर हो ये बाइक आपका खर्च नहीं बढ़ाएगी। यहां हम आपको बता रहे हैं बजाज प्लेटिना 110 के बारे में जो मार्केट में एक लोकप्रिय बाइक है। अपनी राइड क्वालिटी, इंजन और जबरदस्त माइलेज के दम पर आज भी ये बाइक खूब बिक रही है। वैसे तो ये बाइक 110 सीसी की है, लेकिन कंपनी ने इसमें कुछ ऐसे फीचर्स दे दिए हैं जो महंगी बाइक्स में मिलते हैं।

प्लेटिना 110 की एक्स-शोरूम कीमत 70,400 रुपये से 79,821 रुपये के बीच है।बजाज प्लेटिना अपनी फ्यूल एफिसिएंट इंजन के लिए जानी जाती है। यह कमाल इसके 115.45 सीसी के डीटीएस-द्ध इंजन का है जो 8.48 बीएचपी का अधिकतम पॉवर और 9.81 एनएम का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इसके साथ ही बाइक में 5-स्पीड गियरबॉक्स और नाइट्रॉक्स सस्पेंशन मिलता है जिससे इसकी राइड क्वालिटी और भी शानदार हो गई है। बजाज प्लेटिना 110 सीसी की पहली ऐसी बाइक है जिसमें कंपनी एंटी-लॉक ब्रैकिंग सिस्टम दे रही है। बता दें कि एबीएस एक महत्वपूर्ण सेफ्टी फीचर है और वर्तमान में केवल 150सीसी बाइक्स में ही दी जा रही है। लेकिन प्लेटिना 110 एकलौती ऐसी बाइक है जिसमें यह फीचर मिल रहा है। मालूम हो कि इन दिनों शहरों में ट्रैफिक की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। घर से

त्योहारी सीजन में बढ़ती मांग के बीच कारों, एसयूवी के दाम बढ़े

नई दिल्ली।

त्योहारी सीजन में बढ़ती मांग के बीच ऑटोमोबाइल निर्माताओं ने 1 अक्टूबर से कारों और एसयूवी के दाम बढ़ा दिये हैं जिससे उपभोक्ताओं को अब इनके लिए अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी। महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अपने थार, स्कॉर्पियो, एक्सयूवी 300 और एक्सयूवी 700 मॉडल की कीमतें 81 हजार रुपये तक बढ़ा दी हैं, जबकि दक्षिण कोरियाई ऑटो प्रमुख किआ ने अपनी लोकप्रिय एसयूवी सेल्टोस और बहुउद्देशीय वाहन कैरेंस की कीमत 50 हजार रुपये बढ़ाई है। देश की दूसरी सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी हुंडई ने अपनी एसयूवी वेन्यू और टक्सन की कीमतों में 48 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी की है। जापानी कार निर्माता होंडा ने अपने लोकप्रिय सिटी और अमेज़ मॉडल की कीमत में लगभग आठ हजार रुपये की मामूली बढ़ोतरी की है।

कार निर्माता दावा करते रहे हैं कि पिछले साल लागत बढ़ने के बावजूद उन्होंने उसका बोझ ग्राहकों पर नहीं डालने का फैसला किया। स्पष्ट रूप से, चूंकि इन लोकप्रिय मॉडलों की मांग स्थिर बनी हुई है, उनमें से कुछ के पास ग्राहकों की प्रतीक्षा सूची भी है। किआ इंडिया ने कहा कि कंपनी ने शुरुआती कीमतों को एक परिचयात्मक पेशकश के रूप में पेश किया था और अब उसके सेल्टोस के मामले में छह महीने के बाद संशोधन किया गया है। कार निर्माता एक-दूसरे की कीमतों पर नजर रखते हैं क्योंकि वे अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बाजार में बाजार हिस्सेदारी खोना नहीं चाहते हैं। इसलिए, कीमतें बढ़ने पर उनके लिए एक-दूसरे का अनुसरण करना असामान्य नहीं है।

सितंबर में टाटा मोटर्स की घरेलू बिक्री बढ़कर 80,633 इकाई पर

नई दिल्ली ।

देश की प्रमुख वाहन कंपनी टाटा मोटर्स की कुल घरेलू बिक्री सितंबर में सालाना आधार पर दो फीसदी बढ़कर 82,023 इकाई पर पहुंच गई है। कंपनी ने सितंबर 2022 में 80,633 इकाइयां बेची थीं।

टाटा मोटर्स ने शेयर बाजार को बताया कि कंपनी की यात्री वाहन खंड में घरेलू बिक्री सितंबर में सालाना आधार पर छह प्रतिशत गिरावट के साथ 44,809 इकाई रही। सितंबर 2022 में यह 47,654 इकाई थी। इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की कुल बिक्री सितंबर में सालाना आधार पर 57 प्रतिशत बढ़कर 6,050 इकाई रही, जो पिछले साल सितंबर में 3,864 इकाई थी।

टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स लिमिटेड और टाटा पैसेंजर्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में टाटा मोटर्स ने 1,38,939 कारों और एसयूवी की तिमाही

बिक्री दर्ज की। कंपनी ने कहा कि सितंबर 2023 में उसकी कुल वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री 12 प्रतिशत बढ़कर 39,064 इकाई रही, जबकि सितंबर 2022 में यह 34,890 इकाई थी। कंपनी की वाणिज्यिक वाहनों की घरेलू बिक्री चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में छह प्रतिशत बढ़कर 99,178 रही।

अडाणी ने मुंबई में अपना पहला 400 केवी ग्रिड चालू किया

मुंबई।

देश की वाणिज्यिक राजधानी में बिजली की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए अडाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड (एईएसएल) ने मुंबई की पहली 400-केवी ग्रिड लाइन शुरू की है। एक अधिकारी ने यहां सोमवार को यह जानकारी दी।खारघर विक्रोली ट्रांसमिशन लिमिटेड की नई लाइन से मौजूदा ट्रांसमिशन और वितरण क्षमता बढ़ेगी और शहर में 1000 मेगावाट बिजली उत्पादन बढ़ेगा। शहर में हाल के वर्षों में 12 अक्टूबर 2020 और 27 फरवरी 2022 को दो बड़ी ग्रिड विफलताएँ देखी गईं, जिससे आपूर्ति कई घंटों के लिए ठप हो गई। इस पर राजनीतिक हंगामा भी हुआ। एक अधिकारी ने कहा, खारघर-विक्रोली लाइन भविष्य में ऐसी किसी भी घटना को कम करने के समाधान के रूप में मुंबई शहर में अतिरिक्त 1,000 मेगावाट विश्वसनीय बिजली लाएगी। इस परियोजना के चालू होने से, मुंबई को अपनी नगरपालिका सीमा के भीतर 400 केवी ग्रिड मिल गया

है, जिससे इसकी बिजली ग्रिड के भीतर आयात क्षमता में वृद्धि हुई है और विश्वसनीयता और स्थिरता में सुधार हुआ है। इस परियोजना की योजना एक दशक से अधिक समय से चल रही थी और शहर के बिजली आपूर्तिकर्ताओं के बीच कथित प्रतिद्वंद्विता सहित विभिन्न कारणों से इसमें देरी हुई। एईएसएल ने लाइन बिछाने के दौरान कई चुनौतियों का सामना किया, मुख्य रूप से कठिन इलाकों में। लेकिन प्रौद्योगिकी और नवाचार के उपयोग से इन पर काबू पा लिया गया। इनमें ठाणे क्रीक में फ्लोटिंग बार्ज पर भारी रिग्स का उपयोग करके निर्मित छह टावर शामिल हैं और शहरी क्षेत्रों में, विशेष क्षैतिज विन्यास टावरों को अपनाकर कुछ स्थानों पर ऊंचाई से संबंधित प्रतिबंधों को दूर किया गया है। सूची में अगली एक और प्रमुख बिजली लाइन है - आगामी कुडु-आरे लाइन, जो शहर में 1000 मेगावाट बिजली लाने में मदद करेगी।वर्तमान में मुंबई में एईएसएल के लगभग 31.50 लाख उपभोक्ता, टाटा पावर के लगभग सात लाख उपभोक्ता और बेस्ट के 10.50 लाख उपभोक्ता पूरा करते हैं, इसके अलावा आबादी का एक छोटा सा हिस्सा महाराष्ट्र राज्य बिजली बोर्ड के ग्राहक भी हैं।

सरकार ने यूआईडीएआई के सीईओ अमित अग्रवाल का कार्यकाल बढ़ाया

नई दिल्ली। कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने यूनिक आईडेंटिफिकेशन ऑफ इंडिया (यूआईडीएआई) के सीईओ के रूप में अमित अग्रवाल के केंद्रीय प्रतिनियुक्ति कार्यकाल को 2 नवंबर 2023 से एक वर्ष के लिए बढ़ाने को मंजूरी दे दी है। यानी 2 नवंबर 2024 तक या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, अग्रवाल (यूआईडीएआई) के सीईओ रहेंगे। अग्रवाल 1993 बैच के छत्तीसगढ़ कैडर के आईएएस अधिकारी हैं। एसीसी ने कानून मंत्रालय के विधायी विभाग में सचिव रीता वशिष्ठ को 2 अक्टूबर 2023 से उनकी सेवानिवृत्ति की तारीख तक यानी 31 जुलाई 2025 या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, भारत सरकार के सचिव के पद और वेतन में अस्थायी रूप से अपग्रेड कर कानून मंत्रालय के केंद्रीय एजेंसी अनुभाग के प्रभारी के रूप में नियुक्ति को भी मंजूरी दे दी।

एलएंडटी की ऑर्डर बुक मजबूतः सीएमडी

नई दिल्ली । लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) की ऑर्डर बुक मजबूत है, बाजार पूंजीकरण और शेयर की कीमत अपने उच्चतम स्तर पर है। कंपनी के नवनियुक्त चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) एसएन सुब्रमण्यन ने कर्मचारियों से यह बात कही। सुब्रमण्यन ने साथ ही उनसे सफलता के लिए उत्सुक रहने को भी कहा। सीएमडी का कार्यभार संभालने के बाद कर्मचारियों को लिखे अपने पहले पत्र में सुब्रमण्यन ने कहा कि कंपनी ऐसे काम करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे भारत और दुनिया दोनों को गर्व हो। उन्होंने पत्र में लिखा कि हमें प्रौद्योगिकी की ताकत पर भरोसा करना चाहिए और अपनी उत्पादकता तथा दक्षता में सुधार लाने के लिए इसकी जबरदस्त क्षमता का उपयोग करते रहना चाहिए। उन्होंने सुरक्षित तरीके से काम करने और समय पर काम पूरा करने की जरूरत पर जोर दिया। सुब्रमण्यन ने कहा कि डिजिटलीकरण व्यवसाय के हर पहलू को प्रभावित कर रहा है, और इसलिए भविष्य के लिए तैयार रहना होगा।

छत्तीसगढ़ में पेट्रोल-डीजल महंगा, राजस्थान में भी तेजी

- ब्रेंट क्रूड 92.40 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली । वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें सपाट बनी हुई हैं। डब्ल्यूटीआई क्रूड करीब 91.72 डॉलर प्रति बैरल पर बिक रहा है। वहीं ब्रेंट क्रूड 92.40 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेड कर रहा है। छत्तीसगढ़ में पेट्रोल 50 पैसे और डीजल 49 पैसे महंगा होकर बिक रहा है। हरियाणा में पेट्रोल और डीजल की कीमत में 31 पैसे का इजाफा दिख रहा है। महाराष्ट्र और राजस्थान में भी पेट्रोल और डीजल की कीमतों में उछाल दिख रहा है। दूसरी और पश्चिम बंगाल में पेट्रोल 42 पैसे और डीजल 39 पैसे सस्ता बिक रहा है। गोवा, गुजरात, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में भी पेट्रोल और डीजल की कीमतों में हल्की गिरावट है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपए और डीजल 89.62 रुपए प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपए और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.74 रुपए और डीजल 94.33 रुपए प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 96.76 रुपए और डीजल 89.93 रुपए प्रति लीटर हो गया है। गाजियाबाद में 96.58 रुपए और डीजल 89.75 रुपए प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.57 रुपए और डीजल 89.76 रुपए प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 107.54 रुपए और डीजल 94.32 रुपए प्रति लीटर हो गया है। पोर्टब्लेयर में पेट्रोल 84.10 रुपए और डीजल 79.74 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

सितंबर में जीएसटी कलेक्शन ₹1.60 लाख करोड़ के पार, वित्त वर्ष 2023-24 में ऐसा चौथी बार

बजनेस डेस्कः

जीएसटी से कमाई के मामले में सितंबर महीना शानदार साबित हुआ है। सितंबर महीने के दौरान जीएसटी कलेक्शन एक बार फिर से 1.60 लाख करोड़ रुपए के पार निकल गया है। इसके साथ ही चालू वित्त वर्ष में अब तक ऐसा चार बार हो चुका है, जब किसी एक महीने में कलेक्शन का आंकड़ा 1.60 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा रहा हो। वहीं हर महीने सालाना आधार पर जीएसटी कलेक्शन में ग्रोथ का ट्रेंड भी बना हुआ है।

वित्त मंत्रालय ने दिया ये आंकड़ा

वित्त मंत्रालय के द्वारा रविवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, सितंबर महीने में जीएसटी से सरकारी खजाने को 1,62,712 करोड़ रुपए मिले हैं, जो साल भर पहले यानी सितंबर 2022 की तुलना में 10 फीसदी ज्यादा है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान

जीएसटी से सरकार को अब तक 9,92,508 करोड़ रुपए मिल चुके हैं। इस तरह चालू वित्त वर्ष के दौरान सरकार का औसत मासिक कलेक्शन अब तक 1.65 लाख करोड़ रुपए है, जो सालाना आधार पर 11 फीसदी की ग्रोथ है।

हर महीने बढ़ रहा कलेक्शन

इससे पहले अगस्त महीने के दौरान सरकार को जीएसटी से 1,59,069 करोड़ रुपए मिले थे। यह 6 महीने में पहली बार 1.60 लाख करोड़ रुपए से कम का कलेक्शन था। उससे पहले सरकार को मार्च 2023 के बाद हर महीने 1.60 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का कलेक्शन हो रहा था। हालांकि साल भर पहले की तुलना में देखें तो अगस्त में भी जीएसटी कलेक्शन बेहतर ही रहा था, क्योंकि अगस्त 2022 की तुलना में कलेक्शन में 11 फीसदी की तेजी आई थी।

जापान की अर्थव्यवस्था को लेकर आशान्वित हैं विनिर्माताः सर्वे

तोक्यो । जापान के बड़े विनिर्माताओं की कारोबारी धारणा में जुलाई-सितंबर की तिमाही में सुधार हुआ है। यह लगातार दूसरी तिमाही है जबकि विनिर्माता देश की अर्थव्यवस्था को लेकर आशान्वित दिख रहे हैं। जापान के केंद्रीय बैंक द्वारा सोमवार को जारी एक सर्वे में यह निष्कर्ष निकाला गया है। बैंक ऑफ जापान के तिमाही सर्वे से पता चलता है कि सितंबर तिमाही में देश के प्रमुख विनिर्माताओं की कारोबारी धारणा प्लस 9 रही है। यह जून में प्लस 5 थी। वहीं प्रमुख गैर-विनिर्माताओं की कारोबारी धारणा चार अंक बढ़कर प्लस 27 हो गई है यह लगातार छठी तिमाही है जबकि गैर-विनिर्माताओं की धारणा में सुधार हुआ है। इसे पिछले तीन दशक का सबसे सकारात्मक नतीजा भी बताया जा रहा है। सर्वे प्रत्येक तिमाही में किया जाता है। इसमें कारोबारी धारणा को सकारात्मक बताने वाली कंपनियों की संख्या में से कारोबारी धारणा को नकारात्मक बताने वाली कंपनियों की संख्या घटाकर कारोबारी धारणा का आकलन किया जाता है।

कच्चे तेल की तेजी से चालू खाता घाटा, रुपया दबाव में

नई दिल्ली।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी का असर अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में देखने को मिला है, जिससे भारत का चालू खाता घाटा (सीएडी) बढ़ने और आने वाले समय में रुपये पर और अधिक दबाव की आशंका बढ़ गई है। देश अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है और वैश्विक कीमतों में किसी भी वृद्धि से आयात खर्च बढ़ जाता है। चूंकि कच्चा तेल खरीदने के लिए बड़ा भुगतान डॉलर में करना पड़ता है, इसलिए अमेरिकी मुद्रा की तुलना में रुपया कमजोर होता है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, बेंचमार्क वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड जुलाई-सितंबर की तिमाही में 29 फीसदी की बढ़ोतरी के बाद सोमवार को 91 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंच गया, जो लगभग दो दशकों में सबसे बड़ी तीसरी तिमाही बढ़त है। बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड पहले से ही 95 डॉलर प्रति बैरल के आसपास मँडरा रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण डॉलर की मांग बढ़ने से अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा 83 रुपये के निचले स्तर पर आ गई है। पिछले सप्ताह जारी आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, भारत का चालू खाता घाटा (सीएडी) अप्रैल-जून तिमाही में सात गुना बढ़कर 9.2 अरब डॉलर हो गया, जबकि इससे पहले की तिमाही में यह आंकड़ा 1.3 अरब डॉलर था। तेल की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी और वैश्विक बाजारों में मांग में गिरावट के कारण निर्यात में कमी आई है जिससे इसके और बढ़ने की संभावना है। वित्त वर्ष 2023-24 की अप्रैल-जून तिमाही के लिए कैड जीडीपी का 1.1 प्रतिशत था। एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज की प्रमुख अर्थशास्त्री माधवी अरोड़ा के अनुसार, तेल की ऊंची कीमतों, उच्च कोर आयात और सेवाओं के निर्यात में और मंदी के कारण जुलाई-सितंबर तिमाही में सीएडी का पर्याप्त विस्तार जीडीपी के 2.4 प्रतिशत तक हो जाएगा।आगे चलकर बहुत कुछ वैश्विक बाज़ारों में तेल की कीमतों पर निर्भर करेगा। आरबीआई रुपये को सहारा देने के लिए बाजार में डॉलर जारी कर रहा है, लेकिन इससे भारतीय मुद्रा की गिरावट को रोका नहीं जा सका है। इससे सितंबर में देश के विदेशी मुद्रा भंडार में भी गिरावट आई है। आरबीआई द्वारा शुक्रवार को जारी आंकड़ों से पता चलता है कि 22 सितंबर तक भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगातार तीसरे सप्ताह गिरकर 590.7 अरब डॉलर के चार महीने के निचले स्तर पर आ गया। तीन सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 8.2 अरब डॉलर घट गया है।

विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट चिंता का कारण है क्योंकि आरबीआई के पास अपने बाजार हस्तक्षेप के माध्यम से रुपये में अस्थिरता रोकने के लिए कम गुंजाइश बची है।

2024 में ग्लोबल लेवल स्तर पर डिजिटल आईडी वेरिफिकेशन 70 बिलियन से अधिक हो जाएगी

नई दिल्ली। डिजिटल आइडेंटिटी वेरिफिकेशन की संख्या 2024 में 70 बिलियन से ज्यादा हो जाएगी, जो पिछले साल की 61 बिलियन की संख्या से 16 प्रतिशत अधिक है। एक नई रिपोर्ट सोमवार को सामने आई। जुनिपर रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार, अकाउंट टेकओवर और कार्ड-नॉट-प्रेजेंट फ्रॉड से निपटने के लिए बिजनेस द्वारा मजबूत बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन मैथर्ड को अपनाने से यह वृद्धि हो रही है। इस तरह की धोखाधड़ी के खिलाफ बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन मैथड अत्यधिक प्रभावी हैं, स्पूफिंग को रोकने के लिए जीवंतता जांच का उपयोग किया जाता है। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2024 में 37 बिलियन के साथ बैंकिंग में चेक की सबसे बड़ी मात्रा देखी जाएगी, जो ग्लोबल आइडेंटिफिकेशन मार्केट के 53 प्रतिशत के बराबर है। लेखक माइकल ग्रीनवुड ने कहा, चेहरे की पहचान की असली ताकत अतिरिक्त जांच हैं, जिन्हें जोड़ा जा सकता है। चेहरे की पहचान के शीर्ष पर उम्र का अनुमान लगाने से वेरिफिकेशन को ग्राहक की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वेरिफिकेशन सिस्टम जो एक चरण में कई जांच कर सकती हैं, लिगेसी सिस्टम की तुलना में काफी मजबूत यूजर एक्सपीरियंस प्रदान करती हैं, और अगले कुछ सालों में आम हो जाएंगी।

जीडीपी वृद्धि दर 2023-24 में 6.5% रहेगीः राजीव कुमार

नई दिल्लीः नीति आयोग के पूर्व वाइस चेयरमैन राजीव कुमार ने सोमवार को चालू वित्त वर्ष में देश की आर्थिक वृद्धि दर लगभग 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने पिछले नौ साल में जो सुधार किए हैं, उससे देश की व्यापक आर्थिक स्थिति को फायदा हो रहा है। कुमार ने यह भी कहा कि भारत को आठ प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की जरूरत है और देश ऐसा करने में सक्षम है। देश की युवा आबादी की आकांक्षाओं को पूरा करने और अपने कार्यबल के लिए पर्याप्त नौकरियां पैदा करने के लिए आर्थिक वृद्धि को इस स्तर पर लाना जरूरी है। उन्होंने कहा, मेरा अनुमान है कि वित्त वर्ष 2023-24 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रहेगी। मुझे लगता है कि हम अगले कुछ साल इस वृद्धि दर को आसानी से बनाए रख सकते हैं। भारत की जीडीपी वृदि दर 2022-23 में 7.2 फीसदी रही थी, जो 2021-22 के 9.1 फीसदी से कम है। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमान के मुताबिक चालू वित्त वर्ष में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.5 फीसदी रह सकती है। कुमार ने आगे कहा कि भारत का चालू खाता घाटा संभाला जा सकता है और देश का विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 11 महीने के आयात को पूरा करने के लिए पर्याप्त है और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश जारी है।

समेटते रहें खुशियां

तनाव भरी जिंदगी! यही है आज का कड़वा सच। कैसे बहार आएं ऐसी जिंदगी से, ताकि तनाव छूमंतर हो जाए? समाज के डर से डरा-धमका कर, समझा कर अपने भीतर के बच्चे को आपने खामोश कर दिया है। अपना बड़प्पन जताने, अपनी इमेज के कैदी जो बन गए हैं आप। क्या ऐसे ही गुजार देंगे जिंदगी बगैर सच्चा लुत्फ उठाए? हमेशा न सही मगर प्रतिदिन कुछ समय के लिये तो अपने आप से रूबरू हो ही सकते हैं, खुश रहने के फामरूले आजमा सकते हैं

पुरानी सहेलियों, दोस्तों से मिलने का मौका न गंवाए। इंटरनेट ने उनसे संपर्क कर पाना सुलभ कर दिया है। उनके साथ पुराने दिनों की मीठी यादें ताजा कर आप तरोताजा हो जाएंगी

-रोज एक ही डाइनिंग टेबल पर बैठकर उसी अंदाज में खाते अक्सर बोरियत होने लगती है। क्यों न जगह बदल कर खाया जाये? कभी पतिदेव को भी सेवा का मैका दें ताकि वे भी आपको खाना परोस सकें। अगर वे वास्तव में आपसे प्यार करते हैं, आपकी केयर करते हैं तो जरूर कुछ मदद जो वे कर सकते हैं, करके दिखायेंगे।

-टीवी से आज लोगों को फुर्सत नहीं। चिपक कर बैठ गए तो सारी दुनिया भुला बैठेंगे मगर वे यह नहीं जानते कि यह दिमाग के लिए स्लो पॉयजन है। रेडियो सुनना इसका बेहतर विकल्प है।

-जिम के बजाय नृत्य से बेहतर वर्क आउट हो सकता है? इसके लिए आपको न पैसे खर्च ने होंगे, न जिम आने-जाने की जहमत उठानी होगी। नृत्य से आत्मिक शांति मिलती है और खुशियां भी हजार।

-घर की सेटिंग में बदलाव भी मन प्रफुल्लित करता है। सुंदर तस्वीरें, सजावटी सामान से घर को संवार दें। जरूरी नहीं है कि ये सब महंगे ही हों। बस, टेस्ट अच्छा होना चाहिए। टीवी बेडरूम में रखना ठीक नहीं, इसे लॉबी या ड्राइंग-रूम में ही रखना उचित है। बेडरूम में आराम जरूर लगता है, लेकिन उससे गलत आदतें बन जाएंगी।

-अतीत में विचरना बुरा नहीं, लेकिन बस थोड़ी देर की सैर ही उचित होगी। आप उन्हीं रास्तों-कोनों से जुड़ी उन घटनाओं को याद करें, जिनसे आपको खुशी मिले। कुछ सुहाने यादगार पल जो दोबारा आपको खुशी दें, उन्हीं की जुगाली करें।

-आपके घर की खिड़की पर झांकता कोई फूलों का गुच्छा, लॉन में बिछी हरी घास, उड़ता हुआ कोई चहचहाता पंछी, आसमान में तैरते रुई के फाहे से बादल, सुबह उगता सूरज, शाम को सूर्यास्त का नजारा, रात को अपनी चांदनी बिखेरता आसमान में खिला चांद, कुछ देर निहारिए तो सही। डूब जाइए उनकी खूबसूरती में, भुला दें दुनिया के सारे रंजोगम। सच, प्रकृति के पास आपको खुश करने के लिए अनगिनत सौगातें हैं।

-मित्र और रिश्तेदार आपको ऊर्जा देते हैं। उनसे अच्छे संबंध बनाकर रखें, जिनसे मन न मिलता हो और जिनके साथ इंट्रैक्ट कर आप डिप्रेस या टेंस फील करती हों, उनसे दूरी बनाने में ही भलाई है।

-पढ़ने का शौक अच्छा है। अच्छा टाइमपास भी है। यह आपकी ग्रोथ में मदद करता है। पढ़कर ही दुनिया में क्या हो रहा है, पता चलता है। दुनिया भर के लोगों के कल्चर को जानकर सोच को विस्तार मिलता है। यह आपको भी तरह से समृद्ध करता है।

- जहां तक संभव हो टिपटॉप रहने की कोशिश करें। अच्छे दिखेंगे, तभी अच्छा फील करेंगे। जो मन आए वही पहनें। आप बेहतर जानती हैं कि आपको क्या सूट करता है।

-अपनी कल्पनाशक्ति टी.वी. के आगे बैठकर नष्ट न कर लें। कल्पना के सुनहरे पंखों पर जब जी चाहे उड़ान भरें। यह समय की बर्बादी कतई नहीं होगी, उस उड़ान लंबी और देर तक न ली जाए यह ध्यान रहे, क्योंकि तब वाकई समय की बर्बादी होगी। खाने में नये-नये प्रयोग करें, एक-सा खाते रहने की ऊब से छुटकारा मिलेगा।

-अंत में एक शेर के मुताबिक, दिल बहलाने को कहीं और न जाकर घर की चीजों को ही सजाया जाए। इसका भी अपना मजा है। - प्रकीर्तिमा

भरपूर नींद मधूमेह से दिलाएगी छुटकारा

अक्सर यह देखने में आता है महिलाएं घर और अपने दफ्तर के काम-काज में इतना परेशान हो जाती है कि उन्हें भरपूर नींद लेने का समय ही नही मिलता जिससे वह कई प्रकार की गंभीर बीमारियों से घिर जाती हैं। जिसमें से एक मधूमेह।मधूमेह से बचने के लिए जरूरी है भरपूर नींद।आइए जानते हैं। चार-पांच घंटे की नींद के बजाए पर्याप्त नींद लेना शुरूकरें ताकि आप हमेशा स्वस्थ रहे। नींद की कमी के कारण आपके शरीर में कई समस्याएं होने लगती है। इसी के चलते आगे चलकर शरीर में मौजूद ब्लड शुगर का स्तर गड़बड़ा सकता है। नतीजतन मधूमेह से पीड़ित होने का खतरा बढ़ जाता है। हाल ही में किए गए एक अमेरिकी शोध में अध्ययनकर्ताओं ने यह रिपोर्ट पेश की।शोध में कहा गया कि हमने आठ साल तक १००० लोगों पर अध्ययन किया। अध्ययन में शामिल लोग रोज अपनी दिनचर्या का रिकार्ड कंप्यूटर में दर्ज करते थे। माह के अंत में इन रिकार्डो का वैज्ञानिक अध्ययन करते थे।

अध्ययन से पता चला कि जो लोग प्रतिदिन छह घंटे से कम नींद ले रहे थे, उनके शरीर में ब्लड शुगर का लेवल सही नही था। इसके विपरीत जो लोग प्रतिदिन छह या सात घंटे की नींद ले रहे थे, उनके शरीर में ब्लड शुगर का संतुलन सही था।अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि जब हम सोते हैं तो शरीर एक प्रकार से अपनी मरम्मत कर रहा होता है। यदि शरीर को अपनी मरम्मत करने का पूरा समय नहीं मिलेगा तो जाहिर है कि हमें विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इसका असर ब्लड शुगर पर भी पड़ता है। डॉ. लिसा का कहना है कि अब हम इस बात की जांच कर रहे हैं कि क्या अधिक सोने पर भी ब्लड शुगर का स्तर गड़बड़ा जाता है या यह सामान्य रहता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष हमें बताएंगे की ब्लड शुगर को और किस तरह नियंत्रित किया जा सकता है।

हॉस्टल

जब बच्चा पहली बार आपसे दूर जाता है तो एक कसक और दर्द तो होता ही है, लेकिन बेस्ट एजुकेशन के लिए यह सही है। परिवार और अपनों से दूर अजनबी शहर के हॉस्टल में लड़के-लड़कियों को स्वतंत्र रूप से विकसित होने और वक्त के हिसाब से ढलने का पूरा अवसर मिलता है। लेकिन हॉस्टल भेजने से पहले कुछ सावधानियों के बारे में यदि हम अपने बच्चों को बतायें तो वो किसी भी मुश्किल में पड़ने से बच जाएंगे

भेजने से पहले रखें कुछ बातों का ख्याल

क्या समस्यायें होती हैं हॉस्टल में

-घर से दूर हॉस्टल में शुरू-शुरू में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे हॉस्टल में सामान चोरी होने की सबसे ज्यादा संभावना होती है।

-घर से दूर बच्चों को एकाकीपन सताने लगता है जिसे दूर करने के लिए वे अक्सर सिगरेट, शराब ड्रग्स व नशे की लत में पड़ जाते हैं।

-अकेले होने पर कोई गलत दोस्त या सहेली हमदर्द बनकर फायदा उठाने की फिराक में रहते हैं। इसलिए समय-समय पर बच्चों को फोन करके ऐसे दोस्तों से दूर रहने की हिदायत देते रहें।

-बच्चे को बतायें कि हॉस्टल और घर के माहौल में काफी अंतर होता है। इसलिए हॉस्टल में उसे काफी सतर्क रहना होता है। जैसे अपना कमरा ठीक से लॉक करना, पैसे खुले न रखना, सामान पर पूरा ध्यान देना और किसी भी पर भी ज्यादा भरोसा न करना।

-घर से दूर होने पर बच्चों को शुरुआत में होम सिकनेस ज्यादा प्रभावित करती है, इसलिए उस शहर में रहने वाले अपने मित्र या रिश्तेदार को ढूंढें जो बच्चे के स्थानीय अभिभावक की अहम भूमिका निभा सके।

-बच्चों से बराबर बातचीत बनायें रखें। फोन और नेट के द्वारा बच्चों से टच में रहें। बर्थ डे या अन्य खास अवसरों पर जरूर जायें और हमेशा उन्हें प्रोत्साहित करते रहें।

-आजकल युवा पैसे की कीमत हो पहचानते हैं। फिर भी उन्हें ए.टी.एम. से पैसा निकलाना, बैंक में पैसे कैसे जमा करना- इसकी उन्हें पूरी जानकारी अवश्य दें। साथ ही किफायत से पैसा खर्च करना और हिसाब रखना भी सिखायें।

-आज के बदलते परिवेश में अमूमन कॉलेज में को-एजुकेशन होती है। ऐसे में एक दूसरे के प्रति आकर्षण होना संभव है, इसलिए अपने युवा बच्चों को यह आगाह करें कि वे घर से इतनी दूर शिक्षा अर्जित करने के लक्ष्य हो लेकर आये हैं। उन्हें अपना भविष्य बनाना है। क्रश के चक्कर में पड़कर अपना भविष्य बर्बाद न करें।

-साथ ही अपने हॉस्टल जाने वाले बच्चों को इस बात से सतर्क करें कि हॉस्टल में कोई गलत हरकत देखें तो तुरंत स्थानीय अभिभावक के साथ मिलकर पुलिस थाने में शिकायत करें।

-अगर आप इन बातों पर गौर करें तो हॉस्टल भेजने से पूर्व हॉस्टल संबंधी जो हौवा अपको सता रहा है वह वक्त के साथ काफूर हो जायेगा। -अभ्यर्थना

क्यों बढ़ रहा है हॉस्टल का चलन

एजुकेशन और जॉब के महत्व को समझते हुए माता-पिता अपने बच्चों को घर से दूर अनजाने शहर में भेजने के लिए विवश होते हैं। ऐसे में हॉस्टल अनजाने शहर में लड़के-लड़कियों को ऐसी छतछ्राया देता है जहां उन्हें अपने सपनों के पंख पसारने के लिए पूरी स्वतंत्रता मिलती है। वैसे आज के परिवेश में हॉस्टल का माहौल कुछ बिगड़ जरूर गया है। ऐसे में अभिभावक की ये जिम्मेदारी है कि वह समय-समय पर अपने बच्चे को गलत और सही का फर्क जरूर बताते रहें।

वेलनेस

त्वचा के दाग-धब्बों के लिए होममेड ट्रीटमेंट

त्वचा पर खासतौर से चेहरे पर भद्दे दाग और पिग्मेंटेड निशान कोई नहीं चाहता। चिकनी और साफ त्वचा पाने के लिए हम बाजार में उपलब्ध विभिन्न क्रीम और जेल पर काफी पैसा खर्च करते हैं। लेकिन उन साधारण और छोटी-छोटी चीजों को भूल जाते हैं जो हमारी किचन गार्डन में उपलब्ध होती हैं, जो हमें न केवल एक्ने और धब्बों से निजात दिलाते हैं बल्कि त्वचा की चमक भी वापस लाते हैं। इसलिए अगर आपके चेहरे पर एक भी दाग है जो आपको परेशान करता है, तो दिये गये आसान होममेड ट्रीटमेंट से भद्दे दाग-धब्बों से निजात पा सकती हैं-

भद्दे दाग-धब्बों को हल्का करता है नींबू का रस

कभी-कभी दाग जब ठीक होने वाले होते हैं तब वे त्वचा के अन्य हिस्सों से ज्यादा गहरे नजर आने लगते हैं। यहां तक कि अगर ये उभर न भी रहे हों तब भी गहरे रंग का धब्बा नजर आने लगता है। इसमें नींबू का रस लगाएं। नींबू का रस लगाने के बाद इसे पंद्रह मिनट तक छोड़ दें। इसके बाद सादे पानी से धो लें। इस प्रक्रिया को दिन में दो से तीन बार दोहरायें, आपको वो परिणाम मिलेंगे, जो आप चाहती हैं।

खरोंच और कटे में लाभकारी है ऐलो वेरा का जूस

अगर आपके घर में ऐलो वेरा का पौधा है, तो इसका मतलब छोटे-मोटे कटे और खरोंच के लिए आपके पास ''इंस्टेंट फर्स्ट ऐड'' का स्रेत है। बस, इसके ऐलो वेरा के पत्तों को तोड़ें और चिपचिपे जूस को सीधे घाव पर लगायें। घाव को ठीक करने के साथ ही ऐलो वेरा में त्वचा के दाग धब्बों को हल्का करने के गुण भी पाये जाते हैं। जब तक आपको परिणाम न मिलें तब तक दिन में दो से तीन बार ऐलो वेरा का ताजा जूस धब्बों पर लगाएं।

रिलैक्स करता है लेवेंडर ऑयल

अत्यधिक थकान और बेचैनी में शुद्ध लैवेंडर ऑयल काफी असरकारक साबित होता है। यह आराम और शांति पहुंचाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस मीठी सुगंध से भरपूर तेल में आपके अनचाहे धब्बों को दूर करने के गुण मौजूद हैं? यह सच हैं। सामान्य रूप से लेवेंडर ऑयल को प्रभावित स्थान पर दिन में दो-तीन बार लगायें। तेल को धीरे-धीरे त्वचा पर मलें।

जादुई असर वाला कोको बटर

दाग-धब्बों को कम करने का एक और होममेड ट्रीटमेंट है कोको बटर का इस्तेमाल। कोई भी लोशन ऐसा नहीं होता जिसमें थोड़ा सा कोको बटर का इस्तेमाल न किया गया हो लेकिन एक वास्तविक उत्पाद जादू कर सकता है। बस केवल आपको इस पुष्टिकर औषधि को धीरे-धीरे त्वचा के धब्बों पर दिन में दो-तीन बार मलना होगा।

वेलनेस टिप

एंटी-एजिंग, डी-टैन और क्लियर स्किन के लिए कोको बटर और हनी क्रीम पैक- यह काफी सामान्य लेकिन असरकारी क्रीम है। एक टेबलस्पून कोको बटर को आधा टेबलस्पून डार्क ऑर्गनिक शहद के साथ मिलाएं। इसमें दो-दो बूंद तिल और एप्रीकॉट ऑयल की डालें। इसे अच्छी तरह मिलाकर गाढ़े क्रीम का टेक्चर तैयार करें। इस क्रीम को चेहरे पर लगायें और तीन मिनट के लिए छोड़ दें। फिर हल्के गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। आपकी त्वचा नर्म और खूबसूरत दिखेगी।

- खुशबू जैन

सुंदर तथा स्लिम काया पाने के लिए अपनाएं ये उपाय

महिलाओं में अक्सर यह देखने को मिलता है कि वह खाद्य पदार्थ का सेवन तो काफी कम करती हैं लेकिन शरीर में मोटापा बढ़ता ही रहता है। मोटापा शरीर की बनावट ही नही बिगाड़ता बल्कि चेहरे की सुंदरता को भी कम कर देता है।यही नही, मोटापा सुडौलता को नष्ट करने के साथ-साथ कई गंभीर बीमारियों की वजह भी बनता है। किसी ने खूब ही कहा है की मोटापा और सुंदरता कभी भी एक साथ नही रहती। सच पूछिए तो पतले होने के लिए किए जा रहे प्रयास महिला वर्ग में फैशन ट्रेंड से बन गए हैं। मगर चिकित्सकों की सलाह है कि छरहरा दिखने के लिए भोजन में कटौती बिल्कुल भी ना करें बल्कि उसका स्वरूप बदलिए।आइए हम आपको बताते हैं छरहरी या स्लिम रहने के उपाय :

- प्रत्येक दिन सूर्य नमस्कार का आसन करें। इन सभी व्यायामों को करने से आप अपनी कमर से फालतू चर्बी कम कर सकती हैं।

- फर्श पर बैठकर बायें पैर को बायें और दाहिने पैर को दाहिनी ओर फैला लें। फिर दोनों हाथ से एक साथ पहले दायें पैर का अंगूठा छुएं, फिर बायें पैर का अंगूठा छुएं। इस व्यायाम को दस बार प्रत्येक दिन करें।

- तला भोजन खाना बंद करें। घी, मक्खन, तेलयुक्त पदार्थों का सेवन कम करें।

- पानी सौ समस्याओं का एक इलाज है। अधिक पानी पीने से भोजन को पचने में आसानी रहती है और शरीर के अनावश्यक पदार्थ गुर्दो द्वारा पानी के माध्यम से सरलता से बाहर चले जाते हैं, इसलिए दिन में कम से कम १० से १५ गिलास पानी जरूर पिएं।

- सीधी खड़ी हो जायें और दोनों पैरों के बीच कम से कम एक कदम का फासला रखें। धीरे-धीरे दाहिनी ओर झुकें और दाहिने घुटने को पकड़ें लेकिन घुटना सीधा रखें। शरीर को जितना आप झुका सकें दाहिनी ओर झुकायें। इसी तरह बायें हाथ से बायें घुटने को पकड़ें। इस व्यायाम को प्रत्येक दिन कम से कम दस बार करें।

आईआईटी के छात्र अब पहनेंगे खादी

नई दिल्ली । अब आईआईटी के छात्र खादी पहनकर उसकी ब्रांडिंग करेंगे । गांधी जयंती के मौके पर आईआईटी दिल्ली कैंपस में खादी का पहला आउटलेट खुलने जा रहा है । आईआईटी दिल्ली के बाद आईआईटी बॉम्बे समेत अन्य आईआईटी और विश्वविद्यालयों में भी ऐसे खादी के आउटलेट खुलेंगे । युवाओं में खादी को एक ब्रांड की तरह पहचान दिलवाने के मकसद से खादी इंडिया आईआईटी में आउटलेट खोल रहा है । खादी और ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अमृतकाल में भारत को एक रूप दिया है । भारत युवाओं का देश है, इसीलिए 'नए भारत की आधुनिक खादी' थीम पर युवाओं को फोकस करते हुए परिधानों की विशेष रेंज तैयार की गई है । खादी को युवाओं का ब्रांड बनाने के लिए राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) के टॉप डिजाइनर ने उनकी पसंद और मार्केट डिमांड के आधार पर विशेष फैब्रिक और डिजाइन तैयार किए हैं । इसमें कुर्ता-पाजामा, सूट आदि वेस्टर्न लुक पर भारतीयता को भी दर्शाते होंगे । खादी ने युवाओं के आधार पर तैयार विशेष डिजाइन इन परिधानों का बाकायदा उनके बीच फैशन शो और सर्वे में परखा भी है । युवाओं के बीच खादी ब्रांड की पहुंच के लिए आईआईटी दिल्ली कैंपस में खादी का देश में पहला आउटलेट बनकर तैयार हो गया है । यह देखने में कुछ-कुछ फैब इंडिया जैसा होगा । यहां पर कपड़ों के लिए शैंपू और क्रीम आदि भी मिलेंगे । आईआईटी दिल्ली कैंपस से गांधी जयंती के मौके पर खादी के पहले आउटलेट की शुरुआत हो रही है ।

आतिश ने दिल्ली के सरदार पटेल कोविड देखभाल केंद्र में अनियमितताओं की जांच के आदेश दिए

नई दिल्ली । दिल्ली की मंत्री आदेश ही ने मुख्य सतर्कता अधिकारी को 2020 में और स्थाई सरदार पटेल कोविड देखभाल सुविधा केंद्र की स्थापना में कथित तौर पर अनियमिताओं की जांच करने का निर्देश दिया है । दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस साल की शुरुआत में दिल्ली के मुख्य सचिव को केंद्र में एयर कंडीशनिंग सिस्टम स्थापित करने में शामिल कंपनी के वैधानिक बकाया के मुद्दे को देखने का निर्देश जारी किया था । इसी संबंध में आतिश ने 25 सितंबर को एक आधिकारिक आदेश जारी किया है । इस आदेश में कहा गया कि मामले के रिकॉर्ड की विस्तृत जांच में भ्रष्टाचार के आचरण गुप्त लेनदेन और भाईचारे का संदेह पैदा होता है । यह सभी कृत्य सुशासन के लिए पूरी तरह से प्रतिकूल है, जिन्हें किसी स्तर पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । आदेश में कहा गया है कि ऐसा लगता है की याचिका करता फर्म और जीएनसीटीडी के वरिष्ठ अधिकारियों ने मामले में मिली भगत की है । यह भी संदेह पैदा होता है कि अधिकारियों ने संबंधित कार्यों को पूरा करने के लिए निविदा देने के लिए फर्म से रिश्वत हासिल की होगी । इस मामले की वजह अगर होने के बाद मंत्री आदेश जी ने मुख्य सतर्कता अधिकारी को मामले की जांच करने भ्रष्ट आचरण में शामिल होने वाले अधिकारियों की पहचान करने के निर्देश दिए हैं । साथ ही मुख्य सतर्कता अधिकारी को मामले की एक विस्तृत रिपोर्ट भी सौंपनी होगी जिससे कि संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके ।

केरल में भारी बारिश जारी, आईएमडी का तीन जिलों के लिए 'येलो अलर्ट'

तिरुवनंतपुरम । केरल के विभिन्न इलाकों में सोमवार को भी भारी बारिश जारी रही जिससे लोगों को सामान्य जनजीवन पर असर पड़ा । भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने तीन जिलों पत्तनमथिट्टा, अलाप्पुझा और एर्नाकुलम में 'येलो अलर्ट' जारी किया है । आईएमडी छह से 11 सेंटीमीटर के बीच भारी बारिश के पूर्वानुमान पर येलो अलर्ट जारी करता है । वहीं, विभाग ने पांच अक्टूबर तक बारिश होने का अनुमान जताया है । राज्य में बीते तीन चार दिन से भारी बारिश जारी है जिससे कई स्थानों पर पेड़ों के उखड़ने, जलभराव और दीवारों के गिरने की घटनाएं सामने आई हैं । हालांकि, इस दौरान बड़ी संख्या में लोगों के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है । केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (केएसडीएमए) ने बताया कि बीते 24 घंटों में सबसे अधिक प्रभावित जिले पत्तनमथिट्टा, अलाप्पुझा, कोट्टायम, एर्नाकुलम और कोझिकोड रहे । प्राधिकरण ने रविवार को बताया कि अलाप्पुझा और कोट्टायम में एक-एक शिविर स्थापित किया गया है । बीते 24 घंटों में बारिश से संबंधित हादसों में 26 लोग प्रभावित हुए । भारी बारिश से पूर्व में अलप्पुझा जिले के कुट्टनाड क्षेत्र के एक छोटे से गांव एडथुआ में सैकड़ों एकड़ में फैले धान के खेत जलमग्न हो गए थे । आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने लगातार बारिश के चलते पहाड़ी इलाकों में रहने वाले लोगों से अतिरिक्त सतर्कता बरतने का आग्रह किया है ।

आईएसआईएस के संदिग्ध आतंकवादी शाहनवाज को दिल्ली पुलिस ने किया गिरफ्तार

नई दिल्ली । दिल्ली पुलिस ने राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के सर्वाधिक वांछित आतंकवादियों में से एक, शाहनवाज को गिरफ्तार कर लिया है । अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी । शाहनवाज के आतंकवादी संगठन आईएसआईएस के साथ कथित संबंध हैं । अधिकारियों ने बताया कि शाहनवाज पुणे पुलिस की हिरासत से भाग गया था और दिल्ली में रह रहा था । उस पर तीन लाख रुपये का इनाम घोषित था । एक अधिकारी ने बताया कि पेशे से इंजीनियर शाहनवाज को दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने गिरफ्तार कर लिया है और फिलहाल उससे पूछताछ की जा रही है । उन्होंने बताया कि आईएसआईएस मॉड्यूल से जुड़े और हिरासत में लिए गए चार-पांच अन्य संदिग्धों से भी पूछताछ की जा रही है । अधिकारी ने बताया कि शाहनवाज के शरीर पर कुछ रासायनिक पदार्थ पाया गया और इस पदार्थ को जब्त कर लिया गया है । उन्होंने कहा कि पुलिस ने आईईडी बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाली अन्य आपत्तिजनक सामग्री भी बरामद की है ।

गुवाहाटी को 59 करोड़ रुपये की लागत से बना जैविक उद्यान मिला

गुवाहाटी । असम के गुवाहाटी के निवासियों को उस जमीन पर 59 करोड़ रुपये की लागत से बना एक वनस्पति उद्यान मिल गया, जहां कभी केंद्रीय जेल हुआ करती थी । मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने 2.58 एकड़ में स्थित जलाशयों सहित 36 बीघा (लगभग 12 एकड़) के क्षेत्र में फैले वनस्पति उद्यान का उद्घाटन किया । उद्यान में 230 से अधिक देशी प्रजातियों की वनस्पतियों से संबंधित 85,000 पौधे हैं । साथ ही परिसर के अंदर औषधीय पौधों के लिए लगभग 2.08 एकड़ का एक समर्पित स्थान रखा गया है । उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए शर्मा ने रविवार को कहा, 'गुवाहाटी केंद्रीय जेल को लोखरा में स्थानांतरित करने के बाद शुरू में यह निर्णय लिया गया था कि खाली जमीन पर एक शॉपिंग मॉल का निर्माण किया जाएगा । 2016 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार के सत्ता में आने पर यह निर्णय लिया गया कि वहां एक सार्वजनिक उद्यान बनाया जाए ।' उन्होंने कहा कि वनस्पति उद्यान गुवाहाटी के निवासियों के लिए व्यापक खुली जगह प्रदान करेगा । शर्मा ने कहा, 'इसे एक उद्यान के रूप में संदर्भित करने के बजाय क्षेत्र की वनस्पतियों की स्वदेशी और दुर्लभ प्रजातियों के भंडार में बदलने के उद्देश्य से वनस्पति उद्यान का नाम दिया गया है ।' उन्होंने कहा कि उद्यान में 'गाइड' तैनात किए जाएंगे ताकि युवा पीढ़ी के लोगों को क्षेत्र की समृद्ध वनस्पति विरासत से परिचित कराया जा सके । मुख्यमंत्री ने गुवाहाटी को 'दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार' बनाने के लिए जारी और आगामी परियोजनाओं की भी जानकारी दी ।

देवरिया में जमीन के विवाद को लेकर एक ही परिवार के छह सदस्यों की हत्या

देवरिया जिले के रूद्रपुर क्षेत्र में जमीन के विवाद को लेकर सोमवार को सुबह दो पक्षों के बीच कथित रूप से जमीन के विवाद को लेकर एक ही परिवार के छह सदस्यों की हत्या कर दी गयी । पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा ने बताया कि रुद्रपुर थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव में आज सुबह करीब छह बजे जमीन के विवाद को लेकर सत्य प्रकाश दुबे और उसके परिवार के पांच सदस्यों की हत्या कर दी गयी । बताया जाता है कि इस वारदात को दो दिन पहले जिला पंचायत सदस्य प्रेम यादव की धारदार हथियार से हुई हत्या के प्रतिशोध में अंजाम दिया गया है । विशेष पुलिस महानिदेशक (कानून—व्यवस्था) प्रशांत कुमार ने बताया कि यादव के समर्थकों ने दुबे के घर पर हमला कर दिया, जिसमें दुबे सहित पांच लोग मारे गए । उन्होंने बताया कि दोनों पक्षों के बीच जमीन विवाद को लेकर दुश्मनी थी । कुमार ने बताया कि इस सिलसिले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना को संज्ञान में लेते हुए अधिकारियों को दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया है ।

भाजपा की सरकार बनने पर वह जनहित की किसी योजना को नहीं रोकेगी: मोदी

चित्तौड़गढ़, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस सरकार पर गत पांच साल में राजस्थान की साख को तबाह कर देने का आरोप लगाते हुए भरोसा दिलाया है कि प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बनने पर वह जनहित की किसी योजना को नहीं रोकेगी वहीं गुंडागर्दी, दंगे, बेईमानी एवं भ्रष्टाचार रोकेगी और हर गरीब का पक्का घर, महिला सुरक्षा एवं रोजगार लाकर समृद्ध राजस्थान बनायेगी।

श्री मोदी सोमवार को यहां जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूरा राजस्थान एवं मेवाड़ क्या सोच रहा है यहां साफ साफ दिखाई दे रहा है और राजस्थान ने आह्वान कर दिया है कि राजस्थान बचायेंगे भाजपा सरकार को लायेंगे। उन्होंने मेवाड़ एवं राजस्थान की पहचान अतिथि सत्कार, लोकसंगीत, लोक संस्कृति एवं शौर्य की है। एक-एक विरासत पर गर्व करने की है लेकिन गत पांच साल में कांग्रेस सरकार ने राजस्थान की साख को तबाह कर दिया है।

उन्होंने कहा कि जब अपराध की खबरे आती है तो बड़ा दुख होता है और वह दुखी मन से कह रहे है कि आज जब अपराध की बात आती है तो कौनसा राज्य शीर्ष पर आता है, यह हमारा राजस्थान आता है। इसी तरह महिलाओं, दलितों एवं पिछड़ों पर अत्याचार की बात

होती है तो राजस्थान नम्बर एक पर है।

उन्होंने कहा 'मैं जनता को दुख के साथ पूछना चाहता हूं कि आपने पांच साल पहले इसके लिए कांग्रेस को वोट दिया था। राजस्थान में कांग्रेस ने लोगों को भ्रम में डालकर सरकार तो बना ली लेकिन वह सरकार चला नहीं पाई।' उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अपनी कुर्सी बचाने में लगे रहे जबकि आधी कांग्रेस उनकी कुर्सी गिराने में लगी रही और जनता को अपने हाल पर छोड़ कर आपसी लड़ाई में ही लगे रहे। प्रधानमंत्री ने आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस मिलीभगत में लगी रही और उसने राजस्थान को लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी और पांच साल में कांगेस ने यही ही काम किया है। उन्होंने जनता से पूछा कि क्या राजस्थान में ऐसी सरकार रहनी चाहिए, एक दिन भी रहनी चाहिए, क्या ऐसी सरकार चलेगी।

उदयपुर-जयपुर वंदे भारत एक्सप्रेस को डिरेल करने की साजिश नाकाम ट्रैक पर मिले पत्थर-लोहे की कड़ी

भीलवाड़ा । उदयपुर-जयपुर वंदे भारत एक्सप्रेस सोमवार को दुर्घटना का शिकार होते-होते बच गई । दरअसल किसी ने ट्रेन के मार्ग पर भीलवाड़ा के पास रेलवे ट्रैक पर पत्थर मिले हैं । जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है । इस वीडियो में साफ देखा जा सकता है । ट्रेन के आगे रेलवे ट्रैक पर कुछ-कुछ दूरी पर पत्थर रखे हुए हैं । वीडियो में देखा जा सकता है कि ट्रेन से उतरकर कर्मचारी उन पत्थरों को हटाते दिख रहे हैं । पत्थरों के साथ ही इसमें लोहे की कड़ी भी दिख रही है । अगर इस पर ट्रेन चढ़ जाती तब कोई बड़ा हादसा हो सकता था । 24 सितंबर से उदयपुर-जयपुर वंदे भारत स्पेशल ट्रेन को उदयपुर से हरी झंडी दिखाई गई । ये ट्रेन उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर और जयपुर सहित राज्य के पांच जिलों से होकर गुजरेगी और रास?ते में किशनगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, चंदेरिया, मावली जंक्शन और राणा प्रताप नगर स्टेशनों पर रुकती है । बता दें ये ट्रेन ट्रायल के दौरान भी एक छोटे हादसे का शिकार हो गई थी । दरअसल जब इस वंदे भारत एक्सप्रेस का ट्रायल किया गया, तब रास्ते में मवेशी ट्रेन से टकरा गया । हालांकि इस हादसे में उसकी जान तब नहीं गई लेकिन ट्रेन के इंजन के फ्रंट नोज पैनल को नुकसान हुआ था । ये हादसा उस वक्त हुआ जब ट्रेन चित्तौड़ स्टेशन से दो किलोमीटर दूर थी ।

भाजपा की सरकारें महिला विरोधी अपराधों पर कभी जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करतीं: कांग्रेस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राजस्थान सरकार पर निशाना साधे जाने के बाद सोमवार को पलटवार करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राज्य सरकारें महिला विरोधी अपराधों के मामलों में जिम्मेदारी और जवाबदेही स्वीकार नहीं करतीं, जबकि उसकी सरकारें न्याय दिलाने के लिए तत्परता से काम करती हैं।

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि प्रधानमंत्री मोदी मणिपुर, उज्जैन और महिला पहलवानों पर अत्याचार की घटनाओं को लेकर एक शब्द नहीं बोलते, लेकिन चुनाव प्रचार के समय विपक्ष की सरकारों के खिलाफ 'झूठ' बोलते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कानून व्यवस्था, महिला अत्याचार सहित अन्य मुद्दों को लेकर राज्य की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि पांच साल में कांग्रेस की सरकार ने राजस्थान की साख को तबाह कर दिया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान के लोगों को भ्रम में डालकर कांग्रेस ने यहां सरकार तो बना ली लेकिन सरकार चला नहीं पाई। उन्होंने कहा, 'पांच साल राजस्थान में कांग्रेस ने यही किया है। हर भ्रष्टाचारी, गुंडा, दंगाई, अत्याचारी और कांग्रेस का हर नेता खुद को राजस्थान की सरकार मान बैठा है।' रमेश ने

प्रधानमंत्री पर पलटवार करते हुए 'एक्स' पर पोस्ट किया, 'प्रधानमंत्री मणिपुर पर एक शब्द भी नहीं बोलेंगे। वह उज्जैन का ज़िक्र नहीं करेंगे। वह महिला पहलवानों पर अत्याचार करने वाले अपनी ही पार्टी के सांसद के ख़िलाफ़ कार्रवाई नहीं करेंगे। न ही हमारे राष्ट्रीय चैंपियन्स के साथ दिल्ली पुलिस द्वारा की गई क्रूरता की निंदा करेंगे। लेकिन जब चुनाव प्रचार की बात आएगी, तब वह वही करेंगे जो सबसे अच्छा करते हैं - बेशर्मी से झूठ बोलना।' उन्होंने कहा, 'हमने सोचा था कि कम से कम गांधी जयंती के दिन प्रधानमंत्री देश को अपने झूठ और तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर पेश करने एवं बदनाम करने वाली राजनीति से बख्शेंगे।' रमेश ने दावा किया, 'रिकॉर्ड के लिए कांग्रेस पार्टी कभी भी महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा को नज़रअंदाज़ नहीं करेगी। राजस्थान सरकार ने सभी मामलों में अत्यंत तत्परता और गंभीरता के साथ न्याय दिलाने के लिए कार्रवाई की है और आगे भी करेगी। भाजपा सरकारें इसके विपरीत काम करती हैं, कभी भी ज़िम्मेदारी या जवाबदेही स्वीकार नहीं करतीं। यही अंतर है।'

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने स्वर्ण मंदिर में टेका मत्था

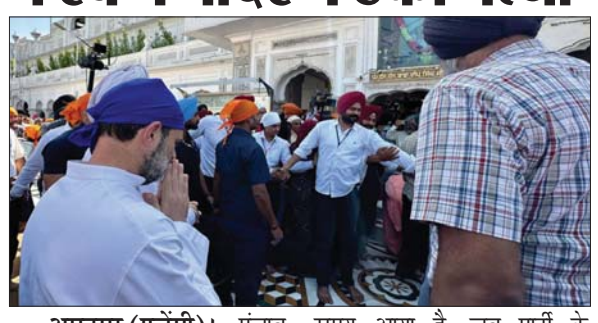

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब में सत्तारूढ़ आप के साथ झगड़े के बीच, कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने अपने निजी दौरे पर पवित्र सिख तीर्थस्थल स्वर्ण मंदिर पहुंचकर मत्था टेका। कांग्रेस नेताओं ने कहा, यह निजी दौरा है, राजनीतिक नहीं। यात्रा के दौरान, वह लंगर (सामुदायिक रसोई) में सेवा (स्वैच्छिक सेवा) करने वाले हैं। गांधी जयंती के अवसर पर अवकाश के कारण स्वर्ण मंदिर में सुबह से ही सैकड़ों श्रद्धालु प्रार्थना करने के लिए कतार में खड़े हैं।

राहुल के स्वर्ण मंदिर दौरे से एक दिन पहले, पार्टी के पूर्व राज्य प्रमुख नवजोत सिद्धू ने इंडिया गठबंधन के लिए वकालत की। उनका बयान उस समय आया है, जब पार्टी के अधिकांश नेता, जिनमें राज्य प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वारिंग और प्रताप सिंह बाजवा शामिल हैं, 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए आप के साथ गठबंधन का विरोध कर रहे हैं।

2015 के एनडीपीएस मामले में पार्टी विधायक सुखपाल खैरा की गिरफ्तारी ने आप और कांग्रेस के बीच विवाद को और बढ़ा दिया है। वहीं एक पोस्ट में, सिद्धू ने कहा, इंडिया गठबंधन एक ऊंचे पहाड़ की तरह खड़ा है...यहां और वहां कोई भी तूफान इसकी भव्यता को प्रभावित नहीं करेगा। हमारे लोकतंत्र की रक्षा के लिए इस ढाल को तोड़ने का कोई भी प्रयास निरर्थक साबित होगा।

बिहार में जातिगत जनगणना रिपोर्ट के आंकड़े देख गिरिराज सिंह ने साधा नीतीश सरकार पर निशाना

पटना (एजेंसी)। बिहार सरकार ने जाति आधारित जनगणना की रिपोर्ट जारी कर दी है। जैसे ही यह रिपोर्ट सामने आई वैसे ही बिहार में राजनीतिक सियासत गरमा गई है। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने इस ऐतिहासिक क्षण बताया। वहीं दूसरी तरफ भाजपा नेता गिरिराज सिंह ने नीतीश सरकार पर जमकर हमला बोला और उनसे कार्यकाल का रिपोर्ट कार्ड मांग लिया।

बिहार में जातिगत जनगणना की रिपोर्ट सामने आने के बाद केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने जमकर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना बिहार की गरीब जनता में भ्रम फैलाएगी। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने नीतिश सरकार के इस फैसले का समर्थन किया है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने बिहार में आई इस रिपोर्ट के बाद नीतीश कुमार पर हमला बोलते हुए उनसे बीते 15 वर्षों और लालू यादव को अपने 18 साल के कार्यकाल का रिपोर्ट कार्ड दिखाने की चुनौती दे दी है।

गिरिराज सिंह ने कहा कि दोनों नेताओं ने अपने कार्यकाल में गरीबों के लिए क्या काम किया उनका कितना उद्धार किया कितने लोगों को नौकरी दी यह सब भी जाहिर करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह रिपोर्ट सिर्फ एक भ्रम है इसके अलावा और कुछ भी नहीं।

बिहार में आई जातिगत जनगणना के रिपोर्ट के बाद कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने इसका पक्ष लिया है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि हम तो हमेशा से जातिगत जनगणना के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में जब सरकार बनेगी तो उसके बाद भी हम वहां जातिगत जनगणना करवाएंगे।

अहिंसा लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत: योगी

गोरखपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि अहिंसा लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूरी दुनिया देखा है।

श्री योगी ने यहां राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी और राष्ट्रहित में उनके अविस्मरणीय योगदान को याद करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। बापू के सत्य व अहिंसा के संदेश का स्मरण करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अहिंसा लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है।

गांधी जयंती पर मुख्यमंत्री ने टाउनहॉल स्थित उनकी प्रतिमा पर रामधुन के बीच माल्यार्पण व पुष्पांजलि कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके साथ ही देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर योगी ने शास्त्री चौक स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि कर उन्हें नमन किया। बापू की जयंती पर मुख्यमंत्री गोलघर के गांधी आश्रम भी पहुंचे और चरखा चलाकर उन्हें याद किया। सीएम ने गांधी आश्रम में सूत कातने की विधि को देखने, जानकारी लेने,

खादी व ग्रामोद्योग के उत्पादों का अवलोकन करने के बाद खादी के वस्त्र भी खरीदे। गांधी आश्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि अहिंसा लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूरी दुनिया इसे देख चुकी है। पूरा देश आजादी के महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 154वीं जयंती पर नमन कर रहा है। बापू ने उन्होंने पूरी दुनिया को सत्य व अहिंसा का मार्ग दिखाकर यह संदेश दिया कि लोकतांत्रिक मूल्यों का पालन करते हुए दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत को झुकाया जा सकता है। महात्मा गांधी ने स्वदेशी, सत्य व अहिंसा का पालन करते हुए उन अंग्रेजों को देश छोड़ने को मजबूर कर दिया, जिनके बारे में कहा जाता था कि उनके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर प्रदेश के सभी ग्राम पंचायतों व निकायों में स्वच्छांजलि का कार्यक्रम चल रहा है। स्वदेशी, स्वावलंबन, सत्य व अहिंसा का जो मार्ग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिखाया था, उसके साथ ही उनके लिए स्वच्छता का अभियान भी बहुत महत्वपूर्ण था। स्वच्छांजलि का कार्यक्रम बापू के इसी अभियान से प्रेरित है। देश के द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को नमन करते हुये उन्होंने कहा कि जय जवान-जय किसान का उद्घोष कर सुरक्षा के साथ आत्मनिर्भरता के प्रति आह्वान करने वाले शास्त्री जी बापू के परम अनुयायी भी थे। आज देश व समाज में उनके योगदान को नमन करने का भी अवसर है। इस अवसर पर सांसद रविकिशन शुक्ल, महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक विपिन सिंह, प्रदीप शुक्ल, एमएलसी डॉ धर्मेंद्र सिंह, भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानंद राय, जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह, महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता आदि भी मौजूद रहे।

झारखंड में भारी बारिश, आकाशीय बिजली गिरने से आठ लोगों की मौत

रांची । झारखंड में भारी बारिश और आकाशीय बिजली गिरने के कारण पिछले 24 घंटे में रांची निवासी एक व्यक्ति सहित कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई । एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी । झारखंड के कई हिस्सों में शनिवार शाम से लगातार बारिश हो रही है, जिससे कई पुलिया क्षतिग्रस्त हो गईं और कई लोगों की जान भी चली गई । रांची के लालपुर इलाके में रविवार को एक 28 वर्षीय युवक उफनते नाले में गिर गया और उसका शव सोमवार की सुबह घटनास्थल से लगभग 2.5 किमी दूर बरामद किया गया । मृतक की पहचान देव प्रसाद उर्फ छोटू के रूप में हुई । गोंडा पुलिस थाना प्रभारी रवि ठाकुर ने बताया, 'व्यक्ति का शव आज सुबह बरामद किया गया । वह रविवार को भारी बारिश के कारण उफनते नाले में गिर गया था ।' पुलिस ने बताया कि झारखंड के जामताड़ा जिले में रविवार को आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला और तीन बच्चों की मौत हो गई । बच्चों की उम्र डेढ़ से सात साल बताई जा रही है । नारायण पुलिस थाने के प्रभारी दिलीप कुमार ने बताया कि यह घटना चंदाडीह लखनपुर की है ।

9 लाख किमी का सफर तय करके आदित्य एल-1 पहुंचने वाला है मंजिल पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इसरो ने एक बड़ा अपडेट देते हुए कहा है कि अब कुछ ही दिनों में आदित्य एल1 अपनी मंजिल पर पहुंचने वाला है। मिली जानकारी के अनुसार इसरो द्वारा सूर्य पर भेजा गया आदित्य-एल1 तेजी से सूरज की तरफ बढ़ रहा है, जो इसरो के साथ-साथ पूरे देश को गौरवान्वित करने वाला है। इसरो ने आदित्य-एल1 को लेकर हाल ही में एक बड़ा अपडेट दिया है, जिससे हर भारतीय की खुशी बढ़ सकती है। पूरी दुनिया की नजर अब चंद्रयान-3 के बाद इसरो के सोलर मिशन पर टिकी हुई है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कहा कि 'आदित्य-एल1' अंतरिक्ष यान पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव क्षेत्र से सफलतापूर्वक बाहर निकलकर धरती से 9.2 लाख किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर चुका है। राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी ने 'एक्स' पर कहा कि अब यह सूर्य-पृथ्वी लैग्रेंजियन बिंदु 1 (एल1) की ओर अपना मार्ग तय कर रहा है। इसरो ने कहा कि यह लगातार दूसरी बार है कि पृथ्वी के प्रभाव क्षेत्र के बाहर एक अंतरिक्ष यान भेजा। इससे पहले मंगल ऑर्बिटर मिशन को भेजा गया था। वहीं यह लगातार पांचवीं बार है जब इसरो ने किसी वस्तु को किसी अन्य खगोलीय पिंड या अंतरिक्ष में स्थान की ओर सफलतापूर्वक स्थानांतरित किया है।। इसने अपने अंतरिक्ष यान को तीन बार चंद्रमा की ओर और एक बार मंगल पर भेजा है।

बता दें कि इसरो ने देश के पहले सूर्य मिशन के तहत 'आदित्य एल1' यान को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र से पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी)-सी57 के जरिये दो सितंबर को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया था। 'आदित्य एल1' सात पेलोड लेकर गया है, जिनमें से चार सूर्य के प्रकाश का निरीक्षण करेंगे और शेष तीन प्लाज्मा और चुंबकीय क्षेत्र के इन-सीटू मापदंडों को मापेंगे। भारत के इसरो ने 2 सितंबर को ही अंतरिक्ष में लैग्रेंज बिंदु एल1 के लिए 'आदित्य एल1' के लगभग 15 लाख किलोमीटर की दूरी तय कर लैग्रेंजियन बिंदु 'एल1' के आसपास 'हेलो' कक्षा में स्थापित होने की उम्मीद है, जिसे सूर्य के सबसे करीब माना जाता है।

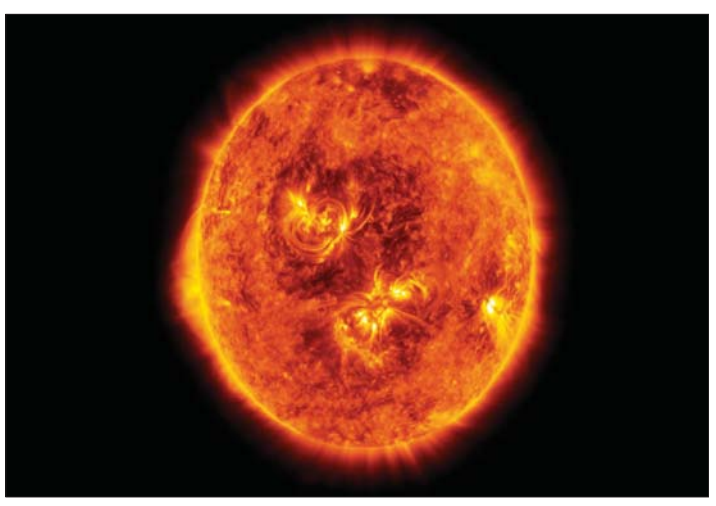

बम हमले के बाद तुर्की ने इराक में पीकेके के खिलाफ शुरू किये हवाई हमले

अंकारा। तुर्की सेना ने उत्तरी इराक में हवाई हमले किए और प्रतिबंधित कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी (पीकेके) के 20 ठिकानों को नष्ट कर दिया। देश के रक्षा मंत्रालय ने रविवार शाम एक बयान में कहा, तुर्की के हवाई हमलों ने गारा, हाकुर्क, मेटिना और कंदील में पीकेके ठिकानों को निशाना बनाया। सैन्य अभियान रविवार सुबह दो हमलावरों द्वारा राजधानी अंकारा में तुर्की के आंतरिक मंत्रालय की इमारत के सामने बम हमले का प्रयास करने के बाद आया, जिसमें दो पुलिस अधिकारी मामूली रूप से घायल हो गए। आत्मघाती बम विस्फोट करने के बाद एक हमलावर की मौत हो गई, जबकि दूसरे को पुलिस ने गोली मार दी। आंतरिक मंत्रालय ने कहा कि हमलावरों में से एक की पहचान पीकेके के सदस्य के रूप में की गई है और दूसरे की पहचान निर्धारित करने के लिए जांच चल रही है। तुर्की सेना अक्सर पीकेके के खिलाफ उत्तरी इराक में जमीनी कार्रवाई, हवाई हमले और तोपखाने बमबारी करती रहती है, खासकर समूह के मुख्य आधार कंदील पर्वत में। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा आतंकवादी संगठन के रूप में सूचीबद्ध पीकेके तीन दशकों से अधिक समय से तुर्की सरकार के खिलाफ विद्रोह कर रहा है।

फिलीपींस के मिंडानाओ में आया 5.2 तीव्रता का भूकंप

मनीला, । फिलीपींस के मिंडानाओ में रविवार को 2254 (जीएमटी) पर 5.2 तीव्रता का भूकंप आया। जीएफजेड जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज ने यह जानकारी दी। भूकंप का केंद्र, 10.0 किमी की गहराई के साथ, शुरू में 8.13 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 126.69 डिग्री पूर्वी देशांतर पर निर्धारित किया गया।

मेक्सिको में सड़क दुर्घटना में 10 क्यूबाई प्रवासियों की मौत

मेक्सिको सिटी। क्यूबा के 27 नागरिकों को ले जा रहा एक मालवाहक ट्रक दक्षिण मेक्सिको के सीमावर्ती राज्य चियापास में पलट गया। जिससे उसमें सवार 10 महिलाओं की मौत हो गई और 17 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। नेशनल माइग्रेशन इंस्टीट्यूट ने यह जानकारी दी। एजेंसी ने कहा कि पिजिजियापान-टोनाला राजमार्ग के तटीय क्षेत्र में सुबह-सुबह यह दुर्घटना हुई। बताया गया है कि, 'प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, चालक तेज गति से गाड़ी चला रहा था, उसने इकाई पर नियंत्रण खो दिया और पलट गई।' उन्होंने बताया कि चालक फरार हो गया। बचाव दल ने घायलों में से 16 को पिजिजियापान शहर के एक अस्पताल में और अन्य को हुइक्स्टला शहर में स्थानांतरित कर दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका पहुंचने के इच्छुक प्रवासियों के लिए मेक्सिको एक सामान्य पारगमन मार्ग है।

जिम्बाब्वे में विमान हादसा, भारतीय खनन कारोबारी और उसके बेटे समेत छह लोगों की मौत

जोहानिसबर्ग। दक्षिण-पश्चिमी जिम्बाब्वे में एक निजी विमान तकनीकी खराबी के कारण हीरे की एक खदान के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे उसमें सवार एक भारतीय खनन कारोबारी और उसके बेटे सहित छह लोगों की मौत हो गई। मीडिया में प्रकाशित खबरों से यह जानकारी सामने आई है। समाचार वेबसाइट 'आईहरारे' ने अपनी खबर में बताया कि मशावा के जवामहांडे इलाके में हुए विमान हादसे में खनन कंपनी 'रियोजिम' के मालिक हरपाल रंधावा, उनके बेटे और चार अन्य लोगों की मौत हो गई। 'रियोजिम' सोने और कोयले का उत्पादन करने के साथ-साथ निकल और तांबे को परिष्कृत करने वाली एक प्रमुख खनन कंपनी है। खबर के मुताबिक, 'रियोजिम' के स्वामित्व वाला सेसना 206 विमान शुक्रवार को हरारे से मुरोवा हीरा खदान की ओर जा रहा था, तभी यह दुखद हादसा हुआ। एकल इंजन वाला विमान मुरोवा डायमंड खदान के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसकी सह-मालिक 'रियोजिम' है। खबर के अनुसार, जवामहांडे में पीटर फार्म में गिरने से पहले विमान में तकनीकी खराबी आ गई, जिसके चलते उसमें संभवत हवा में विस्फोट हो गया। इसमें बताया गया है कि हादसे में विमान में सवार सभी यात्रियों और चालक दल के सदस्यों की मौत हो गई। 'द हेराल्ड' अखबार ने पुलिस के हवाले से प्रकाशित खबर में बताया कि हादसे में मारे गए चार लोग विदेशी, जबकि दो अन्य जिम्बाब्वे के नागरिक थे। पुलिस ने अभी तक मृतकों के नाम जारी नहीं किए हैं, लेकिन रंधावा के दोस्त और पेशे से पत्रकार एवं फिल्म निर्माता होपवेल चिनोनो ने हादसे में उनकी मौत की पुष्टि की है।

अमेरिका : रेडमंड में मनाया गया गणेशोत्सव

वाशिंगटन । भारतीय-अमेरिकियों ने विश्व की अग्रणी सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट के मुख्यालय रेडमंड में गणेशोत्सव मनाया और इस दौरान भगवान गणेश की 15 फुट की मूर्ति की पूजा-अर्चना की। इस मूर्ति को भक्तों ने 'रेडमंड राजा' नाम दिया है। इस कार्यक्रम में लगभग 20,000 भारतीय-अमेरिकी शामिल हुए। यह मूर्ति रेडमंड के पार्क के बीचों-बीच एक भव्य मंच पर स्थापित की गई। इस मंच की साज-सज्जा किसी भारतीय महल की याद दिलाती है। इस मौके पर स्थानीय संगीतकारों के समूह 'बीट्स ऑफ रेडमंड' के 150 से अधिक कलाकारों ने ढोल-ताशा बजाकर गणपति की पूजा-अर्चना की। 'बीट्स ऑफ रेडमंड' 2019 से सिएटल के इस उपनगर में वार्षिक उत्सव का आयोजन कर रहा है। इस समूह की स्थापना दीपाली साने और आनंद यशवंत साने से की थी। भगवान गणेश की इस मूर्ति को कुशल कारीगर सुशांत ने भारत के मुंबई में बनाया और वहां से इसे रेडमंड लाया गया। मूर्ति को 40 फुट के भव्य मंच पर स्थापित किया गया। इस दौरान स्वयंसेवकों ने प्रसाद के रूप में 12,000 से अधिक लड्डू और 1,000 फल वितरित किए। इस उत्सव में कई स्थानीय नेता भी शामिल हुए। सैन फ्रांसिस्को में भारत के महावाणिज्यदूत के. श्रीकर रेड्डी ने भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार और सामुदायिक एकता को बढ़ावा देने में इस त्योहार के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने यह 'यादगार' कार्यक्रम आयोजित करने के लिए 'बीट्स ऑफ रेडमंड' की सराहना की। एक मीडिया विज्ञप्ति में बताया गया कि रेड्डी ने सिएटल महानगरीय क्षेत्र में एक नया भारतीय वाणिज्य दूतावास खोले जाने की भी घोषणा की।

फिरौन सहुरा के पिरामिड के गुप्त कमरों का खुलासा

काहिरा । वैज्ञानिकों ने मिस्र के पांचवें राजवंश के फिरौन सहुरा के पिरामिड के गुप्त कमरे खोजे हैं, जो इसके प्राचीन रहस्यों को उजागर कर सकते हैं। बताया जा रहा है कि यह पिरामिड 4400 साल पहले फिरौन सहुरा के सम्मान में बनाया गया था। नई खुदाई से 8 स्टोरेज रूम का पता चला है, जिनके बारे में पहले कोई जानकारी नहीं थी। एक रिपोर्ट के अनुसार, वुर्जबर्ग के जूलियस मैक्सिमिलियंस यूनिवर्सिटीएट की एक टीम ने इन कमरों को खोजा है। उनकी जांच में कई स्टोरेज रूम्स का पता चला, जिनका पहले डॉक्यूमेंटेशन नहीं किया गया था। डॉक्टर मोहम्मद इस्माइल खालिद इस टीम को लीड कर रहे थे। उनका कहना है कि, 'यह खोज सहुरा पिरामिड और इसके एतिहासिक महत्व को समझने में एक मील का पत्थर साबित हो सकती है।' सहुरा का पिरामिड 26वीं से 25वीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में सहुरा के लिए बनाया गया था, जो पांचवें राजवंश के दूसरे राजा और अबुसिर में दफनाए जाने वाले पहले राजा थे। सहुरा का शासनकाल शांति और समृद्धि के लिए जाना जाता था। यह बताया जाता है कि सहुरा ने अपने पड़ोसी देशों के साथ व्यापार किया। उसने एक नौसेना भी बनाई थी और खदानें भी खोलीं ।पिरामिड की खुदाई सबसे पहले 1836 में कर्नल हॉवर्ड वायस के अधीन काम करने वाले एक इंजीनियर जॉन पेरिंग ने की थी, इसके बाद 1907 में मिस्रविज्ञानी लुडविग बोरचर्ड ने इसकी और खोज की। 100 से अधिक सालों बाद अब वैज्ञानिकों ने एक बार फिर प्राचीन पिरामिड के अंदर कदम रखा है। डॉक्टर खालिद की टीम ने शुरुआत में पिरामिड की संरचना को स्थिर करने और इसे ढहने से रोकने का काम शुरू किया। इसके बाद वैज्ञानिकों ने 3डी लेजर स्कैनिंग का उपयोग करके पिरामिड के अंदर डिटेल्ड सर्वे किया। इससे वे इस जगह के बाहरी क्षेत्रों और अंदर के गलियारों और कमरों का मैप बना पाए। जब वे इनके अंदर गए तो वहां का नजारा देख कर दंग रह गए। इन कमरों की छतें और फर्श 'बुरी तरह क्षतिग्रस्त' हैं, और यह साफ नहीं है कि वहां वास्तव में क्या स्टोर किया गया था।

केंद्रीय मंत्री एस जयशंकर का मुरीद हुआ अमेरिका

, विदेश मंत्री की तारीफ कर बताया उन्हें मॉडर्न अमेरिका भारत संबंधों का वास्तुकार

वाशिंगटन (एजेंसी)। केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर अमेरिका के दौरे पर है। अमेरिका के दौरे के दौरान भारत के विदेश मंत्री ने मोदी सरकार में भारत और अमेरिका के संबंधों को एक अलग स्तर पर ले जाने की बात कही थी। विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों देशों के रिश्ते चंद्रयान की तरह ही चांदी या उससे भी ऊपर तक पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि भारत अमेरिका संबंध अब तक के उच्चतम स्तर पर हैं। मोदी सरकार इसे अलग स्तर पर ले जाने की तैयारी में जुटी हुई है।

भारत अमेरिका रिश्तों को लेकर इस सोच को रखना वाले जयशंकर का अब अमेरिका मुरीद हो गया है। एस जयशंकर की अमेरिकी यात्रा के बाद अमेरिकी प्रशासन ने एस जयशंकर की जमकर तारीफ की है। बाइडेन प्रशासन ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच संबंधों को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए एस जयशंकर ने आधुनिक रिश्तों के वास्तुकार की तरह अहम भूमिका निभाई है। जानकारी के मुताबिक जयशंकर शनिवार को भारतीय दूतावास में आयोजित कार्यक्रम के दौरान भारत वंश को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि जी-20 का सफल आयोजन अमेरिका के समर्थन के बिना होना संभव नहीं था। उन्होंने कहा कि अगर जी-20 के सदस्य इसके सफलता के लिए काम नहीं करते तो सब का साथ आ पाना मुश्किल था।

बता दे की विदेश मंत्री एस जयशंकर 22 सितंबर से 30 सितंबर तक अमेरिका की यात्रा पर थे। इस यात्रा के दौरान संयुक्त राष्ट्र महासभा की 78 वे सत्र को उन्होंने न्यूयॉर्क में भी संबोधित किया। बता दें कि भारतीय दूतावास में आयोजितकार्यक्रम में जयशंकर के लिए ये बाते कही गई है। इस कार्यक्रम में अमेरिकी सर्जन जनरल विवेक मूर्ति, राज्य के उप सचिव रिचर्ड वर्मा, राष्ट्रपति बाइडेन की घरेलू नीति सलाहकार नीरा टंडन, व्हाइट हाउस ऑफिस के राष्ट्रीय औषधि नियंत्रण नीति के निदेशक डॉ राहुल गुप्ता और नेशनल साइंस फाउंडेशन के निदेशक डॉ. सेथुरमन पंचनाथन शामिल हुए थे।

पूर्व राष्ट्रपति को जेल से निकालकर नजरबंद किया गया

माले (मालदीव) मालदीव के राष्ट्रपति चुनाव में मोहम्मद मुइज़ के निर्वाचित होने के साथ ही पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन को जेल से निकालकर घर में नजरबंद कर दिया गया है। पूर्व राष्ट्रपति यामीन अपने कार्यकाल (2013 से 2018 तक) के दौरान रिश्वतखोरी और धनशोधन के आरोपों के तहत जेल में बंद हैं। मुइज़ पूर्व राष्ट्रपति यामीन की पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार थे। जेल से घर में नजरबंद करने का 'स्थानांतरण आदेश' निवर्तमान राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह ने निर्वाचित राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज़ के अनुरोध पर दिया है। मुइज़ 17 नवंबर को शपथ लेंगे। चुनाव आयोग ने शनिवार को हुए मतदान के औपचारिक परिणाम रविवार को जारी किए, जिसमें मुइज़ को 54.04 प्रतिशत वोट मिले, जबकि सोलिह को 45.96 प्रतिशत वोट से संतोष करना पड़ा। चुनाव का पहला दौर सितंबर के पूर्वार्द्ध में सम्पन्न हुआ था, जिसमें आठ उम्मीदवारों में से किसी को भी 50 प्रतिशत से अधिक मत हासिल नहीं हुए थे।

26/11 का बदला होगा पूरा...भारत ने कर दिया यूएस के 'लादेन' स्टाइल वाला ऑपेरशन!

ग्लोबल टेरेरिस्ट मक्की को पाकिस्तान से कौन उठा ले गया?

वाशिंगटन (एजेंसी)। पुरानी कहावत है कि जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है वह कभी ना कभी उसमें खुद गिरता है। यह बात पाकिस्तान पर इस समय बिल्कुल सही फिट हो रही है। पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ साज़िशें रचने के लिए आतंकियों की फैक्ट्री लगाई। उन्हें खाद पानी दिया। आज वही आतंकी उसके लिए बर्बादी का सबब बनते जा रहे हैं। लेकिन अब मामला इससे भी एक कदम आगे बढ़ गया है। मुंबई हमले का मास्टरमाइंड और आतंकियों का हेड मास्टर हाफिज सहित आज डरा-सहमा हुआ है। उसे मौत का डर सता रहा है क्योंकि एक के बाद एक उसके अपने ही परिवार वाले और खास आतंकी मारे जा रहे हैं। ऐसे में अब सवाल उठने लगे हैं कि क्या अगला नंबर हाफिज सईद का है?

क्या सच में गायब है आतंकी मक्की?

अब्दुल रहमान मक्की जिसे इसी साल संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक आतंकी घोषित किया था वो लापता बताया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट की माने तो पाकिस्तान से उसके गायब होने की खबर है। आपको बता दें कि ग्लोबल टेरेरिस्ट होने के साथ-साथ अब्दुल रहमान मक्की 26/11 हमले के मास्टरमाइंड और भारत के मोस्ट वांटेड आतंकी हाफिज सईद का बहनोई है। हालांकि हम इस खबर की पुष्टि नहीं कर रहे हैं। लेकिन कई सोशल मीडिया हैंडल और मीडिया रिपोर्ट्स में इस तरह का दावा किया जा रहा है ग्लोबल टेरेरिस्ट मक्की पाकिस्तान से गायब है और उसे कुछ लोग अपने साथ ले गए हैं। पिछले हफ्ते इसी तरह हाफिज सईद के बेटे कमालुद्दीन के भी गायब होने की खबर सामने आई थी। इसके बाद कई मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया कि कमालुद्दीन की हत्या कर दी गई।

कौन है अब्दुल रहमान मक्की

अब्दुल रहमान मक्की लश्कर-ए-तैयबा के सरगना हाफिज सईद का रिश्तेदार है। वो लश्कर के राजनीतिक मामलों का भी अध्यक्ष है और सईद का बेहद ही करीबी बताया जाता है। 26/11 के मुंबई आतंकी हमले की साजिश रचने में भी अब्दुल रहमान मक्की शामिल था। कश्मीर में आतंकी योजना बनाना, युवाओं को ब्रेनवॉश कर आतंकी बनाने का काम भी मक्की किया करता था। आतंक के लिए धन जुटाने का जिम्मा भी मक्की के पास है। अमेरिका की तरफ से 2 मिलियन डॉलर का इनाम इस पर रखा गया है। स्लीपर सेल के लिए भी अब्दुल रहमान मक्की शामिल है। जुलाई 2019 में जब एफएटीएफ की तरफ से पाकिस्तान पर दवाब के बाद हाफिद सईद और अब्दुल रहमान मक्की समेत 13 जमात के आतंकी पर पाकिस्तान में कई केस बने और सजा हुई। फिर उन्हें जेल में भी डाला गया। जमात उत दावा में मक्की को प्रोफेसर मक्की के रूप में भी जाना जाता है।

2006 से ही भारत में आतंकी हमले में रहा शामिल

मक्की का नाम पहली बार भारत में तब सुना गया जब देश 26/11 जैसे खतरनाक हमलों से दहल गया था। मक्की इन हमलों का एक मास?टरमाइंड था। गृह मंत्रालय की तरफ से साल 2022 में बताया गया था कि 74 साल का मक्की साल 2006 से ही भारत में आतंकी हमलों में शामिल रहा है। पाकिस्तान के आधिकारिक रेकॉर्ड में मक्की की जन्म की दो तारीखें दर्ज हैं। 10 दिसंबर 1954 और दूसरी है 10 दिसंबर 1948 और कई सुरक्षा अधिकारी मानते हैं कि यह सिर्फ विदेशी सुरक्षा एजेंसियों को गुमराह करने के लिए ही है।

ऋषि सुनक जुटे आधार को मजबूत करने में, अगले पीएम की रेस में शामिल

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में अगले पीएम की रेस में शामिल ऋषि सुनक इस समय अपना आधार मजबूत करने में जुटे हुए हैं। वे इस सप्ताह के अंत में कंजर्वेटिव पार्टी के सम्मेलन में इसलिए जा रहे हैं कि वह ब्रिटेन को यह विश्वास दिलाना चाहते है कि वह अगला आम चुनाव जीत सकते हैं। उनके स्वयं के कई लॉमेकर्स पहले से ही उस परिदृश्य के लिए तैयारी कर रहे हैं जिसमें वह नहीं हैं। प्रधानमंत्री सुनक ने हाल के दिनों में अपने आधार को मजबूत करने की कोशिश की है। वह ब्रिटेनवासियों के लिए लागत कम करने के नाम पर ग्रीन उपायों पर वापस आ गए हैं और ब्रिटेन की प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजना एचएस2 हाई-स्पीड रेल लिंक के पुनर्मूल्यांकन पर विचार कर रहे हैं। लेकिन राष्ट्रीय सर्वेक्षणों से पता चलता है कि जनवरी 2025 तक होने वाले आम चुनावों के बाद वह ब्रिटेन के पीएम नहीं होंगे। सर्वे में लेबर पार्टी को एक वर्ष से अधिक समय से बढ़त लेते हुए दिखाया गया है। हाल के कुछ सर्वेक्षणों में ऋषि सुनक को पिछड़ते हुए दिखाने के बाद, यूगोव ने इस सप्ताह लेबर पार्टी को 21 अंकों की बढ़त दी। वहीं दो दर्जन से अधिक कंजर्वेटिव सांसदों, सलाहकारों और डोनर्स के साक्षात्कार के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि 43 वर्षीय सुनक ने फिलहाल आंतरिक चुनौती के खतरे को दबा दिया है।

इस मामले में जानकारों ने कहा है कि कम से कम 13 संभावित दावेदारों पर नजर रखनी होगी। पीएम सुनक के समर्थकों का कहना है कि उनकी टीम का ध्यान उनके प्रीमियरशिप को सफल बनाने पर है और जो चीज नियंत्रण से परे है, ऐसी घटनाओं से कभी विचलित नहीं होना है। ऋषि सुनक के सहयोगियों ने कहा है कि वे प्रधानमंत्री का समर्थन करने के लिए काम कर रहे हैं और टोरी पार्टी को चुनाव में जीताने पर फोकस कर रहे हैं। कुछ टोरी सदस्य सोचते हैं कि अगर लेबर पार्टी पूर्ण बहुमत हासिल करने में विफल रहती है तो सुनक तब भी जीत हासिल कर सकते हैं या पद पर बने रह सकते हैं।

ब्राजील के राष्ट्रपति लूला कूल्हे की सर्जरी के बाद आधिकारिक आवास लौटे

(एजेंसी)। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डी सिल्वा को रविवार को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। कूल्हे के प्रतिरोपण के लिए उनकी दो दिन पहले सफल सर्जरी हुई थी और पूरी तरह से स्वस्थ होने तक वह घर से काम करेंगे।

लूला ने 'एक्स' पर एक बयान में कहा कि वह राजधानी ब्रासीलिया में राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास लौट आए और आगामी हफ्तों में वह यहीं से काम करेंगे। उन्होंने पूर्व में कहा था कि पिछले साल अगस्त से उनके कूल्हे में दर्द था। लूला (77) का ऑपरेशन शुक्रवार को हुआ था। लूला ने 'एक्स' पर लिखा, ''आप सभी की प्रार्थनाओं और संदेशों के लिए शुक्रिया। मैं स्वस्थ हो रहा हूं तथा ब्राजील के लिए और अधिक काम करता रहूंगा।'' उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा कि अब वह मैराथन दौड़ना चाहते हैं। लूला के चिकित्सकों ने इससे पहले रविवार को एक मेडिकल बुलेटिन में कहा था कि राष्ट्रपति किसी मदद के सहारे सीढ़ियां चढ़ और उतर पा रहे हैं।

नोबेल पुरस्कार 2023 का हुआ एलान, कोरोनावायरस वैक्सीन से जुड़ी खोज करने के लिए दिया गया पुरस्कार

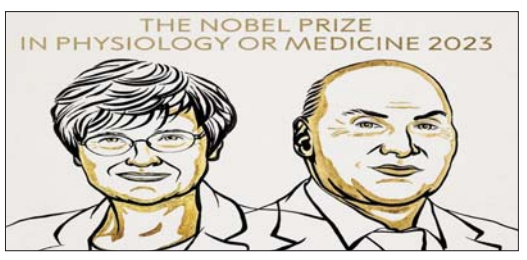

वाशिंगटन (एजेंसी)। कोरोनावायरस महामारी को रोकने के लिए वैक्सीन विकसित करने वाले दो वैज्ञानिकों को चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया है। वैज्ञानिक काटोलिक करिको और ध्रुव विडमैन को संयुक्त रूप से चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार दिया गया है। दोनों वैज्ञानिकों ने दुनिया की सोच अपनी वैक्सीन के निर्माण से बदल दी। उनकी खोज के बाद दुनिया भर के वैज्ञानिक शरीर में होने वाले इम्यून सिस्टम के एक्शन और रिएक्शन को बेहतर ढंग से समझ सके थे। नोबेल समिति के सचिव थॉमस पर्लमैन ने कोरोलिंस्का संस्थान में विजेता की घोषणा की।

गौरतलब है कि पूरी दुनिया जब कोरोनावायरस संक्रमण की महामारी से जूझ रही थी, इस दौरान इन्हें वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसी खोज की जिससे पूरी दुनिया को बहुत अधिक मदद मिली। कोरोना के फैलने पर लोग परेशान थी क्योंकि इसका कोई इलाज उपलब्ध नहीं था। दुनिया भर के वैज्ञानिक इस घातक बीमारी से बचने के लिए दवाई खोजने में जुटे हुए थे। कोरोना के कारण दुनिया भर के सभी देश धीरे-धीरे तबाह हो रहे थे। इस घातक बीमारी नहीं करूं लोगों की जान ले ली। ऐसे में वैज्ञानिकों के ऊपर दबाव बेहद अधिक था कि वह जल्द से जल्द यानी कम समय में ऐसी वैक्सीन को निर्मित करें जिससे कोविड महामारी को रोका जा सके।

बता दें कि दोनों वैज्ञानिकों को न्यूक्लियोसाइड बेस संशोधनों से संबंधित उनकी खोज के लिए यह नोबेल पुरस्कार मिला है जिससे कोरोनावायरस के खिलाफ प्रभावी एमआरएनए टीको विकसित किया गया था। नोबेल समिति के सचिव थॉमस पर्लमैन ने कोरोलिंस्का संस्थान में विजेता की घोषणा की। बता दें कि नोबेल पुरस्कारों की घोषणा चिकित्सा के साथ हो गई है। अब मंगलवार को भौतिक, बुधवार को रसायन विज्ञान और गुरुवार को साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार की घोषणा की जाएगी। वहीं शुक्रवार को शांति पुरस्कार शनिवार को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में विजेता की घोषणा की जाएगी। बता दें कि नोबेल पुरस्कार जीतने वाले विजेताओं को 11 मिलियन स्वीडिश क्रोनर यानी कि एक मिलियन अमेरिकी डॉलर का पुरस्कार दिया जाता है। बता दे कि यह धनराशि संस्थापक और स्वीडिश आविष्कारक अल्फ्रेड नोबेल द्वारा छोड़ी गई वसीयत से प्राप्त होती है। वर्ष 1896 में अल्फ्रेड नोबेल का निधन हो गया था।

वैश्विक शक्ति-साझाकरण ढांचे में जगह पाने के लिए राजनीतिक प्रक्रिया में हिस्सा लें हिंदू : स्वामी विज्ञानानंद

वाशिंगटन (एजेंसी)। प्रभावी हिंदू धार्मिक नेता स्वामी विज्ञानानंद ने बैंकॉक में हिंदू समुदाय की एक वैश्विक बैठक से पहले कहा है कि वैश्विक शक्ति-साझाकरण ढांचे में जगह पाने के लिए हिंदुओं को राजनीतिक प्रक्रिया में हिस्सा लेना चाहिए।

स्वामी विज्ञानानंद 'वर्ल्ड हिंदू फाउंडेशन' के संस्थापक एवं वैश्विक अध्यक्ष हैं। यह संगठन चार साल में एक बार विश्व हिंदू कांग्रेस का आयोजन करता है। उन्होंने कहा कि आधुनिक दुनिया में हिंदू केवल भांगड़ा, डांडिया और प्राणायाम (सांसों को नियंत्रित करने की प्राचीन प्रथा) के माध्यम से अपनी पहचान नहीं बना सकते। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) से स्नातक विज्ञानानंद ने कहा, 'मैं इन सभी चीजों का सम्मान करता हूं, लेकिन शक्ति साझा करने के लिए हिंदुओं को अपनी मूल शक्ति पर ध्यान केंद्रित करने और रणनीति बनाने की जरूरत है। इस दिशा में अब तक ज्यादा प्रयास नहीं किए गए हैं।'

भारतीय धार्मिक नेता ने कहा, 'हिंदुओं की आबादी वैश्विक जनसंख्या का छठा हिस्सा है, हम कई देशों में सबसे अमीर लोग हैं और हम शिक्षा और अकादमिक क्षेत्र में भी बहुत सफल हैंज। लेकिन वास्तविक सत्ता-साझाकरण में हमारी भूमिका नहीं हैं।' उन्होंने कहा, 'हिंदुओं को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने की आवश्यकता है। मैं किसी के खिलाफ नहीं हूं, लेकिन उदाहरण के लिए कनाडा में हिंदुओं की संख्या खालिस्तानियों से कहीं ज्यादा है। लेकिन हमारे पास संसद में केवल चार सदस्य हैं। वे 27 हैं। असली सत्ता के खेल में 27 मायने रखते हैं, चार नहीं। यही हम वैश्विक हिंदू समुदाय को समझाने की कोशिश कर रहे हैं।'

बैंकॉक में 24 से 26 नवंबर तक होने वाले अगले सत्र का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, 'इस दिशा में विश्व हिंदू कांग्रेस का यही फोकस और प्रयास है।' उन्होंने कहा कि वैश्विक मंच पर हिंदुओं को 'शांतिप्रिय, सह-अस्तित्व में रहने वाले और योगदान देने वाले समुदाय' के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता है, जो सरकारी कल्याण पर निर्भर नहीं हैं।

स्वामी विज्ञानानंद एक दशक से अधिक समय से विश्व हिंदू कांग्रेस के माध्यम से दुनियाभर के हिंदुओं को एक मंच पर लाने की कोशिश कर रहे हैं। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में विश्व हिंदू कांग्रेस के तीसरे संस्करण में 60 से अधिक देशों के हजारों हिंदू शामिल होंगे। आखिरी विश्व हिंदू कांग्रेस 2018 में शिकागो में आयोजित की गई थी।

एशियाई खेलों के सेमीफाइनल में पहुंची भारतीय हॉकी टीम

– बांग्लादेश को 12-0 से हराया

हांगझोउ (एजेंसी)। एशियाई खेलों में भारतीय पुरुष हॉकी टीम की जीत का सिलसिला जारी है। भारतीय टीम ने कप्तान हरमनप्रीत सिंह और मनदीप सिंह की हैट्रिक से एशियाई खेलों के सेमीफाइनल में प्रवेश किया है। भारतीय टीम ने पूल ए के क्वार्टरफाइनल मुकाबले में बांग्लादेश को 12-0 से हराया। भारतीय टीम सेमीफाइनल में पहुंचने के साथ ही अपने पूल में शीर्ष पर बनी हुई है। भारतीय टीम ने पूल चरण के अब तक के अपने पांच मैचों में 58 गोल दागे है जबकि उसे केवल पांच गोल खाने पड़े हैं। अब तक भारतीय टीम ने अपने सभी मुकाबले बड़े अंतर से जीते हैं। पहले मैच में उसने उजबेकिस्तान को 16-0 से वहीं दूसरे मैच में सिंगापुर को 16-1 जबकि पाकिस्तान को 10-2 और जापान को 4-2 से हराया था। भारत की ओर से कप्तान हरमनप्रीत ने दूसरे चौथे और 32वां मिनट में जबकि मनदीप सिंह ने 18 वें, 24वें और 46वें मिनट में तीन-तीन गोल किये। वहीं अभिषेक ने 41वां और 57वां गोल दागा। अमित रोहिदास ने 28वां, ललित उपाध्याय ने 23वां, गुरजंत सिंह ने 56वां और नीलाकांता शर्मा ने 47वां ने एक एक गोल किए। वहीं बांग्लादेश की टीम एक भी गोल नहीं कर पायी।

एशियाई खेल : भारत की सुतीर्था और अहिका को टेबल टेनिस में कांस्य

हांगझोऊ (एजेंसी)। भारत की सुतीर्था मुखर्जी और अहिका मुखर्जी को एशियाई खेलों की टेबल टेनिस के सेमीफाइनल में हार के कारण कांस्य पदक ही मिल पाया है। सुतीर्था और अहिका को इस स्पर्धा के महिला युगल सेमीफाइनल में उत्तर कोरियाई जोड़ी के हाथों कड़े मुकाबले में 3-4 से हार के साथ ही तीसरा स्थान ही मिल पाया। सुतीर्था और अहिका ने 2-3 से शुरुआत में पिछड़ने के बाद वापसी की पर सुगियोंग पाक और सुयोग चा की कोरियाई जोड़ी ने निर्णायक गेम में जीत दर्ज की। इस जोड़ी ने एक घंटे तक चले मुकाबले को 7-11, 11-8, 7-11, 11-8, 11-9, 5-11, 11-2 से जीता। इससे पहले सुतीर्था और अहिका ने क्वार्टर फाइनल में चीन की चेन मेंग और यिडि वांग को हराया था। इस मुकाबले के साथ ही टेबल टेनिस में भारत की चुनौती समाप्त हो गई।

एशियाई खेलों की रोलर स्केटिंग में भारतीय पुरुष और महिलाओं ने जीते कांस्य पदक

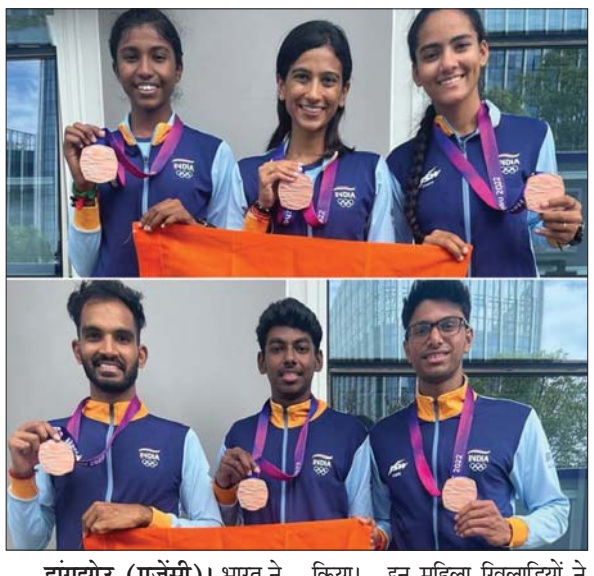

हांगझोउ (एजेंसी)। भारत ने सोमवार को एशियाई खेलों के नौवें दिन अपना पहला पदक रोलर स्केटिंग में जीता। ये पदक महिला खिलाड़ियों ने स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर रिले रेस में जीता। महिलाओं के बाद भारत की पुरुष टीम ने भी स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर रिले रेस में कांस्य पदक हासिल किया। इसके साथ ही भारत के कुल पदकों की तादाद बढ़कर 55 हो गई है। स्पीड स्केटिंग में संजना, कार्तिका, हीरल और आरती की टीम ने तीसरे स्थान के साथ ही कांस्य अपने नाम किया। . इन महिला खिलाड़ियों ने 3000 मीटर रिले रेस 4 मिनट 34.86 सेकंड में पूरी कर तीसरा स्थान हासिल किया। इसके कुछ देर बाद ही पुरुष टीम ने भी स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर रिले रेस में ही कांस्य पर कब्जा किया। आनंद कुमार, सिद्धांत और विक्रम ने 4 मिनट 10.1298 सेकंड समय निकालकर ये पदक जीता। इस प्रकार भारत ने अबतक 13 स्वर्ण , 21 रजत और 21 कांस्य पदक जीत लिए हैं।

एशियाई खेलों में भारत की वित्या 400 मीटर बाधा दौड़ के फाइनल में पहुंची

-उषा के राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की

-ऊंची कूद में संदेश और सर्वेश ने फाइनल में जगह बनायी

हांगझोऊ(एजेंसी)। एशियाई खेलों में सोमवार को नौवें दिन भारत की वित्या रामराज ने शानदार प्रदर्शन करते हुए महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ के फाइनल में प्रवेश किया। वित्या ने अपनी हीट में 55.42 सेकंड का समय निकालकर पूर्व चैम्पियन पी टी उषा के राष्ट्रीय रिकॉर्ड की भी बराबरी की। । उषा ने साल 1984 में 55.42 सेकंड समय का यह रिकॉर्ड बनाया था। वहीं भारत की ही रवि सिंचल कावेरम टी 58.62 सेकंड का समय निकालकर अपनी हीट में पांचवें स्थान पर रही और मुकाबले से बाहर हो गयीं।

दूसरी ओर पुरूषों की 400 मीटर बाधा दौड़ में भारत के संतोष कुमार टी और यशास पलक्षा ने 49.28 और 49.61 सेकंड का समय निकालकर फाइनल में प्रवेश किया। इसके अलावा पुरूषों की ऊंची कूद में संदेश जेस्से और सर्वेश अनिल कुशारे ने 2.10 मीटर की कूद लगाकर नौवें स्थान के साथ ही फाइनल में स्थान बनाया। संदेश पूल ए में छठे जबकि सर्वेश पूल बी में चौथे स्थान पर रहे। इसके अलावा पुरूषों की 800 मीटर हीट में मोहम्मद अफजल पी 1ञ46.79 सेकंड और कृष्णन कुमार 1ञ49.45 सेकंड समय निकालकर पहले और दूसरे स्थान पर रहने के साथ ही फाइनल में पहुंचे।

एशियाई खेल: सैय्यद अजीज और मुहम्मद आमिर की धुआंधार पारी, मलेशिया की थाईलैंड पर बड़ी जीत

हांगझोऊ(एजेंसी)। हांगझोउ ञ चीन में चल रहे 19वें एशियाई खेलों में सोमवार को खेले गये मलेशिया बनाम थाईलैंड टी-20 क्रिकेट ग्रुप सी मुकाबले में मलेशियाई ने सैय्यद अजीज 56 गेंदों में 126 रन, मुहम्मद आमिर 25 गेंदों में 55 रन की धुआंधार पारी की और गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत थाईलैंड को रिकार्ड 194 रन से हरा दिया है। सुबह टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मलेशिया की टीम ने सैय्यद अजीज 56 गेंदों में 126 रन, मुहम्मद आमिर 25 गेंदों में 55 रन की धुआंधार पारी की बदौलत निर्धारित 20 ओवर में चार विकेट के नुकसान पर 268 रन विशाल स्कोर खड़ा किया। मलेशिया का पहला विकेट जुबैदी जुल्फिकली 31 के रूप में गिरा। उन्हें सातवें ओवर में नामचाइकुल ने देसुंगनेऑन के हाथों कैच आउट करवाया। उस समय टीम का स्कोर 81 रन था। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए मुहम्मद आमिर ने दूसरे विकेट के लिए सैय्यद अजीत के साथ 140 रन की साझेदारी की। टीम के 249 रन के स्कोर पर सैय्यद अजीज के रूप में मलेशिया का दूसरा विकेट गिरा। अजीज को देसुंगनेऑन ने नामचाइकुल कैच कराया। जबकि मुहम्मद आमिर को देसुंगनेऑन की गेंद पर चाटफाईसन कैच किया। शर्विन मुनीअंडी के रूप में मलेशिया का चौथा विकेट गिरा। उसे पेंगकुमता ने सारानोननक्कुन के हाथों कैच करा कर पवेलियन का रास्ता दिखा दिया। मुनीअंडी ने तीन रन बनाये थे। विरनदीप सिंह 30 रन बनाकर और स्याज़रुल इद्दस एक रन बनाकर नाबाद रहे। थाईलैंड की ओर से सोरावात देसुंगनेऑन 43 रन देकर दो विकेट लिए। जबकि चंचाई पेंगकुमता और खानितसोन नामचाइकुल को एक-एक विकेट मिला। 269रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी थाईलैंड की शुरूआत बेहद धीमी रही और उसका कोई भी बल्लेबाज पिच पर नहीं टीक सका। थाईलैंड का पहला विकेट चौथे ओवर में आठ के स्कोर पर गिरा। पहले विकेट के रूप में सोरावात देसुंगनेऑन पांच रन को विजय उन्नी की गेंद पर जुबैदी जुल्फिकली ने कैच किया।

पीएम मोदी ने एशियाई खेलों में महिला रोलर स्केटर्स को कांस्य पदक जीतने पर दी बधाई

नयी दिल्ली ।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को एशियाई खेलों में महिला स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर रिले में कांस्य पदक जीतने पर रोलर स्केटर्स कार्तिका जगदीश्वरन, हीरल साधु और आरती कस्तूरी राज को बधाई दी है। प्रधानमंत्री मोदी ने उनके दृढ़ संकल्प और टीम वर्क की भी सराहना की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट किया, 'कार्तिका जगदीश्वरन, हीरल साधु और आरती कस्तूरी राज को बधाई। हमारी असाधारण महिला स्पीड स्केटिंग रिले टीम ने एशियाई खेलों में महिला स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर रिले में कांस्य पदक जीता। उनका दृढ़ संकल्प और उत्कृष्ट टीम वर्क कई लोगों के लिए प्रेरणा-स्त्रोत है।' उन्होंने अपनी पोस्ट के साथ तीनों खिलाड़ियों की पदक के साथ फोटो को भी साझा किया। उल्लेखनीय है कि चीन में चल रहे 19वें एशियाई खेलों में आज भारत की कार्तिका जगदीश्वरन, हीरल साधु और आरती कस्तूरी ने महिलाओं की स्पीड स्केटिंग 3000 मीटर स्पर्धा में 4ञ34ञ861 मिनट का समय लेते हुए कांस्य पदक जीता।

अश्विन जानते हैं कि चेन्नई में कैसे गेंदबाजी करनी है : पीयूष चावला

नई दिल्ली । पूर्व स्पिनर पीयूष चावला ने कहा है कि अनुभवी स्पिनर आर अश्विन जानते हैं कि चेन्नई स्टेडियम के हालात कैसे हैं और उन्हें किस प्रकार से गेंदबाजी करनी है। अश्विन को एकदिवसीय विश्वकप के लिए अंतिम समय पर भारतीय टीम में शामिल किया गया था। अश्विन को शुरुआत में विश्वकप के लिए जगह नहीं मिली थी पर स्पिनर अक्षर पटेल के फिट नहीं होने के कारण उन्हें अंतिम समय पर टीम में जगह मिली है। चावला ने कहा कि अश्विन अक्षर के समान विकल्प हैं क्योंकि वह गेंदबाजी के साथ ही अच्छी बल्लेबाजी भी करते हैं। चावला ने कहा, अक्षर के विश्व कप के लिए फिट नहीं होने के कारण अश्विन अपने अनुभव और पूर्व में उन्होंने जिस तरह से गेंदबाजी की है, उसके कारण पहली पसंद बने। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। यह कुछ इस तरह है जैसा कि वह बल्लेबाजी कर सकता है, और एक बहुत ही अच्छा बल्लेबाज भी है। इसके अलावा इस पूर्व स्पिनर ने अश्विन की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि वह एक होशियार क्रिकेटर हैं। उन्होंने कहा, अश्विन एक महान खिलाड़ी हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह सफेद गेंद या लाल गेंद क्रिकेट में गेंदबाजी कर रहे हैं, वह हमेशा खेल के बारे में सोचते रहते हैं। वह हमेशा खेल से जुड़े रहते हैं। हालांकि उन्होंने पिछले दो वर्षों में एकदिवसीय में बहुत अधिक क्रिकेट नहीं खेला है, वह वास्तव में एक अच्छे गेंदबाज हैं और टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा, किसी ने नहीं सोचा था कि अश्विन खेलेंगे पर उन्हें अनुभवी होने के कारण चेन्नई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीधे अंतिम एकादश में शामिल किया गया है।

धोनी से बहुत कुछ सीखा लेकिन कप्तानी का मेरा अपना तरीका: गायकवाड़

हांगझोउ (एजेंसी)। उन्होंने महेंद्र सिंह धोनी से काफी कुछ सीखा है लेकिन पहली बार एशियाई खेलों की क्रिकेट स्पर्धा में भारतीय पुरूष टीम की कप्तानी कर रहे रूतुराज गायकवाड़ ने कहा कि उनकी कप्तानी की अपनी शैली है। महिला टीम के बाद अब भारतीय पुरूष क्रिकेट टीम भी स्वर्ण पदक की दावेदार होगी। भारतीय टीम मंगलवार को क्वार्टर फाइनल खेलेगी।

इंडियन प्रीमियर लीग में धोनी की चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेलने वाले गायकवाड़ ने कहा, 'मैंने धोनी से बहुत कुछ सीखा है लेकिन हर व्यक्ति की अपनी शैली होती है। उनकी शैली अलग है, उनकी शख्सियत अलग है और मेरी अलग है।' उन्होंने कहा, 'मैं उनके जैसा कुछ करने की बजाय अपनी शैली से खेलूंगा। हालात का सामना करने और खिलाड़ियों के सही उपयोग को लेकर उनसे मिली सीख को मैं जरूर अमल में लाऊंगा।' भारतीय कोच वीवीएस लक्ष्मण ने कहा कि चीन में क्रिकेट खेलना अनोखा अनुभव होगा। उन्होंने कहा, 'यहां बहुत अलग है। हमने कभी सोचा भी नीं था कि चीन में क्रिकेट खेलेंगे। पूरी टीम के लिए यह शानदार मौका है। एशियाई खेलों में भाग लेना गर्व की बात है।' गायकवाड़ ने कहा, 'क्रिकेट में विश्व कप है, आईपीएल है और घरेलू टूर्नामेंट है। हम उस तरह के हालात और माहौल के आदी है लेकिन यहां खेलगांव में रहना, दूसरे खिलाड़ियों को और उनके संघर्षों को जानना अलग अनुभव है। उन्हें दो तीन साल या चार साल में खेलने का मौका मिलता है। हमें खेलगांव का दौरा करके बहुत अच्छा लगा।'

भारत को अपनी धरती पर खेलने का लाभ विश्ककप में मिलेगा: मुरलीधरन

लखनऊ (एजेंसी)। श्रीलंका के दिग्गज स्पिनर रहे मुथैया मुरलीधरन ने कहा है कि भारत को अपनी धरती पर खेलने का फायदा विश्वकप में होगा। उन्होंने कहा कि भारतीय बल्लेबाज और गेंदबाज फार्म में हैं जिनका फायदा टीम को होगा पर इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया की टीमें भी विश्व कप की प्रबल दावेदार हैं और ये भारत को कड़ी टक्कर देंगी। साथ ही कहा कि अनुभवी स्पिनर आर अश्विन भारतीय टीम के लिये अंतर पैदा करेंगे क्योंकि वह एक बेहतरीन गेंदबाज है जो बल्लेबाज के दिमाग को पढ़ने की क्षमता रखता है और उसे कभी भी परेशानी में डाल सकता है।

पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश के खिलाड़ी भारतीय उपमहाद्वीप की कंडीशन से भलींभांति वाकिफ है और ये टीमें भी विश्वकप में हैरान कर सकती हैं। मुरलीधरन ने अपने क्रिकेट करियर के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि 1996 का विश्व कप उनके क्रिकेट करियर का सबसे यादगार क्ष्ण था जब उनके देश ने विश्वकप जीता था। उन्होंने ने कहा कि उन्हे वीरेन्द्र सहवाग के सामने गेंदबाजी करना चुनौती भरा लगता था। हालांकि उनके करियर में मिले 800 विकेट में से हर विकेट उनके लिए बेशकीमती है।

वहीं इस स्पिनर ने कहा कि विराट कोहली एक शीर्ष स्तर के बल्लेबाज हैं पर उनकी तुलना महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर से नहीं की जा सकती। मुरली ने सचिन को क्रिकेट की दुनिया का अनूठा बल्लेबाज करार दिया है। मुरलीधरन ने कहा कि विराट की तुलना उनसे करना सही नहीं होगा। अपनी फिल्म '800 के प्रमोशन के सिलसिले में भारत आये मुरलीधरन ने कहा कि विराट के अलाव विश्व के अन्य बल्लेबाजों की तुलना भी सचिन से नहीं हो सकती। वह महान बल्लेबाज रहे हैं। सचिन ने 14 वर्ष की उम्र में रणजी खेलना शुरू किया जबकि मात्र 16 वर्ष की आयु में उन्होने पाकिस्तान के खिलाफ खेल कर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण की उम्र में वकार यूनूस जैसे गेंदबाजों का सामना किया। शतकों का शतक लगाने वाले सचिन जैसा प्रतिभाशाली बल्लेबाज केवल एक बार जन्म लेता है। उन्होंने कहा कि निसंदेह विराट एक बेहतरीन बल्लेबाज है मगर उनकी तुलना सचिन से करना गलत है। क्रिकेट के हर दौर में प्रतिभावान खिलाड़ी निकल कर सामने आते हैं मगर उनकी तुलना किसी अन्य से करना सही नहीं होता।

विश्वकप में जीत के लिए इंग्लैंड को हालातों से तालमेल बैठाना होगा

मुंबई । जोस बटलर की कप्तानी में टीम पांच अक्टूबर को गत उपविजेता न्यूजीलैंड के खिलाफ अहमदाबाद में अपने विश्वकप अभियान की शुरुआत करेगी विश्वकप में इस बाहर भाग ले रही सभी टीमों के लिए स्पिनरों का सामना करना चुनौती साबित होगा। इसी लिए अभी टीम ने दिग्गज स्पिनरों को शामिल किया है। इसी को ध्यान में रखते हुए इंग्लैंड ने भी अपनी टीम में स्पिनरों को पर्याप्त जगह दी है। इंग्लैंड ने इस विश्कप के लिए बेन स्टोक्स जैसे ऑलराउंडर की भी टीम में वापसी करायी है। टीम में गेंदबाजी और बल्लेबाजी दोनों विभागों में विकल्प की कोई कमी नहीं है हालांकि उसे भारतीय हालातों से तालमेल बैठाना होगा। टीम के अधिकतर खिलाड़ियों को इंडियन प्रीमियर लीग में खेलने का भी लाभ भी भारत में मिलेगा। स्टोक्स की मौजूदगी से टीम काफी मजबूत दिख रही है। उनके पास ऐसे कई खिलाड़ी भी हैं जो जानते हैं कि वैश्विक टूर्नामेंट कैसे जीता जाता है। टीम का बल्लेबाजी क्रम लंबा है और इस प्रारूप में उसके पास बेहतरीन बल्लेबाज हैं जो किसी भी टीम को दबाव में ला सकते हैं। खराब फॉर्म में चल रहे जेसन रॉय के स्थान पर हैरी ब्रूक को शामिल करने से भी बल्लेबाजी और बेहतर हुई है। उनके पास जो रूट जैसे अनुभवी बल्लेबाज भी है। वहीं तेज गेंदबाज जोफा आर्चर रिजर्व अभी तक पूरी तरह नहीं फिट हुए हैं, इसलिए वह रिजर्व खिलाड़ी होंगे, लेकिन मार्क वुड की तेज गति और लेग स्पिनर आदिल राशिद भारतीय पिचों पर उनके लिए अहम होंगे। विश्व कप से पहले इंग्लैंड को उपमहाद्वीप के हालातों में ज्यादा खेलने का मौका नहीं मिला है। टीम ने घरेलू परिस्थितियों में न्यूजीलैंड को 3-1 से हराया था लेकिन टूर्नामेंट में खेल रही कुछ अन्य टीमों की तरह उसने हाल-फिलहाल में उपमहाद्वीप में नहीं खेला है ,जिसका उसे नुकसान होगा। टीम को आक्रामक बल्लेबाजी का पिछले कुछ समय में काफी फायदा मिला है लेकिन भारत की धीमी पिचों में इसकी परीक्षा होना बाकी है। इस विश्वकप में इंग्लैंड की आक्रामक खेल की रणनिति की भी परिक्षा होगी।

विश्वकप में सिराज, शाहीन और बुड सहित ये गेंदबाज खतरनाक साबित होंगे ञ स्टेन

नई दिल्ली । दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने कहा है कि विश्वकप में भारतीय टीम के युवा तेज गेंदबाजों मोहम्मद सिराज सहित पांच गेंदबाजों को खेलना सभी बल्लेबाजों के लिए मुश्किल रहेगा। स्टेन के अनुसार सिराज के अलावा दक्षिण अफ्रीका के कैसिगो रबाडा, पाकिस्तान के शाहीन शाह अफरीदी, न्यूजीलैंड के ट्रेंट बोल्ट और इंग्लैंड के मार्क वुड बल्लेबाजों को खेलना सबसे कठिन होगा। हैरानी की बात है कि इस सूची में भारतीय टीम के मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को जगह नहीं मिली है। स्टेन ने कहा कि वह विश्वकप में सिराज का खेल देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। साथ ही कहा कि रबाडा इस विश्वकप में दक्षिण अफ्रीकी टीम के लिए अंतर पैदा करेंगे। सिराज ने एशिया कप के खिताबी मुकाबले में श्रीलंका के खिलाफ 6 विकेट लेकर भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। अब विश्वकप में उनसे इसी प्रकार के प्रदर्शन की उम्मीद जतायी जा रही है। वहीं शाहीन को लेकर इस पूर्व तेज गेंदबाज ने कहा, शाहीन की गेंदबाजी देखने लायक होगी, खासकर जब वह रोहित शर्मा को गेंदबाजी करेंगे। बता दें कि एशिया कप के दौरान दोनों का आमना-सामना हुआ था और उस समय लीग मैच में शाहीन हावी हो गये थे पर दूसरे मुकाबले में रोहित ने आक्रामक रुख अपनाया था। इस दिग्गज गेंदबाज ने कहा, मार्क वुड, शाहीन, ट्रेंट बोल्ट, मोहम्मद सिराज और रबाडा से विश्व कप में बेहतरीन प्रदर्शन की वह उम्मीद कर रहे हैं। डेल स्टेन के अनुसार, दुनिया भर के क्रिकेट प्रशंसक अब इन पांच असाधारण गेंदबाजों को आगामी विश्व कप में अपनी छाप छोड़ते हुए देखने के लिए देखेंगे।

रोहित शर्मा की बल्लेबाजी से डरे पाकिस्तानी गेंदबाज, शादाब ने कहा- 'भारतीय कप्तान के खिलाफ गेंदबाजी करना मुश्किल'

नयी दिल्ली (एजेंसी)। वर्ल्ड कप 2023 के लिए पाकिस्तान क्रिकेट टीम भारत आई है। वहीं इस दौरान पाकिस्तान के उप कप्तान और लेग स्पिनर शादाब खान ने भारतीय कप्तान रोहित शर्मा को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। दरअसल, उन्होंने कहा है कि रोहित के खिलाफ गेदंबाजी करना सबसे मुश्किल होगा। वर्ल्ड कप 2023 के लिए पाकिस्तान क्रिकेट टीम भारत आई है। बता दें कि, भारत बनाम पाकिस्तान मुकाबले के लिए सभी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। जो कि अहमदाबाद में 14 अक्टूबर को खेला जाना है।

इंडिया टुडे की खबर के अनुसार, शादाब ने कहा कि मैं रोहित शर्मा की तारीफ करना चाहूंगा। दुनिया के तमाम बल्लेबाजों की लिस्ट में उनके खिलाफ गेंदबाजी करना सबसे मुश्किल है। जब वे सेट हो जाते हैं तो सबसे ज्यादा खतरनाक हो जाते हैं।

साथ ही शादाब ने कहा कि, एशिया कप अच्छा नहीं गया। लेकिन आप गलतियों से ही सीखते हैं। एशिया कप में हार के बाद हमने आराम किया है। मुझे लगता है कि वर्ल्ड कप में स्किल के साथ-साथ मेंटली भी तैयार रहना होगा। जब आप रिलैक्स्ड होते हैं तो अच्छी तरह फैसले ले पाते हैं। शादाब खान की बात करें तो उन्होंने 64 वनडे मैचों में 734 रन बनाए हैं। इस दौरान 4 अर्धशतक लगाए। वे 83 विकेट ले चुके हैं। शादाब का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 27 रन देकर 4 विकेट लेना रहा है।

बता दें कि, भारत ने एशिया कप में पाकिस्तान को बुरी तरह से हराया था। जहां उस टूर्नामेंट में दोनों टीमों का आपस में पहला मुकाबला बारिश के कारण रद्द हो गया था। वहीं दूसरे मुकाबले में भारत ने शानदार प्रदर्शन कर बेहतरीन जीत अपने नाम की और फिर बाद में श्रीलंका को हराकर एशिया कप 2023 का खिताब भी अपने नाम किया।

बॉलीवुड में दिशा पाटनी ने पूरे किए सात साल

बीते दिन अभिनेत्री दिशा पाटनी ने बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में अपने सात साल पूरे कर लिए हैं। उन्होंने साल 2016 में 30 सितंबर को रिलीज हुई ब्लॉकबस्टर फिल्म 'एमएस धोनी- द अनटोल्ड स्टोरी' से फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखा था। फिल्म में अभिनेत्री ने महेंद्र सिंह धोनी की पहली प्रेमिका प्रियंका झा की भूमिका निभाई थी। बीते दिन दिशा ने बॉलीवुड इंडस्ट्री में अपने सात साल पूरे होने का जश्न मनाया। उन्होंने अपनी डेब्यू फिल्म का एक सीन सोशल मीडिया पर शेयर किया। इस मौके पर उन्होंने अपने पहले को-स्टार दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत को भी याद किया। अभिनेत्री ने सुशांत की याद में एक प्यारा सा नोट भी लिखा है।

दिशा पटानी ने 'एमएस धोनी- द अनटोल्ड स्टोरी' से एक सीन शेयर किया। इस सीन में, दिशा (प्रियंका) सुशांत के किरदार महेंद्र धोनी के प्रति अपने प्यार का इजहार करती नजर आ रही है। फिल्म के इस सीन को शेयर करते हुए दिशा ने कैप्शन में लिखा, 'इस खूबसूरत सफर और हिंदी सिनेमा में मेरी पहली फिल्म के लिए आभारी हूं। सुशांत सिंह राजपूत को याद करते हुए अभिनेत्री ने लिखा, 'पूरे दिल से प्यार करें और उन लोगों को सुरक्षित रखें जो आपको खुश करते हैं और सुना है पछतावे के लिए जिंदगी बहुत छोटी है! हम अलविदा नहीं कह सके लेकिन मुझे आशा है कि आप खुश और शांति में होंगे।'

पेरिस फैशन वीक में नव्या नवेली ने रैंप पर बिखेरा जलवा

अमिताभ बच्चन की नातिन नव्या नवेली नंदा ने पेरिस फैशल वीक में जलवा बिखेरा है। बताया जा रहा है कि पहली बार वह किसी फैशन वीक के रैंप पर वॉक करती नजर आईं। इसका वीडियो उनकी मां श्वेता बच्चन नंदा ने शेयर किया है। इस दौरान नव्या अपनी मां और नानी जया बच्चन के साथ पेरिस फैशन वीक इवेंट में पहुंची थीं। जब नव्या फैशन वीक के रैंप पर वॉक कर रही थीं, तब श्वेता उन्हें चीयर करते हुए भी नजर आईं। हालांकि नव्या रैंप पर वॉक के दौरान काफी खुश दिखाई दी। उनके चेहरे पर एक कॉन्फिडेंस और एक्साइमेंट साफ झलक रहा रहा था। जानकारी के अनुसार नव्या नवेली नंदा ने पेरिस फैशन वीक के रैंप पर चलने के लिए रेड कलर का ऑफ शॉल्डर मिनी ड्रेस पहना था। उन्होंने अपने बालों को खुला रखा और रैंप वॉक के दौरान वह अपनी मां, नानी और ऑडियंस का हाथ हिलाकर अभिवादन करते हुए भी नजर आईं। नव्या इस दौरान काफी खुश दिखी और श्वेता उनके लिए हूटिंग भी करते दिखीं।

श्वेता बच्चन नंदा ने नव्या के इस वीडियो को शेयर करते हुए लिखा, लिटिल मिस लोरियल। इस पर नव्या ने स्माइली के साथ रिएक्ट भी किया है। इससे पहले, नव्या अपनी एक्साइटमेंट जता चुकी हैं। उन्होंने एक वीडियो शयेर करते हुए बताया था कि वह रात को पेरिस फैशन वीक में हिस्सा लेंगी और इसे लेकर एक्साइटेड हैं। वह भारत को रिप्रेजेंट कर रही हैं। नव्या नवेली नंदा को उनके फैंस और फॉलोवर्स बधाई दे रहे हैं। इतनी छोटी उम्र में पेरिस फैशन वीक का हिस्सा बनने पर उनकी मां और नानी बहुत खुश दिखाई दीं। श्वेता ने मां जया बच्चन के साथ भी कई तस्वीरें और वीडियो शेयर की। इस शो के लिए नव्या नवेली नंदा ने मां और नानी को अपनी ताकत बताया है।

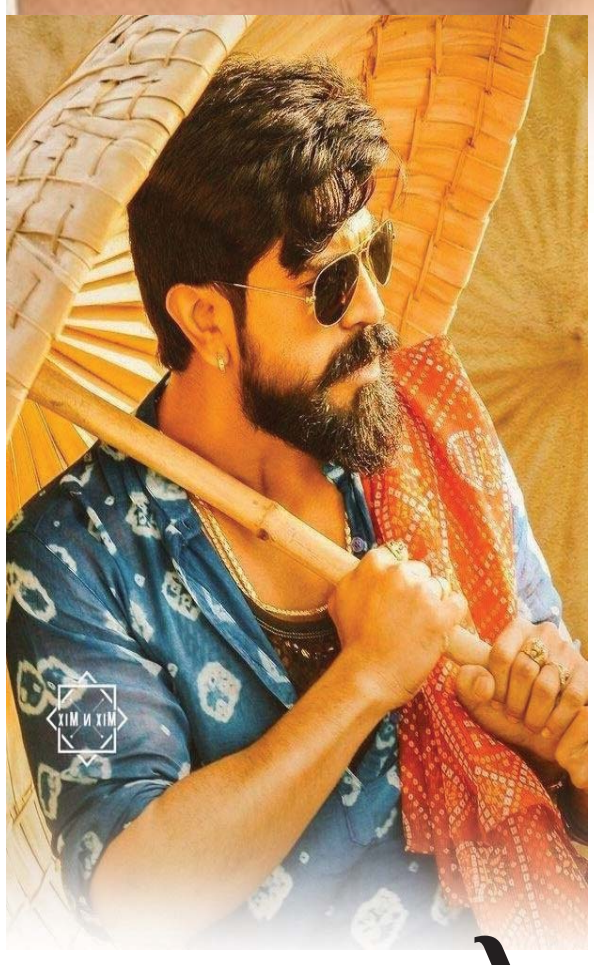

रामचरण ने रंगस्थलम को बताया मील का पत्थर

फिल्म उद्योग में 16 साल पूरे होने पर प्रमुख टॉलीवुड अभिनेता राम चरण के प्रशंसक इस मौके पर जश्न मना रहे हैं। अभिनेता की फिल्म रंगस्थलम को आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के विभिन्न स्थानों के सिनेमाघरों में फिर से रिलीज किया गया। अभिनेता राम चरण ने इसे अपने करियर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बताया। उनका मानना है कि यह यात्रा किसी शानदार, विस्मयकारी प्रदर्शन और यहां तक कि ब्लॉकबस्टर आरआरआर के लिए ऑस्कर जीत से कम नहीं है। प्रशंसकों का मानना है कि 2007 में अपने डेब्यू से लेकर ग्लोबल स्टार बनने तक, राम चरण का करियर समर्पण और जन्मजात प्रतिभा का प्रमाण रहा है। उनकी यात्रा चिरुथा से शुरू हुई थी। प्रत्येक फिल्म के साथ, उन्होंने विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं और शैलियों पर विजय प्राप्त करते हुए अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

राम चरण की फिल्में, जिनमें आरआरआर, मगधीरा, ऑरेंज, ध्रुव और नायक शामिल हैं। यह सभी लगातार ब्लॉकबस्टर हिट रही हैं। जिसमें वह एक बेहतरीन कलाकार हैं। उनके प्रशंसक सिर्फ प्रशंसक नहीं हैं, वे समर्पित उत्साही हैं जो उनकी हर सफलता का जश्न मनाते हैं। सामंथा रुथ प्रभु अभिनीत उनकी ब्लॉकबस्टर रंगस्थलम को आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के विभिन्न स्थानों के सिनेमाघरों में फिर से रिलीज किया गया।

दूसरी बार शादी के बंधन में बंधीं 'रईस' फेम माहिरा खान

फिल्म 'रईस' में शाहरुख खान के साथ अभिनय कर चुकीं एक्ट्रेस माहिरा खान दूसरी बार शादी के बंधन में बंध गई हैं। उनकी दूसरी शादी की तस्वीरें और वीडियो सामने आए हैं। माहिरा ने मुरी में एक निजी समारोह में अपने करीबी दोस्त और बिजनेसमैन सलीम करीम से शादी कर ली। शादी में माहिरा बेहद खूबसूरत लग रही हैं। माहिरा की मैनेजर अनुषाय तल्हा खान ने इंस्टाग्राम पर शादी का एक खूबसूरत वीडियो शेयर किया है। माहिरा दुल्हन के लिबास में सजी-धजी सलीम की ओर बढ़ रही थी। माहिरा को सामने आता देख सलीम अपने आंसू पोंछता है। बाद में सलीम माहिरा की ओर बढ़ता है, दोनों एक-दूसरे को देखकर भावुक हो जाते हैं। सलीम माहिरा को माथे पर चूमता है और वे एक-दूसरे को गले लगाते हैं। माहिरा और सलीम की शादी के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद प्रशंसक नवविवाहित जोड़े को शुभकामनाएं दे रहे हैं। माहिरा खान की पहली शादी 2007 में अली अक्सरी से हुई थी। दोनों की मुलाकात लॉस एंजिलिस में हुई थी। अली अक्सरी एक अभिनेता, निर्देशक और निर्माता हैं। शादी के बाद माहिरा ने 24 साल की उम्र में बेटे अजलान को जन्म दिया, लेकिन शादी के आठ साल बाद 2015 में उनका तलाक हो गया। बच्चे की कस्टडी अभी भी माहिरा के पास है। उनका बेटा अब 13 साल का है। माहिरा और सलीम एक दूसरे को डेट कर रहे थे। दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे। माहिरा ने खुद इस बात का खुलासा किया था कि वह सलीम को डेट कर रही हैं। अब 'रईस' फेम एक्ट्रेस दूसरी बार शादी के बंधन में बंध गई हैं और नई जिंदगी की शुरुआत कर रही हैं।

श्वेता तिवारी ने गिराई हुस्न की बिजलियां, 42 की उम्र में इतने ग्लैमरस अंदाज में आईं नजर

श्वेता तिवारी ने बेशक अपनी अदाकारी से हमेशा ही दर्शकों का दिल जीता है, लेकिन पिछले कुछ समय से एक्ट्रेस अपने लुक्स के कारण काफी चर्चा में बनी हुई हैं. इन दिनों लगातार श्वेता अपने स्टाइलिश लुक्स दिखा रही हैं. उनकी हर अदा को देखकर ऐसा लगता है कि वह वक्त के साथ और ज्यादा बोल्ड और हॉट होती जा रही है. वहीं, एक्ट्रेस अपनी फिटनेस से भी सभी के होश उड़ा रही हैं. अब फिर से श्वेता का नया स्टाइलिश लुक काफी वायरल हो रहा है.श्वेता ने कुछ देर पहले ही अपने इंस्टाग्राम पेज पर अपना नया लुक शेयर किया है. लेटेस्ट फोटोशूट के लिए एक्ट्रेस ने ब्राउन शेड की शॉर्ट ड्रेस और मैचिंग का क्रॉप ब्लेजर कैरी किया है.इसके साथ उन्होंने ब्लैक क्रॉप टॉप पहना है और ब्लेजर के बटन खोलकर कैमरे के सामने स्टाइलिश पोज दिए हैं. एक्ट्रेस इस लिक में स्टनिंग दिख रही हैं. उन्होंने हुस्न के जलवे बिखेरते हुए एक से एक पोज दिए हैं.श्वेता ने अपने स्टाइलिश लुक को सटल बेस, न्यूड लिप्स और न्यूड आई मेकअप से कंप्लीट किया है. इसके साथ उन्होंने बालों को सॉफ्ट कर्ली टच देकर ओपन रखा है. एक्सेसरीज के तौर पर श्वेता ने कानों में छोटे-छोटे ईयररिंग्स पहने हैं. एक्ट्रेस इस लुक में बेहद खूबसूरत और हॉट दिख रही हैं. खासतौर पर उनका कर्वी फिगर फिर सबका ध्यान खींच रहा है.दूसरी ओर वहीं, श्वेता के वर्क फ्रंट पर नजर डालें तो इन दिनों वह रोहित शेट्टी की वेब सीरीज इंडियन पुलिस फोर्स को लेकर चर्चा में हैं. इसके अलावा एक्ट्रेस हम तुम एंड दैम टाइटल से बन रही सीरीज में भी नजर आएंगी. फैंस उन्हें फिर नए अंदाज में पर्दे पर देखने के लिए काफी उत्साहित हैं.

2024 में पोंगल के मौके पर रिलीज होगी लाल सलाम

दक्षिण भारतीय सिनेमा के महानायक रजनीकांत की फिल्म लाल सलाम वर्ष 2024 में पोंगल के मौके पर रिलीज होगी।

रजनीकांत हाल ही में फिल्म जेलर में नजर आए थे।

रजनीकांत की यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुयी थी। रजनीकांत अब फिल्म लाल सलाम में नजर आयेंगे।

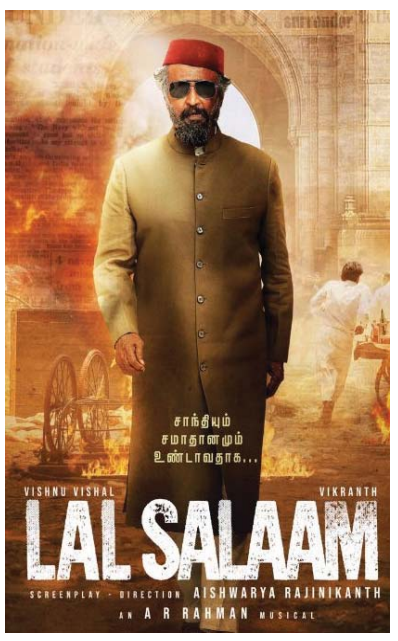

फिल्म लाल सलाम के नए पोस्टर के साथ मेकर्स ने बताया है कि लाल सलाम वर्ष 2024 में पोंगल के मौके पर रिलीज होगी। फिल्म लाल सलाम का निर्देशन रजनीकांत की बेटी ऐश्वर्या ने किया है। लाइका प्रोडक्शन ने सोशल मीडिया पर पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, लाल सलाम पोंगल 2024 पर स्क्रीन पर रिलीज होगी। लाल सलाम तमिल स्पोर्ट्स ड्रामा है। इस फिल्म में एक्टर विष्णु विशाल और विक्रांत महत्वपूर्ण भी अहम भूमिका में नजर आएंगे।